Chapter. 4

चतुर्थ अध्याय

"हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्याय – 4

हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर के जीवन दर्शन तथा विचार धारा ने दलित लेखन को नई शक्ति प्रदान की है। आज का दलित साहित्य जन–समुदाय से जुड़कर जनभाषा में क्रान्ति का बिगुल बजाकर और अन्याय की इस दुनिया में आग लगाकर सामजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष कर रहा है। प्रो. खरे के अनुसार

> **"दलित साहित्य का मूल अर्थ दलित समस्याओं के निराकरण को माना जाता है, न कि उच्च वर्णों को कोसने से। यह तो सत्य है कि वर्ण व्यवस्था ने दलितों की स्थिति को अत्यधिक कष्टमय बनाया तथा उन्हें अनगिनत समस्याओं से सम्बद्ध कर दिया। जो समाज सामाजिक असमानता तथा भेदभाव की नींव पर खड़ा होता है, वह कभी भी समाज के सभी वर्ग के लोगों के साथ न्याय नहीं कर पाता है। परंतु भारतीय सभ्यता के अन्तर्गत वैदिक काल से ही ऊँच–नीच और अस्पृश्यता के दूषित विचारों ने न केवल दलितों को दयनीय अवस्था में पहुँचा दिया, वरन उनके विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर उन्हें कठिनाइयों व समस्याओं में भी घेरा दिया।"**[1]

आज भी दलित अपनी अनेक समस्याओं के कारण पशुवत् जीवन जीने को विवश हैं। आज भी दलित, विशेषकर ग्रामीण परिवेश में रहने वाले दलितों को अशिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान जनक जीवन, रोजगार का अभाव, आवास, निर्धनता, अस्पृश्यता जैसी समस्याओं के चंगुल में जकड़ा हुआ है। सबसे बड़ी समस्या यदि महिलाओं की देखें, तो वह है उनका सवर्णों द्वारा होने वाला जातीय शोषण। अपने आत्मसम्मान, स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए वह आज भी संघर्ष कर रही हैं। कहीं दलित महिलाओं को अस्पृश्यता का शिकार बनाने की कोशिश की जाती है, तो कहीं उसकी अस्मिता को रौंदा जाता है। शिक्षा और प्रतिभा के माध्यम से प्रगति की ओर कदम बढ़ाने वाले दलितों को गैरदिलतों द्वारा रोका जाता है।

दलित महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या का कारण उनकी गरबी भी है, तो कहीं गैरदलितों की वासनावृत्ति दलित महिला के बलात्कार का कारण बनती है। आर्थिक तंगी से त्रस्त दलित महिला स्वयं मजदूरी करती हैं और अपने परिवार के भरण–पोषण में सहायक बनती है, किंतु कामकाजी दलित महिलाओं का आर्थिक एवं जातीय शोषण उनके लिए बड़ी समस्या बन जाती है। मैला ढ़ोने, शहर एवं गाँव में लोगों की गंदगी साफ करने, मरे हुए पशुओं को खींचने आदि परंपरागत कार्यों को करने के लिए उन्हें विवश किया जाता है। आज दलितों में जातिगत हीन भाव की समस्या भी देखी जा रही है, शिक्षित उच्च पदाधिकारी सवर्णों से सम्मान पाने के लिए अपनी जाति को छिपाना ही बेहतर समझते हैं। शिक्षित होने पर भी दलित महिलाओं को अस्पृश्यता जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। अशिक्षित दलित महिलाएँ तो अस्पृश्यता की जैसे आदी ही बना दी गई हैं। सवर्णों के साथ–साथ दलित समाज भी कन्या को शिक्षा

से दूर रखने का प्रयास करता है। यह समस्या आज बहुत बड़ी कही जा सकती है, क्योंकि एक कन्या को शिक्षित करने का मतलब है एक परिवार को शिक्षित करना।

4.1 समस्याओं की साम्यता और विषमता

4.1.(1) अस्पृश्यता की समस्या

विवेच्य कहानियों में अस्पृश्यता की समस्या को हिन्दी–गुजराती की दलित कहानियों में क्रमशः **'अम्मा'** (ओमप्रकाश वाल्मीकि), **'दायण'**(हरीश मंगलम्), **'फुलवा'**(रत्नकुमार सांभरिया), **'गंगामाँ'**(दलपत चौहान), **'सिलिया'**(सुशीला टाकभौरे), **'एबोर्शन'**(हरीश मंगलम्), **'टूटता वहम'**(सुशीला टाकभौरे), **'नवी'**(योगेश जोषी), **'सनातनी'** (अमर स्नेह), **'शैली का व्रत'**(विठ्ठलराय श्रीमाली), **'अत्तू और अम्मा'**(सूरजपाल चौहान), **'राजीनामा'**(बी.केशरशिवम्), **'खटिया की जाति'**(सुरेन्द्र नायक), **'गोरुचंदन'**(भी.न.वणकर), **'टिल्लू का पोता'**(सूरजपाल चौहान), **'फट रे भुंडा'**(प्रीतम लखमाणी), **'अब का समय'**(प्रहलाद चन्द्र दास), **'मुखिया का भांजा'**(विठ्ठलराय श्रीमाली), **'गूँगीचीख'**(हरीशकुमार मकवाणा), **'बदला'**(डॉ.सुशीला टाकभौरे), **'युज एण्ड थ्रो'**(डॉ.पूरनसिंह), **'दर्द'**(मोहनदास नैमिशराय), **'हम कौन हैं'**(रजतरानी 'मीनूं'), आदि में देखा जा सकता है। इन कहानियों के कहानीकारों ने दलितों के जीवन से जुड़ी हुई मुख्य समस्या के रुप में अस्पृश्यता की समस्या पर कहानियाँ लिखी हैं। जिनमें जातिगत भेदभाव, ऊँच–नीच, को मानने वाले सवर्णों द्वारा दलितों के प्रति अस्पृश्यता को चित्रित किया गया है। उनमें से कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं, जहाँ सवर्णो ने एक ओर दलितों का स्वार्थवश उपयोग भी किया है और दूसरी ओर उनके उपकार को भूलकर उन्हें अस्पृश्य कहकर उनका अपमान भी किया है। हिन्दी की **'अम्मा'** और गुजराती की **'दायण'** ऐसी ही कहानियाँ हैं। **'अम्मा'** कहानी में अम्मा एक मैला ढोने वाली बुजुर्ग महिला हैं। वह लोगों की गंदगी का स्पर्श कर उसे साफ करती है, किन्तु वह जीन लोगों का मैला स्वयं अपने हाथों से साफ करती है, उनका स्पर्श गलती से भी नहीं कर सकती। इसी तरह गुजराती की कहानी **'दायण'** की नायिका बेनी माँ भी एक वृध्दा दलित महीला है, जो एक कुशल दाई भी है। सवर्ण पशली को सुरक्षित प्रसव करवाकर वे उसे और उसके पुत्र को जीवनदान हैं, किन्तु बदले में वही बच्चा कुछ वर्षों बाद बेनी माँ को अस्पृश्य कहकर उनका अपमान करता है। अम्मा का पात्र धीरे–धीरे अस्पृश्यता का आदी बन जाता है, किन्तु बेनी माँ सवर्ण की स्त्रियों का प्रसव करतवाती है, तब उन्हें स्पर्श करती है, बच्चे को जीवनदान देती है, तब वह उनके लिए महान बन जाती है, किन्तु संकट का समय बीतते ही वह फिर से परंपरागत दूषण अस्पृश्यता का शिकार बनती है। यहाँ सवर्णों की स्वार्थपरता को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। बेनी माँ शोषण के प्रति खामोश हो जाती है। **'बदला'** कहानी की छौआ माँ भी बेनी माँ की तरह सफाई एवं प्रसूति का कार्य करती हैं। वह वर्षों तक निःस्वार्थ भाव से सवर्णों की सेवा करती है, किन्तु अपने नाती पर किए गए अत्याचार के समक्ष वह चुप नहीं बैठती और विद्रोह करती है। **'बदला'** कहानी में **'दायण'** कहानी की तरह सवर्णों की स्वार्थपरता पर प्रकाश डाला गया है। छौआ मां का पात्र अस्पृश्यता के प्रति प्रतिकार करता है, ताकि उसकी भावि पीढ़ी स्वाभिमान से जी सके। **'गंगामाँ'** कहानी की बुजुर्ग गंगा माँ भी दाई के कार्य में कुशल थी। गाँव के सवर्ण मुखिया रायसंग की पुत्रवधु की सुरक्षित प्रसुति करवाने वाली गंगामाँ के जाने पर रायसंग

सोने के आभूषण को पानी में डालकर उस शुद्ध पानी से पूरे घर को शुद्ध करवाता है, सारे कपडे घर से बाहर निकाले जाते हैं। गंगामाँ सारी अस्पृश्यता को नज़रअंदाज करके एक स्त्री की पीड़ा को दूर करके अपने कर्त्तव्य का पालन करती है। यहाँ गंगामाँ का चरित्र इतना उदार है कि उसके समक्ष सवर्ण पात्र छोटे नज़र आते हैं। गंगामाँ की पुत्रवधू पर बलात्कार करने वाला पशु अस्पृश्यता भूल जाता है। अस्पृश्यता यहाँ सामाजिक भेद–भाव को दिखाने के लिए है, उन पर बलात्कार के समय यह जाने कहाँ चली जाती है?

'**सिलिया**' कहानी में दलितों को अस्पृश्यता के कारण सवर्णों के कुएँ से पानी न भरने जैसी घटनाएँ दिखाई गई हैं एवं सिलिया को अस्पृश्यता के कारण सवर्ण के घर प्यासी होने पर भी पानी नहीं दिया जाता। जबकि '**शैली का व्रत**' कहानी में शैली को सवर्णों के मंदिर में प्रवेश करने से पंडित रोकता है, क्योंकि वह दलित है। सिलिया और शैली दोनों इस छुआछूत को समाज से निर्मूल करने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज को बदलना चाहती हैं। किन्तु शैली उस पंडित के सिर पर पूजा की थाली मारकर अपने अपमान और अस्पृश्यता का खंडन करती है। शैली का पात्र अपने अपमान को सह नहीं पाता, जबकि सिलिया अपमान सह लेती है।

'**यूज एण्ड थ्रो**' कहानी में मंदिर प्रवेश करने पर दलित राजो और उसके पति को सरेआम अपमानित करके अपमानजनक दंड दिया जाता है। कुछ समय बाद वही सवर्ण श्यामलाल का उपयोग करके उसे मृत्यु के घाट उतार देते हैं। सदियों से सवर्णों की उपयोगिता वृत्ति के समक्ष अस्पृश्यता कहीं अदृश्य हो जाती है और समय बीतने पर, स्वार्थ सिद्ध होने पर अचानक लौट आती है। '**गोरु चंदन**' कहानी में रामीबहन अपने पुत्र का बलिदान करके सवर्ण के पुत्र को बचाती है। यहाँ रामीबहन की महानता बताई गई है, किन्तु वह बच्चा बड़ा होकर दलितों से छुआछूत रखता है, वह भूल जाता है कि उसने एक दलित स्त्री का दूध पिया है। दलित स्त्री ने ही उसे जीवन दान दिया है। अस्पृश्यता की खाई किसी '**गोरुचंदन**' से दूर नहीं की जा सकती, यह इस कहानी में दिखाया गया है। साथ ही सवर्णों की '**यूज एण्ड थ्रो**' एवं '**गोरुचंदन**' दोनों कहानियों में स्वार्थपरता एवं अस्पृश्यता के विरोधी स्वभाव को एक साथ देखा जा सकता है। दोनों ही कहानी के अंत में स्त्री पात्रों का अंत में यह निर्णय लेना कि अब हमें किसी के स्वार्थ के लिए बलिदान नहीं देना है, यह एक नई सोच की ओर, नई शुरुआत की ओर हमारा ध्यान खींचता है।

'**अत्तू और अम्मा**' कहानी में अत्तू को इसलिए सवर्ण बलवंत सिंह पीटता है, क्योंकि वह अपने बैल का जूठा पानी उसकी भैस को पिला देता है। यहाँ मनुष्य से अस्पृश्यता के साथ पशुओं से भी अस्पृश्यता को दिखाया गया है। दलित चित्रा को अस्पृश्य मानने वाला सवर्ण उससे बलात्कार का प्रयास करता है। उसी तरह '**मुखिया का भांजा**' कहानी में दमयंती के पुत्र नटवर की अनाज की दुकान से कोई सवर्ण अनाज नहीं खरीदता, क्योंकि वह दलित है। गाँव के मुखिया द्वारा इस अस्पृश्यता को दूर करने के लिए आगे आना एक नई विचार धारा का द्वार खोलता है। सामान्य तौर पर इस प्रकार की कहानियॉ कम देखने को मिलती है, जहाँ सवर्ण स्वयं ही अस्पृश्यता का खंडन करते दिखाए गए हों। '**फुलवा**' कहानी में दलित फुलवा के पुत्र का उच्च अधिकारी बनना और समृद्धि पूर्ण वातावरण में फुलवा को देखकर गाँव के सवर्ण रामेश्वर का हैरत

में पड़ना एवं स्वयं की दरिद्रता पर विचारना, फिर भी अस्पृश्यता को न छोड़ते हुए फुलवा के घर का पानी तक न स्वीकरना, अस्पृश्यता की गहरी पैठी जड़ता को चित्रित करता है। कहानी के अंत में रामेश्वर का फुलवा के घर लौटना इस अस्पृश्यता को छोड़ने की उसकी मजबूरी और स्वार्थी मानसिकता की ओर संकेत करता है। '**एबोर्शन**' कहानी में शिक्षित दलित इंदु को कोई नौकरानी नहीं मिलती और जो मिलती है, वह इसलिए काम छोड़ देती है, क्योंकि वह दलित है। एक बंजारन स्त्री जो गरीब है, अशिक्षित है, वह भी अस्पृश्यता को मानती है। यहाँ लेखक ने अस्पृश्यता का प्रश्न एक गरीब बंजारन से करवाकर अस्पृश्यता की चरम सीमा पर कटाक्ष किया है।

'**टूटता वहम**' कहानी में नायिका स्वयं शिक्षित पात्र है एवं अध्यापिका है, फिर भी अपने कॉलेज के साथी कर्मचारियों से छुआछूत एवं अस्पृश्यता का भेदभाव देखती है। यहाँ अस्पृश्यता को शिक्षित वर्ग में नए ढंग से दबे, ढँके रुप में प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि वे शिक्षित हैं, इसलिए इस छुआछूत को वे जाहिर तौर पर व्यक्त करने में संकोच करते हैं। '**राजीनामा**' कहानी में सीमा को इसलिए मजबूर किया जाता है, कि वह नौकरी से इस्तीफा दे क्योंकि वह दलित है। वह किसी सवर्ण से प्रेम नहीं कर सकती। यहाँ सवर्णों का पूरा समाज, जैसे विद्यार्थी, शिक्षक, प्रिंसिपाल, ट्रस्टी सभी दलित सीमा पर आक्षेप लगाते हैं। कहानी में अस्पृश्यता के कारण दलित सीमा को वर्षों तक संघर्ष करना पड़ता है, जबकि उसका सवर्ण प्रेमी सरलता से दूसरी नौकरी पाकर सुखी जीवन बीताता है। '**टूटता वहम**' और '**राजीनामा**' दोनों कहानियों में शिक्षित वर्ग में अस्पृश्यता देखी गई है। '**टूटता वहम**' की नायिका इस समस्या को कड़वा घूंट समझकर पी लेती है, किन्तु '**राजीनामा**' की सीमा इसका कड़ा विरोध करती है और सवर्णों से संघर्ष करती है।

'**सनातनी**' कहानी में दलित 'अनुआ' को अस्पृश्यता के कारण सवर्णों की पाठशाला में प्रवेश नहीं दिया जाता। किन्तु अनुआ एकलव्य की तरह शिक्षा प्राप्त कर गुरु को अचंभे में डालकर इस अस्पृश्यता को दूर करने में सफल होता है। गुरु का हृदय परिवर्तन और अस्पृश्यता पर अनुआ की जीत कहानी को विशेष बनाती है। '**फट रे भुंडा**' की कंकु को बहकाने में असफल भरतसिंह अस्पृश्य कहकर अपमानित करता है। वही कंकु भरतसिंह के शरीर से सर्प का जहर अपने मुँह से चुसकर निकालती है और उसे जीवनदान देती है। यहाँ सवर्णों के स्वार्थ के समक्ष दलितों की उदारता को अधिक ऊँचा बताया गया है, किन्तु उदारता के बदले में बार–बार अपमानित होने वाली कंकु का चरित्र पूर्ण विकास नहीं प्राप्त कर सका है।

'**खटिया की जाति**' कहानी में दलित शिप्रा का जातीय शोषण करने वाला सोमेश निर्जीव खटिया को शुद्ध करने के लिए धोता है। क्योंकि उसमें छूत लगी है, जबकि वह स्वयं अपने को ऐसा कर्म करने से नहीं रोक पाता, यहाँ लेखक ने करारा व्यंग्य किया है, खटिया के माध्यम से। यहाँ '**खटिया की जाति**' एक सांकेतिक शीर्षक है। '**गूंगीचीख**' का छगन अपनी बूढ़ी माँ एवं पूरी जाति को संकट में न डालने के लिए वह शिक्षक की नौकरी छोड़ देता है। अस्पृश्यता में डूबे सवर्ण लोगों की आँखों पर लगी रुढ़िगत परंपराओं की पट्टी को छगन नहीं खोल पाता अपने इस कार्य में असफल हो, वह अपनी बूढ़ी माँ को निराधार छोड़कर इस दुनियाँ से चला जाता है। यहाँ अस्पृश्यता एक दलित युवक की जान ले लेती है।

'**इस समय में**' कहानी में शहरी स्कूल में दलित छात्रों के साथ शिक्षकों का भेद–भाव पूर्ण व्यवहार बच्चों की मानसिकता पर कैसा बुरा प्रभाव डालता है ? यह बताया गया है। '**हम कौन हैं ?**' कहानी में भी शहरों की स्कूल में बच्चों की सरनेम जानकर शिक्षक उनकी जाति के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं, यह अस्पृश्यता को जीवित रखने का मोर्डन तरीका है। दलित बच्चे एवं माता–पिता इस समस्या से शहर में भी बच नहीं पाते हैं, यह दिखाया गया है। '**अब का समय**' कहानी में सवर्ण लोग स्वार्थ वश दलित अंजू और उसके पति सतीश का उपयोग करते हैं, किन्तु अपने भीतर की परंपरावादी अस्पृश्यता को न भूलकर उनका अपमान करते हैं। अंतर्जातीय विवाह को इस समस्या के समाधान के रुप में प्रस्तुत किया गया है। '**टिल्लू का पोता**' कहानी में कमला और उसके पति को सवर्ण किसान कुएँ से पानी नहीं भेरने देता एवं कमला को अपशब्द कहकर उसका अपमान करता है। कमला का पानी को 'जहर' कहना अस्पृश्यता के प्रति तीव्र प्रतिकार है। सूरजपरल चौहान की '**पाँचवी कन्या**' कहानी में लेखक ने सवर्णों की कथनी और करनी के अंतर पर करारा व्यंग्य किया है। यह कहानी अस्पृश्यता के कट्टर समर्थकों की पोल खोलती है। पाँचवी दलित कन्या के साथ किस तरह श्रीमती मिश्रा ने स्नेह जताया और जैसे ही उसे उसकी जाति पता चली 440 वोल्ट के करन्ट का झटका खा गई। यह एक श्रीमती मिश्रा की ही बात नहीं, संपूर्ण हिन्दू मानसिकता का ही उल्लेख है व परिचायक है। '**दर्द**' कहानी में दलित 'हरभजन' का प्रमोशन इसलिए रोका जाता है, क्योंकि एक अस्पृश्य व्यक्ति दलित को कोई उच्च पद पर नहीं देखना चाहता। अस्पृश्यता की चरमसीमा हरभजन की जान ले लेती है और उसके परिवार को अधजल में छोड़ देती है। कहानी में शहरों की सरकारी एवं प्रायवेट ऑफिसों में अस्पृश्यता को लेकर होने वाले भेद–भाव को केन्द्र में रखा गया है। '**लोकतंत्र में बकरी**' कहानी में दलित की बकरी प्रकृति की सीमा को नहीं जानती और विनोद बाबू और अन्नपूर्णा की बकरी को सवर्ण के खेत में जाने के बहाने से मार डालते हैं। '**रात**' कहानी में कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ ही प्रिंसिपाल भी दलित राजेश के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार करते हैं। दलित राजेश को शहर में किराए का घर दलित होने की वजह से सरलता से नहीं मिलता। यहाँ '**रात**' शीर्षक अस्पृश्यता एवं अज्ञानता रुपी अंधकार का प्रतीक है।

इस प्रकार हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में अस्पृश्यता की समस्या को केन्द्र में रखकर कई कहानीकारों ने अपनी लेखनी चलाई है। गुजराती की दलित कहानियों में अस्पृश्यता की समस्या अधितम् ग्रामीण परिवेश की मिलती हैं जैसे '**दायण**', '**नवी**', '**गोरुचंदन**', '**फट रे भुंडा**', '**मुखिया का भांजा**', आदि और शहरी परिवेश में यह समस्या '**एबोर्शन**', '**राजीनामा**', कहानियों में चित्रित है। हिन्दी में '**अत्तू और अम्मा**', '**टिल्लू का पोता**', '**सिलिया**', '**सनातनी**', '**बदला**', '**लोकतंत्र में बकरी**', जैसी कहानियों में यह समस्या ग्रामीण परिवेश की हैं, जबकि '**इस समय में**', '**यूज एण्ड थ्रो**', '**हम कौन हैं ?**', '**अब का समय**', '**टूटता वहम**', '**खटिया की जाति**', '**फुलवा**', '**दर्द**', '**रात**' जैसी कई कहानियाँ है, जहॉ अस्पृश्यता की समस्या को शहरी परिवेश में चित्रित किया है। इस तरह देखा जा सकता है कि गुजराती की तुलना में हिन्दी की दलित कहानियों में इस समस्या का वर्णन अधिक कहानियों मे हुआ है, जहाँ आज के समय में शहरों में किस रुप में दलितों को जातिभेद की समस्या से जूझना पड़ रहा है। अशिक्षित ग्रामीण ही नहीं शिक्षित शहरी दलित भी आज की 21 वीं सदी में नए ढंग से अस्पृश्यता का भोग बनाए जा रहे हैं। इस समस्या का तीव्र प्रतिकार हिन्दी में '**बदला**', '**टिल्लू का पोता**' कहानियों में किया गया है, जबकि '**सनातनी**', '**फुलवा**' जैसी कहानियों के अंत में इस समस्या को

दूर करने की पहल भी की गई है। जबकि गुजराती में ऐसी कोई भी कहानी नहीं मिलती है, जहाँ इस समस्या का समाधान या उसे दूर करने का संकेत किया गया हो। गुजराती कहानियों में अस्पृश्यता की समस्या का मार्मिक वर्णन करके लेखक ने उसे वहीं छोड़ दिया है। इस समस्या के प्रति दलित पात्रों में कोई खास विरोध या प्रतिकार दिखायी नहीं देता, जिससे कहानी में कोई नई सोच लक्षित नहीं की जाती।

4.1 (2) दलित नारी के जातीय शोषण की समस्या

स्त्रियों का जातीय शोषण दलित समाज के लिए एक गंभीर समस्या है। इससे न केवल दलित महिला की शारीरिक मानहानी होती है, बल्कि उसे गहरा मानसिक आघात भी पहुँचता है। जातीय शोषण का शिकार होने वाली स्त्री के जीवन में यह घटना मानसिक रुप से जड़ता पैदा करने वाली हो जाती है। ऐसी घटना से दलित किशोरियाँ स्वाभाविक चपलता, अल्हड़पन, बालसुलभ स्वत्व गँवा देती हैं। युवतियों को इससे गहरा आघात पहुँचता है और दूषित होने व आत्मतिरस्कार की भावना का अनुभव करती हैं, जबकि विवाहित स्त्री का जब बलात्कार होता है, तो उस नारी की मनोव्यथा के साथ–साथ उसके पति को भी गहरा मानसिक आघात पहुँचता है। दलित नारी का जातीय शोषण मुख्य तौर से श्रमिक नारी की आर्थिक जरुरत, दलित समाज की भीरुता, दलित वर्ग का आजीविका के लिए सवर्णों पर निर्भर रहना, बिरादरी की पंचायत का शोषित को ही दंडित करना, कई बार परिवार के सहयोग न मिलना आदि कई ऐसे मुद्दे हैं, जो इस समस्या का कारण हैं। गुजराती की दलित कहानियों में ऐसी कई कहानियाँ मिलती हैं जिसमें दलित स्त्रियों के जातीय शोषण का कारण उनके मालिकों पर आर्थिक निर्भरता से जुड़ा हुआ देखा जाता है।

दलित कथाकारों ने अपनी रचनाओं में दलित महिलाओं के जातीय शोषण की अभिव्यक्ति में गहरी संवेदना, मनोव्यथा, कुछ हद तक लाचारी का भाव, हताशा, आक्रोशपूर्ण विरोध जैसे स्वरुप धारण किए हैं, पंरतु उल्लेखनीय बात यह है कि उसमें खलनायक अधिकतर उच्च वर्ग का पुरुष ही रहा है और वह लेखकों के आक्रोश का पात्र भी रहा है। दलित नारी का जातीय शोषण एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा है, फिर भी सामान्यतः उस पर खुली चर्चा नहीं की जाती। कहानीकार या साहित्यकार इस समस्या का निराकरण नहीं कर सकते, किन्तु इस विषय पर वे गहरी चिंता, जागरुकता को लेखन के ज़रिए पाठकों तक पहुँचा सकते हैं। इससे इस जटिल समस्या के निराकरण की दिशा में सकारात्मक शुरुआत हुई है। ऐसे ही हिन्दी कहानीकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, कावेरी, सूरजपाल चौहान, विजयकांत, कुसुम वियोगी, कुसुम मेघवाल, सुशीला टाकभौरे, जयप्रकाश कर्दम, रत्नकुमार सांभरिया, अमर स्नेह, प्रेम. कपाड़िया आदि हैं। जबकि गुजराती में हरीश मंगलम्, बी.केशरशिवम्, डॉ.मोहन परमार, हरिपार, धरमाभाई श्रीमाली, जोसेफ मेकवान, भी.न.वणकर, मधुकान्त कल्पित, प्रवीण गढ़वी, मौलिक बोरीजा आदि कहानीकार हैं।

हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में दलित स्त्रियों के जातीय शोषण की समस्या का मार्मिक वर्णन किया गया है। हिन्दी की दलित कहानियों में निम्न कारणों से दलित महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या जैसे की आर्थिक निर्भरता, गरीबी–भुखमरी, कामकाजी स्त्रियों की समस्या, सवर्णों की हवस एवं सवर्णों द्वारा छल पूर्वक दलित युवतियों का जातीय शोषण किए जाने जैसे विषय पर कहानियाँ लिखी गई हैं।

1. आर्थिक निर्भरता या गरीबी–भुखमरी के कारण जातीय शोषण की समस्या–'**हरिजन**' (प्रेम कपाड़िया), '**भूख**' (डॉ. सी.बी.भारती), '**कर्फ्यू**' (अखिलेश कुमार),
2. कामकाजी महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**अत्तू और अम्मा**' (सूरजपाल चौहान), '**मंगली**' (कुसुम मेघवाल), '**जंगल की रानी**' (ओमप्रकाश वाल्मीकि), '**जंगल में आग**'(गौरी शंकर), '**मंगली**'(कुसुम मेघवाल), '**सुमंगली**'(कावेरी), '**आखेट**'(रत्नकुमार सांभरीया)
3. सवर्णों की हवस वृत्ति के कारण महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**मरीधार**' (विजयकांत) '**आंतक**'(राजेशकुमार बौद्ध), '**अंतिम बयान**'(कुसुम वियोगी), '**अंगारा**'(सूरजपाल चौहान), '**अंगूरी**'(सूरजपाल चौहान), '**अपना गाँव**'(मोहनदास नैमिशराय), '**कर्ज़**'(मोहनदास नैमिशराय), '**उसका फैसला**'(कालीचरण प्रेमी),
4. छल पूर्वक किया गये महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**एक दलित लड़की**'(डॉ. रामसिंह यादव), '**खटिया की जाति**'(सुरेन्द्र नायक), '**बात**'(रत्नकुमार सांभरिया)

गुजराती की दलित कहानियों में दलित महिलाओं के जातीय शोषण पर लिखी कहानियाँ–

1. आर्थिक निर्भरता या गरीबी–भुखमरी के कारण जातीय शोषण की समस्या–'**मेली मथरावटी**'(राघवजी माधड़), '**एक छालियु दाल नी खातर**'(वसंतलाल), '**सपायडो**'(विठ्ठलराय श्रीमाली), '**थड़ी**'(मोहन परमार), '**सोमली**'(हरिपार), '**भींस**'(मौलिक बोरीजा),
2. कामकाजी महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**मंकोड़ा**'(बी. केशरशिवम्), '**श्रद्धा**'(हरीश मंगलम्), '**अधूरापूल**'(मधूकांत कल्पित),'**जोगन**'(बी. केशरशिवम्), '**रखोपा का साँप**'(अरविंद वेगड़ा),
3. सवर्णों की हवस वृत्ति के कारण महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**शहर की बहू**'(बी. केशरशिवम्), '**सगपण**'(प्रज्ञा पटेल), '**कडण** '(मोहन परमार), '**गोमती** '(पुष्पा माधड), '**साडं**'(हसमुख वाघेला)
4. छूलपूर्वक किये गये महिलाओं के जातीय शोषण की समस्या–'**लाखु**'(मधुकांत कल्पित), '**जूती पहनने का मन**'(प्रवीण गढवी), '**दाझवुं ते**'(धरमाभाई श्रीमाली), '**छगना को न समझ में आते सवाल**'(जोसेफ मेकवान)

4.1.(2)1. आर्थिक निर्भरता, गरीबी, भुखमरी की समस्या

प्रेम कपाड़िया की '**हरिजन**' कहानी में देवदासी प्रथा से पीडित परबतिया का जातीय शोषण पुजारी द्वारा किया जाता है। गरीब दलित स्त्रियॉ मजबूरन इस अपमान जनक कार्य से जोड़ी जाती हैं और उसके परिणामस्वरुप उनसे जन्में बच्चे कहानी के नायक प्रेम की तरह भटकने के लिए विवश होते हैं। परबतिया इस शोषण को सहज स्वीकार लेती है। वर्षो बाद प्रेम अपनी मॉ एवं उसी की तरह की अन्य स्त्रियों को मुक्त करके उन्हें आत्मसम्मान पूर्ण जीवन जीने का अवसर देता है। बी. केशवशिवम् की '**चामड़ी घसावानी वेदना**'(चमड़ी घीसने की वेदना) की काशी पहले बिन–व्याही माँ बनती है और बाद में दलित बच्चों की शिक्षा, रोज़गार समाज सुधार के लिए कॉलगर्ल बन

जाती है। वह स्वयं दलदल में धँसकर दूसरों को दलदल से बचाने का महान कार्य करती है। अपने पुत्र के उज्जवल भविष्य के लिए मज़बूरन काशी जातीय शोषण का भोग बनती है। काशी की आर्थिक कमजोरी उसे इस घृणास्पद कार्य से जोड़े रखती है, किन्तु पाप के रास्ते से कमाए रुपयों का जनकल्याण में उपयोग करके उसके सारे पाप धुल जाते हैं। '**हरिजन**' की काशी एक मूक प्राणी की तरह जातीय शोषण को सहती है और अपने बेटे के लिए कुछ नहीं कर पाती जबकी '**चामडी घसावानी वेदना**' की काशी अपने बेटे के जीवन को सँवारने के लिए एवं अन्य दलितों को शोषण मुक्त करने के लिए हर तरह के प्रयास करती है। डॉ. सी.बी. भारती की '**भूख**' कहानी में गरीब आदिवासी पिता अपनी विवाहित पुत्री किशनी और उसके बच्चों को सवर्णों के हाथों बेच देता है। आदिवासी समाज की अधिकतर स्त्रियों का जातीय शोषण गाँव के सवर्ण करते थे। पेट की भूख एक पिता को विवश करती है, बेटी को बेचने के लिए। किशनी की कोई प्रतिकिया कहानीकार ने व्यक्त नहीं की है, जिससे कहानी में अपूर्णता का अनुभव होता है। आदिवासियों में गरीबी से मजबूर परिवार द्वारा सहमती से स्त्रियों को बेचना उस समाज की कमजोरी के साथ परिवार की पेट की भूख की तीव्रता को व्यक्त करता है। वसंतलाल की '**एक छालियु दालनी खातर**'(एक कटोरी दाल के लिए) कहानी में विधवा गरीब कंकुडी अपने पुत्र की दाल खाने की इच्छापूर्ति के लिए सवर्ण रसोइये से शारीरिक संबंध स्थापित करती है और गर्भधारण करती है। कुंकडी का पुत्र के लिए इतना बड़ा त्याग उसकी गरीबी की चरम सीमा को अभिव्यक्त करता है। '**भूख**' एवं '**एक छालियु दाल नी खातर**' दोनों कहानी में क्रमशः एक पिता और एक माँ पेट की भूख के लिए सवर्णों के समक्ष समर्पण करती हैं। अखिलेश कुमार की '**कर्फ्यू**' कहानी की फुलिया और उसकी माँ गुजरी का जातीय शोषण शहर में हुए दंगे के कारण कर्फ्यू की परिस्थिति में होता है। गुजरी पर दंगाई बलात्कार करते हैं जबकि अपने छोटे भाई-बहनों की पेट की भूख को मिटाने के लिए फुलिया रसिक जैसे अधेड़ वय के लंपट पुरुष के समक्ष समर्पण करती है। फुलिया जैसी गरीब युवती गरीबी का शिकार होने से यह कदम उठाने के लिए विवश दिखाई गई है। शहर में दिहाड़ी मजदूरी करने वालों की करुण स्थिति का वर्णन इस कहानी में किया गया है। फुलिया का ऐसा कदम उसकी कमजोरी को प्रस्तुत करता है कहानी में फुलिया एक आदर्श युवती नहीं कही जा सकती। मौलिक बोरीजा की '**भींस**' कहानी में समु पहले पति के शोषण सहती है और तलाक के बाद आर्थिक मदद के बहाने सवर्ण मगनभाई उसका जातीय शोषण करता है। समु यहाँ दोहरे शोषण का शिकार बनती है। गरीब दलित स्त्री जो पति द्वारा त्याग दी जाती है, उसकी विवशता समु के पात्र में दिखाई गई है। विठ्ठलराय श्रीमाली की '**सपायड़ो**'(सिपाही) में डांग के समृद्ध जंगल की रामड़ी गरीबी के कारण शराब बनाकर बेचती है और सिपाही उसी के घर में उस पर बलात्कार करता है। यहाँ रामड़ी की गरीबी लाचारी उसके दुःख का कारण बनती है, किन्तु वही रामड़ी न्याय न मिलने पर सिपाही की हत्या करके स्वयं अपने दोषी को दंड देती है। यहॉ रामड़ी शोषण के प्रति विद्रोह करती दिखाई गई है। हरिपार की '**सोमली**' कहानी की सोमली भी गरीबी के कारण शराब बेचने का कार्य करती है। गरीब सोमली का शरीरिक शोषण गाँव का मुखिया करता है और सोमली जब मुखिया के पुत्र को जन्म देती है, तो वह उसे अस्वीकार करता है। वर्षों बाद जब सोमली की पुत्रवधू का मुखिया जातीय शोषण करना चहता है तब उसे बचाने के लिए मुखिया की हत्या कर देती है। यहाँ परंपरागत रुप से चले आ रहे जातीय शोषण का वर्णन किया गया है। सोमली अपनी लाज़ नहीं बचा

पाती, किन्तु बहू की लाज बचाकर वह कई दलित स्त्रियों के शोषण से बचाती है और दोषी का दंड देती है। यहाँ सोमली का पात्र पहले कमजोर है बाद में निडर देखा जा सकता है। मोहन परमार की '**थड़ी**' कहानी की रेवी पति की अनुपस्थिति और गरीबी के कारण सवर्ण मानसिंह के जातीय शोषण का शिकार बनती है, किन्तु अपने बच्चे, पति, परिवार का मान–सम्मान के लिए वह एक युक्ति से मानसिंह से हमेशा के लिए मुक्ति पाती है। यहाँ रेवी का पात्र पहले लाचार, विवश बताया गया है किन्तु अंत में आत्मविश्वासी, निडर, स्वाभिमानी एवं अपने अधिकार के लिए लड़ने वाला बन जाता है। राघवजी माधड़ की '**मेली मथरावटी**' कहानी की गंगा आर्थिक संकटों से घीरी रहती है, मुखिया उसका जातीय शोषण करता है। उसके माता–पिता भी असहाय बनकर विरोध करने से डरते हैं। यहाँ परिवार की भीरुता गंगा को अपमानित जीवन जीने के लिए विवश करते हैं।

इस प्रकार आर्थिक कारणों से जातीय शोषण का भोग बनने वाली दलित स्त्रियों की कहानी हिन्दी और गुजराती दलित साहित्य में मिलती हैं, किन्तु गुजराती में ऐसी अधिक कहानियाँ लिखी गई हैं, हिन्दी की अपेक्षा। हिन्दी की '**भूख**', '**हरिजन**', '**कर्फ्यू**', कहानी की नायिका क्रमशःकिशनी, परबतिया, फुलिया जातीय शोषण सहती हैं, किन्तु इन पात्रों में लाचारी, विवशता का वर्णन अधिक देखा जा सकता है। किसी भी नारी का चरित्र विद्रोह करता हुआ या शोषण का प्रतिकार करता हुआ चित्रित नहीं किया गया है। गुजराती की '**मेली मथरावटी**', 'एक छालियु दालनी खातर','**भींस**', की नारी पात्र क्रमशः गंगा कंकुडी, समु, जातीय शोषण सहती हैं, किन्तु विद्रोह नहीं करती जबकि '**चमडी घीसने की वेदना**' की काशी समाज सेवा के कार्य से जुड़कर अपने जीवन को सार्थक बनाती है। '**थड़ी**' की रेवी युक्ति का प्रयोग कर शोषक को सबक सीखाती है। '**सपायड़ो**' की रामडी दोषी को स्वयं दंड देती है और '**सोमली**' की सोमली भी शोषण के समक्ष विद्रोह करती है।

4.2.(2)2. दलित कामकाजी महिला का जातीय शोषण

हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में ऐसी कई कहानियाँ मिलती हैं, जिसमें दलित कामकाजी महिलाओं का जातीय शोषण सवर्ण पुरुष, ठेकेदार, मुखिया आदि के द्वारा किया गया दिखाया गया है। जिनमें हिन्दी की सूरजपाल चौहान की '**अत्तू और अम्मा**', कुसुम मेघवाल की '**मंगली**',ओमप्रकाश वाल्मीकि की '**जंगल की रानी**', कावेरी की '**सुमंगली**', रत्नकुमार सांभरिया की '**आखेट**', कहानी तथा गुजराती में बी. केशरशिवम् की '**मकोड़ा**', हरीश मंगलम् की '**श्रद्धा**', मधुकांत कल्पित की '**अधूरा पुल**', बी. केशरशिवम् की '**जोगन**', कहानियाँ मिलती हैं।

'**अत्तू और अम्मा**' की चित्रा एक विधवा सफाई कार्य करने वाली स्त्री है। वह जिस सवर्ण के घर सफाई का कार्य करती है वह पुरुष एकलता का लाभ लेकर चित्रा को अपने बहुपाश में लेता है, शोर मचाने पर लोग एकत्र होते हैं और दोष निर्दोष चित्रा के सिर पर लगाया जाता है। सर्वण भला दलित स्त्री को कैसे स्पर्श कर सकता है ? चित्रा का पक्ष लेने वाला कोई नहीं क्योंकि सभी सवर्ण दलित का शोषण करना जानते हैं, उनका पक्ष समर्थन वे नहीं कर सकते। बी. केशरशिवम् की '**मंकोड़ा**' की संतोक जिस सवर्ण रणछोड़ के खेत में मजदूरी करती है, वह उसका जातीय शोषण करना चाहता है, साथ न देने पर जबरन उसके पति की उपस्थिति में उसके घर में वह संतोक पर हमला

करता है। बहादुर संतोक पति की जान और स्वयं की आबरु बचाने के लिए रणछोड़ का लिंग काट देती है। यहाँ संतोक का जातीय शोषण करने का सपना–सपना ही रह जाता है। संतोक एक विद्राही नारी, के रुप में चित्रित की गई है। कुसुम मेघवाल की '**मंगली**' एक कामकाजी विधवा स्त्री है, अपने ठेकेदार की वासना को न पहचानते हुए वह उसे संवेदना, सहानुभूति समझती है। वह गरीब हैं, किन्तु परिश्रम करके जीने को तैयार है किसी की रखैल बनकर अपमानित जीवन नहीं जीना चाहती। मंगली का कमजोर एवं सशक्त रुप कहानी में दिखाया गया है। वह शोषण के समक्ष विद्रोह करके दोषी को पुलिस के हाथों सौंपती है। किन्तु मधुकांत कल्पित की '**अधूरा पुल**' की नायिका मजदूरिन ठेकेदार की वासना का शिकार बनती है। पति एवं पुत्र की उपस्थिति में यह शोषण होता है। नायिका का चरित्र कमजोर बन जाता है। क्योंकि वह सहजता से ही यह शोषण स्वीकारने लगी हो ऐसा प्रतीत होता है। कावेरी की '**सुमंगली**' में अनाथ नाबालीग सुगिया ठेकेदार की कुदृष्टि का शिकार बनकर उसका जातीय शोषण सहने को विवश है। सुगिया जीवनभर दुःखों का सामना करती है। सुगिया की संवेदना एवं मनोव्यथा का चित्रण मार्मिक है, किन्तु वह विद्रोह करती हुई नहीं दिखाई देती। शोषण के समक्ष हमेशा विवश दिखाई गई है। बी. केशरशिवम् की '**जोगन**' की वाली शहर में बूढ़े ससुर के साथ मजदूरी का कार्य करती है। विधवा वाली की सुंदरता सारे व्यापारी के आकर्षण का केन्द्र बनती है। वाली व्यापारी के हमले से अपनी आत्मरक्षा करने के लिए उसके सिर पर वार करती है। उस व्यापारी की मृत्यु हो जाती है। यहाँ वाली में नारीशक्ति की झलक देखी जा सकती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की '**जंगल की रानी**' की कमली एक शिक्षिका थी। सवर्ण अधिकारी उसका जातीय शोषण करना चाहते है, जब वे निष्फल होते हैं तब उसकी हत्या कर देते हैं। कहानी में अभिव्यक्त सच दलित जीवन का ऐसा भयावह सच है जिसका दर्द बलात्कृत स्त्री का परिवार कई पीढ़ियों तक सहता है। राजनीति, उच्चपदाधिकारी एवं रक्षक के मुखौटों को कहानी में उतारकर फैंका गया है। कमली का पात्र मरते दम तक हिम्मत नहीं हारता, यह बात उसे एक यादगार पात्र बनाता है। हरीश मंगलम् की '**श्रद्धा**' की धनी पति के पलायन से मजदूरी करती है। सेठ सुंदरलाल उसकी एकलता का लाभ उठाता है। परिस्थिति वश धनी समर्पण करती है किन्तु उसे अपनी गलती पर अफसोस होता है। कहानी में अंधश्रद्धा धनी को श्रद्धा की ओर ले जाती है। रत्नकुमार सांभरिया की '**आखेट**' की रेवती पर गाँव के ठाकुर की कुदृष्टि होती है। रेवती अपनी आबरु बचाने के लिए उसकी नाक काटकर उसे कड़ा दंड देती है। शहर में भी बुजुर्ग सवर्ण उस पर कुदृष्टि रखता है। यहाँ रेवती की सुंदरता उसे चैन से जीने नहीं देती। रेवती का पात्र अत्यंत ही साहसी, निडर, परिश्रमी एवं आदर्श कहा जा सकता है। शोषण के प्रति विद्रोह करके वह शोषक को सबक सीखाती है।

'**जंगल में आग**' (गौरीशंकर नागदंश) की फुलतोड़नी मिल में काम करती थी। वहाँ दलित युवतियों की खरीद–बिक्री की जाती थी। विलासी सिंह जैसे सवर्ण से विवाह और बाद में विधवा होकर कई पुरुषों के जातीय शोषण का शिकार बनती है। राजनीति में प्रवेश करके वह उच्च पद प्राप्त करती है किन्तु बसमतिया की लाज बचाने के लिए हत्या कर बैठती है। यहॉ फुलतोड़नी स्वयं जातीय शोषण का भोग बनती है, किन्तु वह किसी दूसरी युवती को इसका भोग बनने से बचाकर उसे नया जीवन देती है वह शोषण के प्रति विद्रोह करती है।

'रखोपा का साँप'(अरविंद वेगड़ा) रुडी जिस जीलुभा के खेत में मजदूरी करती है, वह उस पर बलात्कार करता है। गरीब रुड़ी बीमार पति वीरजी से अत्यंत प्रेम करती है, किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी वह अपने शरीर को वासना खोर से नहीं बचा पाती। कामकाजी रुड़ी की विवशता, गरीबी, भुखमरी एवं उसका भरपूर फायदा उठाने वाला जीलुभा जैसे पात्र से रुडी की मनोव्यथा का चित्रण किया गया है।

इस प्रकार दलित कामकाजी महिलाओं के जातीय शोषण **'अत्तू और अम्मा'**, **'सुमंगली'** की पात्र क्रमशः चित्रा और सुगिया, दोषी के समक्ष कमजोर पड़ जाती हैं किन्तु **'मंगली'**, **'जंगल की रानी'** की नारी पात्र क्रमशः मंगली, एवं कमली अत्याचारी के समक्ष संघर्ष करती हैं, कमली अपनी जान गँवाती है किन्तु मंगली न्याय पाने के लिए कदम बढ़ाती है। इसी प्रकार **'आखेट'** की रेवती नारीशक्ति का परिचय देती है। गुजराती में **'मंकोडा'** की संतोक भी रेवती की तरह आत्मरक्षा के लिए संघर्ष करती हुई चित्रित की गई है। **'जोगन'** की वाली भी साहसिक नारी का रुप लेती है। जबकि **'अधूर पुल'**, **'श्रद्धा'** कहानी की नायिका परिस्थिति वश कमजोर पड़ जाती हैं।

4.1.(2)3. सवर्णों की हवस का शिकार दलित स्त्रियाँ

हिन्दी एवं गुजराती की दलित कहानियों में ऐसी कई कहानियाँ मिलती हैं, जिसमें दलित स्त्रियाँ पुरुषों की वासना एवं हवस का शिकार बनती हैं। कई कहानियाँ ऐसी हैं, जिनमें दलित पुरुष से बदला लेने के लिए उसकी पत्नी, बहन, बहू आदि का सवर्ण पुरुष जातीय शोषण करते हैं। कई ऐसी भी हैं, जिनमें सवर्ण पुरुष अपनी वासना की तृप्ति के लिए दलित स्त्रियों का शोषण करते हैं। सवर्ण पुरुषों के लिए दलित स्त्रियाँ उनकी शरीर की भूख मिटाने का एक साधन मात्र हैं, जिन्हें वे जब चाहें भोग सकते हैं और मारकर फेंक सकते हैं, क्योंकि ऐसा करने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता। उन्हें दंड देने की शक्ति किसी दलित में नहीं होती। विजयकांत द्वारा रचित **'मरीधार'** का नायक चमकू ठाकुरों के घर का मैला ढोने के कार्य से इंकार कर देता है, जिसके परिणामस्वरुप उसे गाँव से निष्काशित कर दिया जाता है। जेल भेजा जाता है और पत्नी सुगिया से अमानुषिक व्यवहार एवं बलात्कार किया जाता है। यहाँ दलित पुरुष के विद्रोह करने का दंड उसकी पत्नी को दिया जाता है। **'कडण'**(मोहन परमार) कहानी में सवर्ण वनुभा दलित मफला की हत्या करवाकर उसकी पत्नी का बलात्कार करता है। उस स्त्री को मारकर कुँए में उसके देवर के साथ फेंक देता है। यहाँ वनुभा अपने पाप को छिपाने के लिए दलित स्त्री एवं उसके देवर पर झूठा आरोप लगाता है। कहानी में वनुभा जैसे सवर्ण पुरुष को अत्यंत ही वासनाखोर एवं क्रूर बताया गया है, जबकि दलित स्त्री की चारित्रिक विशेषताएँ दब गई हैं। **'आंतक'**(राजेशकुमार बौद्ध) में दलित राखी के बेटे के छोटे से झगड़े का कठोर दंड उसे दिया जाता है। पहले मारपीट, फिर बलात्कार एवं निर्वस्त्र करके गाँव में घुमाया जाता है, अंत में जिंदा जला दिया जाता है। उसका साथ देने वाली विमला को भी निर्वस्त्र करके मारा–पीटा जाता है। यहाँ सवर्ण ठाकुर द्वारा दलितों पर अत्याचार की चरमसीमा देखी जा सकती है। दलितों के मोहल्ले में सरेआम दो महिलाओं पर अत्याचार करना एवं थानेदार की उपस्थिति में यह अत्याचार का, होना हमारे देश के न्यायतंत्र के समक्ष प्रश्न खड़ा करने वाला है। विमला का विद्रोह करके सात लोगों पर गोली चलाना क्या अनुचित कहा जाएगा ? यदि जुल्म करना गलत है, तो सहना भी गलत ही है। **'गोमती'**(पुष्पा माधड़) कहानी की गोमती मंदिर के

पुजारी द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। परिवार को सवर्णों के अत्याचार से बचाने के लिए आत्महत्या करती है। यह कहानी एक ओर दलितों की विवशता एवं दूसरी ओर सवर्णों के शोषण का बयान करती है। स्वर्ग के इन्द्र भी गोमती को न्याय देने में असमर्थता व्यक्त करते हैं। दलित नारी को पृथ्वी लोक एवं स्वर्गलोक में कहीं भी न्याय नहीं मिलता। **'अंगूरी'**(सूरजपाल चौहान) की अंगूरी गाँव के मुखिया के बलात्कार के प्रयास को निष्फल करती हुई एक सबला नारी के रुप में हमारे समक्ष आती है। इस विषय में प्रमोद सिंह का विचार है कि–

> **"इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया है कि दुश्मन कितना ही बलशाली क्यों न हो, यदि साहस और जान हथेली पर लेकर मुकाबला करने की सामर्थ्य है और उसके बल पर मुकाबला किया जाए, तो दुश्मन को खदेड़ना कठिन नहीं है।"**[2]

शहर की बहू' (बी. केशरशिवम्) की कमु दोहरे शोषण को झेलती है। उसका पति सवर्ण का विरोध नहीं करता, किन्तु शहर में रही कमु गाँव में होने वाली दलित स्त्रियों के जातीय शोषण का शिकार नहीं बनना चाहती। वह सवर्ण गरबड़ को नारीशक्ति का परिचय देती है। **'अंतिम बयान'**(कुसुम वियोगी) की अतरो सवर्ण कामुक राजेन्द्र जैसे भेड़िये को किसी दलित स्त्री का जातीय शोषण करने लायक नहीं छोड़ती। अतरो **'अंगारा'** की नायिका की तरह साहसी नारी के रुप में हमारे समक्ष आती है। सवर्ण पुरुषों की वासनापूर्ति के लिए हर दलित स्त्री यह कदम नहीं उठा पाती। **'सगपण'**(प्रज्ञा पटेल) की मणकी का जातीय शोषण एक डॉक्टर द्वारा किया जाता है। चौकीदार पिता बेटी को इंसाफ दिलान में निष्फल होता है। डॉक्टर जैसे शिक्षित व्यक्ति के वासना के भूखे व्यक्तित्व को समाज के समक्ष लाने नहीं दिया जाता। मणकी का जातीय शोषण उसे मानसिक क्षती पहुँचाता है, साथ ही उसका मंगेतर का जीवन भी नष्ट–भ्रष्ट कर देता है। यहाँ जातीय शोषण के परिणामों को लेखिका ने बखूबी प्रस्तुत किया है। **'उसका फैसला'**(कालीचरण प्रेमी) की बिंदो पहले पारिवारिक शोषण एवं बाद में गाँव के प्रधान से बलात्कार का शिकार बनती है। बिंदो को इंसाफ कहीं नहीं मिलता। वह आत्महत्या कर लेती है। यहाँ गाँव में प्रधान के परिवार के पुरुषों की हैवानियत एवं कामभावना दलित स्त्री के जीवन को तहस–नहस करती है, तो परिवार द्वारा बिंदो की अवहेलना उसे आत्महत्या का निर्णय लेने पर विवश करती है। **'झाड़'**(हसमुख वाघेला) कहानी में दलित दलिया जलती होली से नारियल चुराता है, परिणामस्वरुप उसकी गर्भवती पत्नी को सवर्ण नग्न करके प्रताड़ित करता है। सवर्णों की स्त्रियों की उपस्थिति में एक दलित स्त्री का घोर अपमान होता है। यहाँ दलिया की पत्नी कंकुडी के साथ अग्नि में कूदना कहानी का करुण अंत एवं दलितों की कमजोरी को व्यक्त करता है। **'कर्ज़'**(मोहनदास नैमिशराय) कहानी में रामप्यारी और उसकी बेटी का गाँव के महाजन द्वारा बलात्कार किया जाता है। रामप्यारी का बेटा 'कर्ज़' की परंपरा को तोड़ता है, महाजन बेटे के इस निडर एवं साहस को तोड़ने के लिए एवं उसे सबक सीखाने के लिए अपने कारिंदे के साथ मिलकर दलित स्त्रियों पर अत्याचार करता है। अशोक जैसा युवा दलित परंपराओं को बदलने का कठोर दंड पाता है, किन्तु वह दोषी को स्वयं दंड देकर शोषण की परंपरा को रोकने का प्रयास करता है। **'अपना गाँव'**(मोहनदास नैमिशराय) कहानी में कबूतरी को उसके पति की अनुपस्थिति में गाँव के ठाकुर की शारीरिक भूख न मिटाने पर उसे निर्वस्त्र करके गॉव में घुमाया जाता है। कबूतरी को

पुलिस से न्याय नहीं मिलता, किन्तु उसका पति पूरे गाँव को एक साथ करके न्याय पाने के लिए संघर्ष करता है। यहाँ सवर्णों की हैवानियत, दलित स्त्री की विवशता एवं उसके परिवार की परिस्थिति को चित्रित किया गया है।

आज भी आए दिन न्यूज चैनल एवं समाचार पत्र में यह देखा जाता है, कि दलित स्त्री को निर्वस्त्र करके गाँव में घूमाया गया, जिंदा जलाया गया, कोड़े बरसाए गए, बाल काटे गए, मुँह काला किया गया, बलात्कार किया गया, घर जलाए गए आदि। सवर्ण स्त्री की अपेक्षा आज गाँव में दलित स्त्री अपने आपको असुरक्षित महसूस करती हैं। जो स्त्री सवर्ण की वासना की पूर्ति करने से इंकार कर देती हैं, अधिकतर ऐसी दलित महिलाओं को सवर्ण किसी अन्य षडयंत्र में फँसाकर उन्हें अपमानित करके अपने कलेज को ठंड़क पहुँचाते हैं। ऐसी अमानवीय घटनाएँओं को रोकना अत्यंत आवश्यक है।

4.2.(1)4. छल पूर्वक किया गया जातीय शोषण

हिन्दी एवं गुजराती दलित कहानियों में ऐसी कई क़हानियाँ हैं, जहाँ सवर्ण पुरुष दलित स्त्री की कमजोरी को जानकर उनसे छल पूर्वक संबंध बनाते हैं और उनका जातीय शोषण करते हैं। जीवनभर अभाव में रहने वाली दलित स्त्री कई बार छोटी–छोटी जरुरतों की वस्तुओं के लिए तरसती हैं। सवर्ण पुरुष दलित महिलाओं को चीज–वस्तु का लोभ देकर, उन्हें अपने वश में करने का प्रयास करते हैं। कुछ सवर्ण दलित युवतियों को विवाह करने का वादा करके उनका जातीय शोषण करते हैं। गाँव, शहर, स्कूल, कॉलेज, आदि में भी शिक्षित, अशिक्षित दलित महिलाओं का जातीय शोषण किया जाता है। सवर्ण पुरुष के वासनामय प्रेम के छल को जो दलित युवतियाँ पहचान नहीं पाती, वे जीवनभर अपने साथ हुए छल को भूल नहीं पाती। डॉ. रामसिंह यादव की '**एक दलित लड़की**' की लक्ष्मी का जातीय शोषण विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष द्वारा किया जाता है। विवाह करने का वादा करके किया गया जातीय शोषण लक्ष्मी को सिवाय बदनामी, धोखे, अपमान के अतिरिक्त कुछ नहीं देता। लक्ष्मी का जातीय शोषण इसलिए होता है, क्योंकि एक दलित लड़की विभागाध्यक्ष के खिलाफ कोई आरोप नहीं लगा पाएगी, यदि आरोप लगाती भी है, तो कोई उसका विश्वास नहीं करेगा। शिक्षित होते हुए भी लक्ष्मी सवर्ण पुरुष के छल को नहीं पहचान पाती। प्रवीण गढ़वी की '**जूती पहनने का मन**' की गगी अशिक्षित है। भोली–भाली गगी को बहला–फुसलाकर प्रहलाद पैर में पहनने की जूती दिलाने का वादा करता है और विवाह करके शहर ले जाने का वादा करता है। जीवन भर गंगी ने पैर में जूती नहीं पहनी थी, अभावों एवं अवहेलना से भरे जीवन में प्रहलाद का प्रेम उसे आकर्षित करता है। गगी के साथ प्रहलाद का संबंध मात्र शारीरिक आकर्षण था, जिसे गगी प्रेम समझती थी। गगी को अपनी भूल का एहसास बहुत देरी से होता है। प्रहलाद जैसे स्वार्थी, छली, वासनाखोर पुरुष किस प्रकार दलित युवती को अपने शिकंजे में फँसाते हैं, यह इस कहानी में देखा जा सकता है। सुरेन्द्र नायक की कहानी '**खटिया की जाति**' में होस्टेल के सफाई कर्मचारी की बेटी शिप्रा का जातीय शोषण होस्टेल के वार्डन का बेटा सोमेश करता है। शिप्रा का रात के अंधेरे में जातीय शोषण करने वाला सोमेश दिन में खटिया को धोकर शुद्ध करता है। गर्भवती शिप्रा को सोमेश अस्वीकार करता है। विवाह करने के वादे पर शिप्रा अपना समर्पण सोमेश के समक्ष करती है, किन्तु उसके साथ छल किया गया था। दलित विशाल पर झूठा आरोप लगाया जाता है, किन्तु विशाल सोमेश की पोल खोल देता है। कहानी के अंत में सच्चाई तो सबके समक्ष आ जाती है, किन्तु शिप्रा को न्याय मिला या नहीं यह प्रश्न

पाठकों पर छोड़ दिया गया है। दोषी को कोई दंड देने की बात का वर्णन नहीं किया गया है। इसी प्रकार गुजराती की '**दाझवुंते**' (जलनवह) धरमाभाई श्रीमाली की कहानी में सवर्ण परबत प्रेम का नाटक करके दलित बबली का जातीय शोषण करता है। बबली से विवाह का वादा करके उस पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने की बात कहता है, किन्तु विवाह एक सवर्ण युवती से करता है। गर्भवती बबली परबत की बारात में सिर पर पेट्रोमेक्स लेकर चलती है। यहाँ पर बबली की मनोव्यथा को बहुत ही प्रतीकात्मक रुप में प्रस्तुत किया गया है। दलित युवती जिसे प्रेम समझती थी, वह तो मात्र वासना, धोखा, और उसका भ्रम था। वह ठगी गई थी और यह बात समझने में उसे बहुत देरी हो जाती है। रत्नकुमार सांभरिया की '**बात**' कहानी में दलित सुखी की आर्थिक कमजोरी और बच्चे की फीस के लिए उधार के रुपयों के बदले में सवर्ण धींग उसका जातीय शोषण करना चाहता है। सुरती का कठोर परिश्रम उसे बचा लेता है, किन्तु इस कहानी में धींगा जैसे वासना के भूखे व्यक्ति का छल–कपट, षडयंत्र, एवं दलित महिला की मजबूरी का फायदा उठाने की उसकी गंदी नियत को उजागर करने में कहानीकार को सफलता मिली है। सुरती के माध्यम से गाँव की अनपढ़, गरीब स्त्रियों के जातीय शोषण की समस्या को कहानी में चित्रित किया गया है। सुरती इस अन्याय के समक्ष विद्रोह करती है, क्योंकि वह अन्याय के समक्ष कमजोर नहीं बनना चाहती, न्याय के लिए लड़ना जानती थी। मधुकांत कल्पित की '**लाखु**' (लक्षण) कहानी में गाँव की अनपढ़, गरीब काली एक मजदूरिन युवती है, जिसके पैर के लक्षण की जूठी तारीफ करके सवर्ण रमतूजी उसका जातीय शोषण करना चाहता है। काली पहले उसके बदले व्यवहार को पहचान नहीं पाती क्योंकि यह वही रमतूजी था जो दुनिया के समक्ष पहले उसे अस्पृश्य कहता था, आज एकांत में उसका स्पर्श उसे ठीक नहीं लगता। यहाँ काली रमतूजी के छल को भाँप जाती है और जातीय शोषण से बच जाती है। वह हँसिया उठाकर रणचंडी के रुप में रमतूजी को ऐसा सबक सीखाती है, कि वह जान बचाकर भागने पर विवश हो जाता है। जोसेफ मेकवान की '**छगना को न समझ में आते सवाल**' सवर्ण कल्याणजी बापुजी आदिवासियों के मसीहा के रुप में लोगों के समक्ष जिस युवक को गोद लेते हैं बाद में उसी की पत्नी का जातीय शोषण करते हैं। गरीब छगना की पत्नी कुमली पर अत्याचार रक्षक के रुप में भक्षक करता है। सवर्णों के दोहरे व्यक्तित्व पर यहाँ प्रकाश डाला गया है और दलितों की गरीबी, दयनीयता, लाचारी को प्रकट किया गया है।

इस प्रकार छल पूर्वक किए गए जातीय शोषण की कहानियों में '**खटिया की जाति**' की शिप्रा '**जूती पहनने की इच्छा**' की गगी, '**दाझवुं ते**' की बबली '**एक दलित लड़की**' की लक्ष्मी सवर्ण पुरुष के जातीय शोषण का शिकार बनती हैं, किन्तु इस शोषण को देरी से पहचानती हैं और बाद में अपनी मूर्खता पर, झूठे प्रेम के वादे पर विश्वास करने की भूल, के लिए दुःखी होती हैं। जबकि '**बात**' की सुरती, '**लाखु**' की काली जैसी नायिका सवर्ण पुरुष के दिखावे के प्रेम के पीछे छीपे असली रुप को पहचान जाती हैं और अत्याचार, अन्याय के समक्ष विद्रोह करती हैं। अशिक्षित होते हुए भी वह सवर्ण पुरुष की चालाकी एवं उसके षड़यंत्र को समझ जाती हैं। जबकि '**एक दलित लड़की**' की लक्ष्मी जैसी शिक्षित युवती सवर्ण पुरुष के बहकावे में आकर उसके समक्ष समर्पण कर देती है। दलित नारी के लिए आज यह अत्यंत आवश्यक है कि वह शिक्षित बनें एवं अपने जीवन के निर्णय सोच–समझकर करें, क्योंकि यदि वे स्वयं सजग रहेंगी तो कोई उनके साथ छल नहीं कर पाएगा।

4.1.(3) आर्थिक समस्याएँ

दलित समाज का हजारों वर्षो का इतिहास और सत्य यह है कि यहाँ स्त्री पुरुष के ऊपर बोझ नहीं होती हैं। वह पुरुष के बराबर कमाती हैं। चाहे वह घास खोदे, दूसरों के घर–खेतों में मजदूरी करें शहरों में झाडू–पोंछा, बर्तन सफाई, घरेलू नौकर, कागज–प्लास्टिक चुनना–बेचना, बेलदारी, सड़क–निर्माण, अनाज व साग–सब्जी के बाजारों में मजदूरी करना, सड़कों पर घूम–घूमकर कंघी–बिंदी बेचना, कपड़ों के बदले बर्तन बदलना, सिलाई, मोची, मलमूत्र साफ करना जैसे कार्यों में औरतें लगी हैं। इन असंगठित क्षेत्रों में ज्यादा परिश्रम, कम मेहनताना न कोई प्रसूति अवकाश और न साप्ताहिक अवकाश न ही सामाजिक सुरक्षा है। कमाने में या परिश्रम करने में वह पुरुष से कहीं भी पीछे नहीं है। सवर्ण स्त्रियों को कमाने की ज़रुरत नहीं पड़ती थी, क्योंकि उनके पास जमीन–जायदाद आदि आय के इतने पर्याप्त स्रोत होते थे कि वे दलित महिलाओं को नौकरानी के रुप में काम करवाती थी। इस तरह देखें तो सवर्ण स्त्रियाँ आर्थिक रुप में अपने पुरुषों पर आश्रित थी। जबकि दलित स्त्रियों के पास घर बैठकर आरामपूर्वक जीवन बीताना असंभव कहा जा सकता है। जीवन जीने के लिए उन्हें पुरुष के साथ मिलकर कमाना पड़ता है। लेकिन दलित पुरुष इस बात को नहीं समझता कि समान रुप से कमाने वाली, घर की एवं बाहर की जिम्मेदारियों को निभाने वाली स्त्री को समानता चाहिए। उसे भी घर में सम्मान से जीने का अधिकार मिलना चाहिए।

आज हम भारतीय समाज व्यवस्था को देखें तो उसमें सबसे ज्यादा प्रताड़ित और उपेक्षित वर्ग आदि कोई है, तो वह भारत की दलित नारी। दलित नारी इस देश में सदियों से शिक्षा, ज्ञान, आर्थिक साधन आदि से वंचित रही है और आज भी वह इन सबसे वंचित ही है। घर एवं बाहर तनतोड़ मेहनत करने वाली दलित नारी अपने बच्चों एवं परिवार के लिए परिश्रम करती है, फिर भी वह अपने बच्चों को दो वक्त का भोजन, शरीर पर कपड़े, पैरों मे चप्पल, शिक्षा या बीमार बच्चे के लिए दवाईयों का इंतजाम करने में असमर्थ है। दलित स्त्री यदि गाँव में है, तो उसकी जमीन सवर्ण महाजन के पास गिरवी होगी, या महाजन के क़र्ज तले दबे परिवार के साथ वह भी आर्थिक तंगी को झेलेगी। यदि खेती नहीं है, तो वह सवर्णों के खेत में मजदूरी करती है। अफसोस तो यह है कि सुबह से शाम तक परिश्रम करने के बदले में कभी फटे–पुराने कपड़े तो कभी बासी खाना दे दिया जाता है। मजदूरी के रुप में कुछ रुपये नहीं मिलते। डॉ. कुसुम मेघवाल इस विषय में कहती हैं कि–

> **"परिवार का आर्थिक आधार बनने वाली दलित महिलाएँ उत्पादन के हर क्षेत्र में पुरुष का बराबर साथ देती हैं, किन्तु उनके सहयोग को नज़र–अंदाज कर दिया जाता है और केवल पुरुष को ही कमाऊ माना जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि अर्थोपार्जन में नारी की अतिरिक्त भूमिका रहती है। वह पुरुष से कहीं अधिक श्रम करती है। किन्तु उसके श्रम का सही मूल्यांकन नहीं होता और उसका शोषण होता रहता है। चाहे नौकरी पेशा महिलाएँ हों या खेतिहर मजदूर महिलाएँ, उन्हें शोषण की दोहरी चक्की में पिसना पड़ता है। अर्थोपार्जक कार्यो के साथ–साथ वह घर गृहस्थी के सभी कार्य स्वयं निपटाती है। इतना सब करने के बावजूद भी उसे मिलती है झिडकियां और तिरस्कार जिसे नारी अपनी नियति मान बैठी है। खेत–खलिहानों के अतिरिक्त पशुओं को चारा**

डालना, दूधदुहना, गोबर डालना, कंडे थापना, लीपा–पोती करना जैसे अनगिनत हाड़–तोड़ कार्य करते रहने के बीच कमजोर वर्ग की नारी को इतनी फुर्सत ही कहाँ मिलती है कि वह अपने विषय में सोचे अपने उत्थान के विषय में सोचे।"[3]

दलित महिलाओं को इतना परिश्रम करने के बावजूद आर्थिक कमजोरी के कारण कभी अपने बच्चे, तो कभी परिवार, आदि के कारण सवर्णों के अत्याचार को, अपमान को, बलात्कार को, सहना पड़ता है, तो कभी वह विवश होकर स्वयं अपना शरीर बेचने के लिए मजबूर हो जाती है। कभी पिता या पति उसे इसलिए बेच देते हैं क्योंकि वे अपने पेट की भूख से तंग आ जाते हैं। आर्थिक समस्याओं के कारण दलित पुरुष अपनी नई–नवेली पत्नी को छोड़कर गाँव से शहर चला आता है। गाँव में सवर्ण उसका जातीय शोषण करते हैं। सवर्ण भी नहीं चाहते कि दलितों की स्थिति आर्थिक तौर पर सुधरे, क्योंकि यदि वे आर्थिक रुप से मजबूत बन गए तो वे किसका शोषण करेंगे ? उनकी गुलामी कौन करेगा ? दलितों की आर्थिक कमजोरी का लाभ लेकर ही सवर्ण आरामदायक जीवन व्यतीत करते हैं और कम पारिश्रमिक देकर अधिक परिश्रम का काम करवाते हैं। गरीबों को आवश्यकता पड़ने पर कर्ज़ देते हैं और बदले में वर्षों तक उनका शोषण करते हैं, उनकी स्त्रियों पर अपना अधिकार समझने लगते हैं, दलित महिलाओं से मनमाने कार्य करवाते हैं, कई बार दलित महिलाएँ इसी कारण सवर्णों के जातीय शोषण का शिकार बनती हैं।

इस प्रकार दलित महिलाएँ अपने जीवन की शुरुआत से अंत तक आर्थिक समस्याओं का सामना करती हैं। आर्थिक समस्याओं के कारण वे कभी मजदूरिन, सफाई कर्मचारी बनती हैं, तो कभी देवदासी, वेश्या, रखैल बनकर स्वयं को मिटाकर अपनों का जीवन सँवारती हैं। हिन्दी एवं गुजराती में आर्थिक समस्याओं से जुड़ी कई कहानियाँ मिलती हैं, जिसमें दलित स्त्रियों के जीवन में आर्थिक अभावों को चित्रित किया गया है।

मोहनदास नैमिशराय की **'आधा सेर घी'** की सुमति और उसका पति बलवंता अपने एकमात्र बेटे को पढ़ाने के लिए अपनी ज़मीन, घर सब कुछ बेचने के लिए विवश हो जाता है। विधवा होने पर सुमति अपने बेटे की घी से चिपड़ी रोटी जैसे साधारण सी इच्छा की पूर्ति के लिए बहुत परिश्रम करती है और 'आधा सेर घी' इकट्ठा करके भी बेटे को नहीं खिला पाती, क्योंकि बनिया उसका घी छीनकर ले जाता है। यहाँ पर 'आधा सेर घी' दलित सुमति और उसके पुत्र के लिए छप्पन भोग से कम नहीं है, किन्तु दलितों को यह कहाँ नसीब हो पाता है। बनिये के हाथों घी छीनना, दलितों की खुशियों को छीनने जैसा है। कहानीकार ने यहाँ घी के माध्यम से दलितों की छोटी–छोटी अधूरी इच्छाओं, उनके अभावों एवं हर युग में दलित की दयनीय स्थिति इसी प्रकार की रही है, इस समस्या को केन्द्र में रखा है।

'रोटलो नजराई गयो' की दलित हेता भी सुमति की तरह अपने पुत्र को उसका मनचाहा भोजन बनाकर नहीं खिला पाती। हाड़तोड़ परिश्रम करके जैसे–तैसे बाज़रे की चार रोटी ही बना पाती है। स्वयं पेट पर पट्टा बांधकर पुत्र को शिक्षा दिलाने के लिए संघर्ष करने वाली हेता नहीं चाहती कि उसके पुत्र को ऐसी मजदूरी करनी पड़े, जिसमें दो वक्त का भोजन भी न मिलता हो। कहानी में दैनिक मजदूरी करने वाले हेता के परिवार को न तो पेट भर भोजन मिल पाता है, न ही बच्चों को शिक्षा दिला पाते हैं,

बीमार हो तो मजदूर परिवार की आर्थिक समस्या अधिक बढ़ जाती है। हेता का पुत्र रघु माता–पिता की इन आर्थिक समस्याओं को नहीं समझ पाता यहाँ रघु की बालसुलभ इच्छाओं एवं उसका मनोवैज्ञानिक चित्रण बखूबी किया गया है। इस प्रकार हेता और सुमति दोनों नारी पात्र अपने बच्चों की सामान्य सी इच्छाओं की पूर्ति आर्थिक समस्याओं के कारण नहीं कर पाती।

अमर स्नेह की '**सनातनी**' कहानी की चन्द्रो एक सफाई कर्मचारी है, किन्तु पुत्र को अच्छी शिक्षा देना चाहती है। गाँव में दलितों को पाठशाला में पढ़ने की अनुमति नहीं है। आर्थिक संकटों को झेलने वाली चन्द्रो अपने पुत्र अनुआ को भले ही पाठशाला न भेज पाई हो, किन्तु स्वयं अच्छे संस्कार देकर एक आदर्श माँ का कर्त्तव्य पूर्ण करती है। यहाँ चन्द्रो की जाति, उसकी गरीबी उसके और उसके बच्चे के दुःख का कारण बनती है, किन्तु उसके विचारों से गुरुजी भी चकित रह जाते हैं। चन्द्रो का पुत्र की शिक्षा के लिए दलित जाति का होने के कारण बार–बार अपमानित होने पर भी रास्ते से भटकता नहीं है, यहीं उसकी चरित्र की विशेषता है।

बी. कशरशिवम् की '**भोरींग**' कहानी में एक दलित स्त्री अपने पति की चावल खाने की तीव्र इच्छा की पूर्ति करने के लिए संघर्षों का सामना करती है। दूसरी ओर गरीब बच्चा पूंजा दो दिनों से भूखा है, किन्तु चोरी करके भोजन नहीं खाता। यहाँ गरीबी के कारण चावल जैसी मामूली वस्तु को खाने के लिए जला की लालसा एवं इच्छापूर्ति के बिना ही मृत्यु हो जाना भूख की चरम सीमा है, दलितों की आर्थिक करुण स्थिति का बयान किया गया है। गरीबी के कारण कई दलितों को सही इलाज और दवाईयाँ नहीं मिल पातीं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो जाती है।

रत्नकुमार सांभरिया की '**डंक**' कहानी का दलित पात्र खेरा ब्राह्मण के धोखे की मार से अपना सारा धन गँवा देता है। उसकी पत्नी माँगी गरीबी के कारण पति का इलाज नहीं करवा पाती। कहानी में सवर्णों की अहसान फरामोशी और दलितों पर उनका अन्याय देखा जा सकता है। माँगी के पति की दवाईयों के लिए अपने ही उधार दिये रुपयों के माँगने पर ब्राह्मण द्वारा अपमानित होना उसकी करुण स्थिति को चित्रित करता है। यहाँ कहानी में दलितों का आर्थिक शोषण सवर्ण द्वारा होता देखा जा सकता है।

इसी तरह की मोहनदास नैमिशराय की '**मजूरी**' कहानी में सुमति को उसकी मजदूरी सवर्ण महेश नहीं देता। विधवा सुमति अपने पुत्र के इलाज के लिए अपने किए गए परिश्रम की मजदूरी पाने के लिए बार–बार अपमानित होती है और महेश के पालतू कुत्ते का शिकार बना दी जाती है। यहॉ सवर्ण महेश की कठोरता एवं सुमति की दयनीयता दिखाई गई है। सुमति और उसके पुत्र को न तो पेट भर भोजन मिल पाता है न ही दवाईयाँ। परिश्रम करने पर भी दलितों की स्थिति करुण ही है।

कुसुम मेघवाल की '**मंगली**' कहानी की मंगली भी एक मजदूरिन है। अपने बीमार पति के लिए दवाईयाँ खरीदने के लिए रुपये उसके पास कम हैं। अधिक परिश्रम करने पर भी मजदूरी कम पाने के कारण दलितों के जीवन में ऐसी समस्याएँ जीवनभर आती ही रहती हैं। मंगली दवाईयों के अभाव में पति को खो देती है, उसकी गरीबी को उसकी कमजोरी समझकर ठेकेदार उसका जातीय शोषण करना चाहता है। इस प्रकार

की परिस्थिति पर गुजराती में कहानियाँ नहीं मिलती हैं जहाँ पर नायिका को आर्थिक समस्याओं के कारण पति, बच्चे या स्वयं को संसार छोड़ना पड़ता है।

दलितों को कर्ज़ में रुपये देकर उनका आर्थिक शोषण सवर्णों द्वारा किया जाता रहा है, साथ ही उनकी स्त्रियों का जातीय शोषण करके उनकी गरीबी एवं लाचारी का दुरुपयोग भी सवर्णों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार दलितों की आर्थिक विवशता को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियों में–

रत्नकुमार सांभरिया की '**बात**' कहानी है। सुरती विधवा स्त्री है। बेटे की पढ़ाई के लिए तीन सौ रुपये धींग नामक सवर्ण से उधार लेती है। धींग इसके बदले में उसका जातीय शोषण करना चाहता है, किन्तु सुरती अधिक परिश्रम करके अपनी लाज बचाना चाहती है। यहाँ सुरती का अपने आत्मसम्मान के लिए संघर्ष, आर्थिक समस्याएँ, सवर्ण का अत्याचार दलित महिला का अकेले संघर्ष सुरती को कमजोर नहीं बना पाता।

मोहनदास नैमिशराय की कहानी '**अपना गाँव**' में कबूतरी का पति गाँव के ठाकुर से उधार रुपये लेकर शहर नौकरी करने जाता है। ठाकुर उसके बदले में कबूतरी का जातीय शोषण करना चाहता है। कबूतरी के इन्कार करने पर उसे नग्न करके गाँव में घुमाया जाता है। दलितों की आर्थिक कमजोरी सवर्णों की ताकत बन जाती है। सवर्ण इसी कमजोरी का भरपूर फायदा, उठकार अपनी मनमानी करते हैं।

मोहनदास नैमिशराय की '**कर्ज़**' कहानी में भी यही समस्या देखी जा सकती है। रामप्यारी का बेटा अशोक अपने पिता के तेरहवीं में (मृत्यु के बाद की जाने वाली विधि) कर्ज़ लेकर कोई किया कर्म नहीं करना चाहता। महाजन उसे कर्ज़ के जाल में फँसाना चाहता हैं। अशोक के विद्रोह की सज़ा उसकी माँ–बहन का बलात्कार एवं हत्या करके ली जाती है। यहाँ दलितों द्वारा आर्थिक रुप से सवर्णो के समक्ष आधारित बनाए रखने के लिए दलितों को विवश करने की समस्या देखी जा सकती है।

बी. केशरशिवम् की '**डाईंग डेक्लेरेशन**' कहानी में दलित मणी का पति विवाह के समय सवर्ण से कर्ज़ लेता है। बदले में दिन–रात बेगार करके भी कर्ज़ उतार नहीं पाता। उसका आर्थिक शोषण किया जाता है और गाँव के परंपरागत नियमों के अनुसार उसकी पत्नी का जातीय, शोषण भी किया जाता है। यहॉ '**कर्ज़**', '**अपना गाँव**', '**बात**', और '**डाईंग डेक्लेरेशन**' सभी कहानियों में आर्थिक समस्या और आर्थिक शोषण के साथ जातीय शोषण की समस्या जुड़ी हुई देखी जा सकती है। दलित महिलाओं की गरीबी सवर्ण पुरुषों के लिए सुख का संकेत बन जाती है। गुजराती की अपेक्षा हिन्दी में इस प्रकार की कहानियाँ अधिक मिलती हैं।

आर्थिक समस्याओं के कारण आज दलित गॉव को छोड़कर शहर की ओर रोज़गार करने के लिए पलायन कर रहे हैं। गरीबी उनका पीछा वहाँ भी नहीं छोडती। जो शोषण गॉव में होता था वही शहर में भी होता है। महेश कुमार केशरी '**राज**' की '**कैद**' कहानी का विष्णु पासवन गाँव की गरीबी से तंग आकर रोजगार की तलाश में एक दलाल के हाथों फँस जाता है। वह शहर में बंधुआ मजदूर बन जाता है। वह कुँए से निकला है, किन्तु खाई में चला जाता है। बी. केशरशिवम् की '**पोक**' कहानी का पात्र मथुर अपने पारंपरिक सफाई कार्य को छोड़कर गॉव से शहर आता है। गाँव में काली मजदूरी करके भी उसे अपमानित होना पड़ता था, जबकि शहर में कंधे पर थैला लटकाकर कचरे में से प्लास्टिक, पोलीथीन बेग आदि बीनकर वह अपना गुजारा कम

रुपयों में चलाना चाहता है। '**पोक**' और '**कैद**' कहानी के नायक गाँव से शहर की ओर पलायन रोज़गार के लिए करते हैं जिसमें '**कैद**' का विष्णु और '**पोक**' का मथुर दोनों शहर में स्वाभिमान से जीवन जीने के लिए आते हैं, किन्तु दोनों ही शहर में षड़यंत्र एवं राजनीति का शिकार बनते हैं।

आर्थिक समस्याओं के कारण दलित स्त्रियों को सवर्णों के हाथों या तो बेच दिया जाता है, या वे स्वयं अपना शरीर बेचने पर विवश हो जाती हैं। हिन्दी एवं गुजराती में इस समस्या को केन्द्र में रखकर कई कहानियाँ लिखी गई हैं। अखिलेश कुमार की '**कर्फ्यू**' कहानी की फुलिया कर्फ्यू के समय भूख से बिलखते अपने छोटे–भाई बहनों के लिए भोजन का इंतजाम करने के लिए सवर्ण अधेड़ रसिक के समक्ष समर्पण करती है। तो शैलष कुमार किस्टी की '**कुलदीपक**' कहानी की सवली अपने बीमार बच्चे को बचाने के लिए वेश्या व्यवसाय में जुड़ने के लिए विवश हो जाती है। अपने कुलदीपक को बचाने के लिए सवली अपनी देह का व्यापार करती है, किन्तु वह दीपक बुझ जाता है। कहानी में शहर में दलितों की बस्ती में होने वाले देह व्यापार का चित्रण है। साथ ही इस व्यापार में उसके पति की संमति का भी जिक्र है। प्रेम कपाड़िया की '**हरिजन**' कहानी की परबतिया देवदासी प्रथा से जुड़कर अपना शरीर मंदिर के पुजारियों के समक्ष समर्पित करती है। वसंतलाल परमार की '**एक छालियु दालनी खातर**' (एक कटोरी दाल के लिए) कहानी की नायिका अपने एकमात्र पुत्र को एक कटोरी दाल खिलाने के लिए सवर्ण बावरची के समक्ष समर्पण कर देती है। यहाँ कंकुडी का पात्र कमजोर बन जाता है,। क्योंकि पुत्र के लिए ऐसा बलिदान किसी भी दृष्टि से उचित नहीं दिखाई देता।

डॉ. सी. बी. भारती की '**भूख**' कहानी में आदिवासी समाज के फिरतो के पेट की भूख के लिए विवाहित पुत्री एवं उसके दो बच्चों को बेचना दलितों की विकट आर्थिक समस्या को चित्रित करती है। आदिवासी परिवार की इस समस्या का भरपूर लाभ उठानेवाले सवर्ण किस प्रकार उनका शोषण करते हैं, यह भी दिखाया गया है। इस प्रकार की कहानी हिन्दी एवं गुजराती में मेरे विचार से नहीं लिखी गई हैं। राघवजी माधड़ की '**मेली मथरावटी**' कहानी की गंगा के परिवार की गरीबी का फायदा उठाकर मुखिया उसका जातीय शोषण करता है। यहाँ गरीबी माता–पिता बेटी के सम्मान एवं शोषण के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते, क्योंकि मुखिया के समक्ष विद्रोह करने का मतलब था, भूखों मरना। यहाँ गंगा को बेचा तो नहीं जाता, किन्तु उसे बचाया भी नहीं जाता।

बी. केशरशिवम् की '**मेना**' कहानी की मेना विधवा स्त्री है। वह परिवार का भरण पोषण करने के लिए सब्जी बेचने का कार्य करती है, किन्तु व्यापारी उसका आर्थिक शोषण करता है। बी. केशरशिवम् की '**जोगन**' कहानी की विधवा नायिका वाली अपने बूढ़े ससुर के साथ शहर में ठेला खींचने की मजदूरी करती है, जिस पर सवर्ण व्यापारी कूदृष्टि रखते हैं। मणिलाल न. पटेल की '**हडसेलो**' कहानी में दलित अरुणा के परिवार की आर्थिक समस्या का लाभ सवर्ण अशोक उठाता है। नौकरी दिलवाने के बहाने वह अरुणा का जातीय शोषण करता है। बी. केशरशिवम् की '**कमली**' कहानी की कमली शहर में मजदूरी का कार्य करती है, जहाँ बिजली का करंट लगने से उसकी मृत्यु हो जाती है। आदिवासी कमली गरीबी के कारण गैरजिम्मेदार कोन्ट्रेक्टर की गलती का भोग बनती है। इस कहानी में आदिवासियों का मजदूरी के लिए शहर की ओर पलायन एवं शहर में उनकी स्थिति का चित्रण करती है।

बी. केशरशिवम् की '**रामली**' में भी सफाई कर्मचारी रामली विधवा स्त्री है। गाँव में चारों ओर प्लेग की बीमारी फैली है, फिर भी गरीबी, भुखमरी के कारण अपने नवजात शिशु के दूध के इंतजाम की चिंता उसे है, इसलिए अपनी चिंता किए बिना अपने कर्त्तव्य को प्रामाणिकता से निभाती है और अंत में प्लेग से उसकी मृत्यु हो जाती है। '**रामली**' और '**कमली**' दोनों ही गरीबी एवं आर्थिक समस्याओं के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

इस प्रकार हिन्दी एवं गुजराती की दलित कहानियों में, दलित नारी के जीवन की सबसे बड़ी समस्या '**आर्थिक समस्या**' को कई कहानियों में चित्रित किया गया है। आर्थिक समस्या से जूझती दलित नारी एवं उसका परिवार किस प्रकार की मानसिक, शारीरिक यातनाओं का भोग बनता है, उसे भी देखा जा सकता है।

4.1. (4) जातिगत हीन भावना की समस्या

स्वतंत्र्योत्तर भारत में सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से अनुसूचित जातियों, अनुसुचित जनजातियों, अति पिछड़ी जातियों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, महिलाओं की रक्षार्थ तथा उनके विकास के प्रवधान किए गए हैं। इस हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं का केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा संचालन किया गया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि एक कल्याणकारी राष्ट्र के रुप में समाज के सभी वर्गों, विशेषकर पिछड़े और निर्धन लोगों का चहुंमुखी विकास करना राष्ट्र का उत्तरदायित्व है। हमारा संविधान सबको न्याय, समानता तथा समान अवसरों का अधिकार प्रदान कराता है। भारत के संविधान में दलित जातियों के स्त्री–पुरुषों के शैक्षिक तथा आर्थिक दृष्टि से उत्थान करने और उनकी सामाजिक योग्यताओं को दूर करने के उद्देश्य से उनको आवश्यक सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान करने के उपाय किए गए हैं। इसके लिए या तो कुछ विशेष व्यवस्थाएँ की गई है या फिर नागरिक के रुप में उनके सामान्य अधिकारों पर जोर दिया गया है। मैट्रिक पूर्व मैट्रिक बाद की छात्रवृत्तियां, उच्च शिक्षा के विदेशों में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति, डॉ. आम्बेडकर फांउडेशन, अनुसूचित जनजाति विकास, जनजातीय क्षेत्रों में व्यवसायिक प्रशिक्षण, कम साक्षरता वाले क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति की लड़कियों के लिए शिक्षा, विकास परिसंघ, ग्रामीण अनाज बैंकों की योजना बनाकर चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है।

सरकार से मिलने वाली सहायता एवं स्वयं के परिश्रम के बल पर अल्पसंख्या में दलितों का विकास हुआ है। ये शिक्षित दलित आज प्राईवेट एवं सरकारी नौकरी करने लगे हैं। बैंक, सरकारी कार्यालय, रीसर्च सेन्टर, स्कूल, कॉलेज, व्यापार आदि में अपनी आर्थिक एवं समाजिक स्थिति को मजबूत बनाने वाले शिक्षित दलित अपने ही समाज के लिए आदर्श बन सकते हैं। हमारे दलित समुदाय की यह विडम्बना है कि वह जिसकी बदौलत इतना आगे पढ़ सका है, उसी को विस्मृत करता जा रहा है। किन्तु इनमें से आज अधिकतर दलित उच्च पदों पर पहुँचने के बाद या अधिक धन आ जाने पर अपनी ही जाति के लोगों से या सगे–संबंधियों, मित्रों से संबंध तोड लेते हैं। इसका कारण यह है, कि पदाधिकारी बनने पर वे नहीं चाहते कि गरीब, अशिक्षित, पिछडे लोगों का आना–जाना उनके घर पर रहे और उन्हें देखकर उनकी सोसायटी के सवर्णों को यह पता चले कि वे दलित हैं। समाज में सवर्णों से मिलने वाले मान–सम्मान, प्रतिष्ठा में वे किसी प्रकार की कमी नहीं होने देना चाहते। डॉ. एस.एल परिहार के हृदय

को कितना आघात लगा होगा, उसकी कल्पना हम उन के द्वारा दिए गए इस विचार से समझ सकते है। उन्होंने लिखा–

> **"आज स्वयं दलित समाज द्वारा अम्बेडकर के आदर्शों को अपनाना तो दूर उन्हें याद तक नहीं किया जाता है। दलित समाज के लोग आज सरकारी नौकरियां में उच्च पदों पर बाबा साहब की बदौलत ही बैठे हैं। लेकिन इस समाज से ही नहीं बल्कि अपने परिवार से भी कट गये हैं। वे अपने ड्राइंग रुम में श्री देवी या गोविंदा की तस्वीरें तो दिल खोलकर टांगते हैं लेकिन अम्बेडकर की तस्वीर सिर्फ इसलिए नहीं टांगते कि कहीं कोई सवर्ण मित्र उनके घर आने पर यह न समझ बैठे कि वे अनुसूचित जाति के हैं। ऐसे लोग अकसर अपनी जातियाँ छुपाकर संभ्रांत कोलोनियों मे रहते हैं। इस प्रकार दलित समाज में ही एक ब्राह्मण वर्ग पैदा हो गया है, जो शेष दलितों को अछूत मानता है। यह वर्ग डॉ. अम्बेडकर के एहसान को भूल गया है।"[4]**

ऐसे दलित कई बार अपनी जाति छिपाने के लिए अपनी सरनेम बदल देते हैं, तो कभी झूठ बोलकर अपनी. जाति सवर्ण बता देते हैं। कुछ तो अपने दलित सहकर्मचारियों से बात तक करने से कतराते हैं, कुछ अपने बच्चों से भी अपनी जाति छिपाते हैं। नई पीढ़ी के नौजवान दलित भी अपनी जाति को हीन समझकर अपने भाग्य को कोसते हैं, एवं अपने माता–पिता को दोष देते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो जाति छिपाकर अपनी पुत्री का विवाह सवर्ण युवक से करते हैं। इस विषय पर हिन्दी एवं गुजराती में कहानियाँ लिखी गई हैं, गुजराती में बहुत कम कहानियॉ मिलती हैं, किन्तु हिन्दी में ऐसी कई कहानियाँ हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अंधड़' कहानी का दलित मि. लाल जीवन में कई संघर्षों का सामना करते हुए जिस दूर के संबंधी की सहायता करने पर वे रिसर्च सेन्टर में वैज्ञानिक बनता है, उसी संबंधी से वह संबंध तोड़ लेता है। मि. लाल अपनी जाति इसलिए छिपाता है, क्योंकि वह उच्च सोसायटी के लोगों की दृष्टि में हीन न समझा जाए। अपने बच्चों से भी वह अपनी जाति एवं सगे–संबंधियों को दूर रखता है। जो मि. लाल दलित युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श बन सकता था, वह उस व्यक्ति की मदद कर सकता था, जिसने उसका जीवन सँवारा, किन्तु जातिगत हीन भावना की समस्या उस पर इस कदर हावि हो जाती है, कि वह वर्षों तक अपनी हीन भावना को नहीं दूर कर पाता। अपनी पत्नी सविता के मायके से भी संबंध नहीं रखता। इस विषय में शिवकुमार मिश्र ने लिखा है कि–

> **"अंधड कहानी दलित जाति में पैदा होने से उपजी हीनता ग्रंथि के कारण जाति छिपाकर समाज में सम्भावित जीवन जीने का छद्‌म पालने वाले उन लोगों की मानसिकता पर गहरा कटाक्ष करती है जो इस छद्‌म को वास्तविक मानकर पुराने जीवन की याद तक को गुनाह समझते हैं। सुक्कड़लाल के एस. लाल बने श्री लाल ऐसे लोगों के ही प्रतिनिधि हैं देश के जाने माने वैज्ञानिक बनकर अपने छद्‌म–उच्च मध्यमवर्गीय जीवन की रंगीनियों में वे इतना रम गए हैं कि उस जिन्दगी की याद से भी उन्हें रोमांच होता है, जो कभी उनका हिस्सा थी।"[5]**

बी. केशरशिवम् की **'आँख खुल गई'** कहानी का नायक पढ़–लिखकर उच्च पदाधिकारी बन जाता है, किन्तु जिस बहन ने गरीबी में अपने गहने बेचकर उसकी परीक्षा की फीस भरी थी उसे ही भूल जाता है। वास्तव में वह हाई सोसायटी में जाकर अपनी जाति छिपाकर रहता है, इसलिए गरीब बहन–बहनोई या रिश्तेदारों से कन्नी काट लेता है। ऐसा करके वह अपनी जातिगत हीन भावना से बचना चाहता है, किन्तु अपने कर्त्तव्य को भूलकर **'अंधड़'** के मि. लाल की तरह सवर्णों के मान–सम्मान को पाना चाहता है। दोनों की आँखें तो खुलती हैं, किन्तु वर्षों का समय बीतने के पश्चात।

मोहनदास नैमिशराय की **'सिमटा हुआ आदमी'** कहानी का दलित पात्र सरकारी उच्च पदाधिकारी बनकर भोला जैसे दलित चपरासी से दूरी रखता है और एस. सी एसोसिएशन की मिटिंग में उपस्थिति नहीं होता। वह नहीं चाहता कि उसके प्रमोशन में कोई रुकावट या उसकी छबि बिगड़े जातिगत हीन भावना उसे अपनी ही जाति के सहकर्मचारियों से दूर रखती है, यहाँ दलित उच्च पदाधिकारी के सिमटे हुए व्यक्तित्व को चित्रित किया गया है। सूरजपाल चौहान की **'घाटे का सौदा'** कहानी का डोरीलाल अपने जाति में जन्म लेकर दलित समाज से घृणा करने वाला डोरीलाल से डी. लाला बन जाता है और बाबा साहेब का फोटो घर में रखने से अपनी इज्जत कम समझता है। इस विषय में नारायण राठोड़ का विचार है कि–

> **"दलित समाज के कुछ पढ़े लिखे, अनपढ़ से भी बेकार हैं। उसकी भलाई के बारे में वह तनिक भी नहीं सोचता। ऐसे लोगों की चमड़ी पर चर्बी चढ़ जाती है। वे अपने भूखे माता–पिता की भूख नहीं मिटाते। ऐसे लोग दलित समाज के लिए एक कलंक है। हमारे देश में ऐसे लोग हर कार्यालय में कहीं–न–कहीं नज़र आते हैं।"**[6]

इस कहानी के विषय में जय प्रकाश कर्दम ने लिखा है कि–

> **"'घाटे का सौदा' दलितों की जातीय हीनता बोध की कहानी है।"**[7]

कहानी का पात्र डोरीलाल स्वयं उच्च पदाधिकारी है, किन्तु बेटी का विवाह जाति छिपाकर सवर्ण परिवार के युवक से करता है। बेटी रजनी भी लेक्चरर होकर न चाहते हुए भी पिता की जिद्द के समक्ष हार जाती है। डोरीलाल की जाति सच्चाई जब बाहर आती है, तो बेटी का विवाह संबंध खतरे में पड़ जाता है।

रजत रानी मीनू की **'हम कौन हैं ?'** कहानी नायिका उमा अपनी बेटी का पब्लिक स्कूल में एडमिशन करवाती है, किन्तु सरनेम नहीं लिखती। अज्जू की टीचर रोज उसकी सरनेम पूछती है। उमा अपनी जाति छिपाने के लिए सरनेम नहीं बताती, एक शिक्षित दलित स्त्री नहीं चाहती कि उसकी बेटी को स्कूल में हीन दृष्टि से देखा जाए या सवर्ण बच्चों के द्वारा उसके प्रति अलग व्यवहार किया जाए। उमा की उलझन एवं अज्जू की परेशानी जातिगत हीन भावना की समस्या को लेकर है। गुजराती कहानी में जोसेफ मेकवान की **'रोटलो नज़राइ गयो'** का पात्र रघु अपने स्कूल में अपनी ही कक्षा के सहपाठियों द्वारा अवहेलना, भेदभाव, हीन दृष्टि से देखा जाता है, परिणामस्वरुप रघु के कोमल बालसुलभ ह्रदय पर हीनता के भाव के कारण कई प्रश्न उठते हैं। उसमें और अन्य बच्चों में क्या अंतर हैं ? वह अच्छे कपड़े, अच्छा भोजन, अच्छा स्कूल वेग आदि

क्यों नहीं पा सकता ? सवर्ण सहपाठी उसके साथ अपना नास्ता क्यों नहीं मिल बाँटकर खाते ? उसके साथ कोई क्यों नहीं खेलता ? इस तरह रघु छोटी सी आयु में हीन भावना का शिकार बनता हैं। जिस बालक को बचपन में ही दलित जाति का होने के कारण इतना भेदभाव सहना पडे, उसे जीवन भर कड़वी यादों के रुप में हीनता का बोध करायेगी इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

कावेरी की' '**रिश्वत**' कहानी की नायिका स्वयं शिक्षित नारी है। अपने बेटों को अच्छी शिक्षा देती है, किन्तु नौकरी न मिलने पर बेटा अपने माता–पिता को दोष देता है। शिक्षित युवक नौकरी में मिलने वाली असफलता के लिए अपनी जाति को दोष देता है। दलित युवकों को कैम्पस सिलेक्शन में न लिए जाने पर होने वाली जातिगत हीन भावना को कहानी में देखा जा सकता है। साथ ही वर्तमान समय में माता–पिता अपने शिक्षित बच्चों के रोज़गार के लिए कितने चिंतित हैं, उसका भी चित्रण किया गया है।

'**उपमहाद्वीप**' अजय नावरिया की कहानी का पात्र सिद्धार्थ स्वयं एक सरकारी संस्थान में मैनेजर है। पत्नी कॉलेज में लेक्चरर है। सिद्धार्थ को अधिकारी होने पर भी अपने से छोटे कर्मचारियों द्वारा मान–सम्मान नहीं मिलता। सिद्धार्थ अपनी जाति के छोटे कर्मचारियों से दूरी रखना चाहता है, किन्तु वे बार–बार सिद्धार्थ के पास आकर अपने साथ होने वाले भेद–भाव, एवं अन्याय की शिकायत किया करते हैं। सिद्धार्थ ने इस भेद–भाव को स्वयं गाँव में झेला था, किन्तु शहर में वह सवर्णों से दुश्मनी नहीं करना चाहता था। यहाँ सिद्धार्थ अपने कड़वे अनुभवों की वजह से अपनों से कन्नी काटना चाहता है। जातिगत हीन भावना की समस्या उसे ऐसा करने के लिए विवश करती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की '**भय**' कहानी में दलितों के मन की हीनता–ग्रंथि के चलते छिपाई जाति की पहचान के उघर जाने से उपजा भय है। अपनी दलित होने की पहचान को छिपाए हुए दिनेश सवर्णों की कालोनी में रामप्रसाद तिवारी जैसे ब्राह्मण से पारिवारिक संबंध बनाए हुए वर्षों से रह रहा है। रुढ़ि तथा संस्कारों में ग्रस्त अपनी माँ के इस आग्रह को वह नहीं टाल पाता कि कुल की देवी, माई मदारन की पूजा के लिए वह सूअर के बच्चे की बलि चढ़ा कर उसका गोश्त लाए, ताकि पूजा में उसे प्रसाद के रुप में उपयोग किया जा सके। शिवकुमार मिश्र के अनुसार–

> **"उसका एक आयाम रामप्रसाद के जरिए उसकी असलियत उजागर हो जाने की आशंका से जुड़ा है–जाति की सच्चाई उधर जाने से उपजा भय है, यह किन्तु दूसरे आयाम पर यह भय अनचाहे अपने द्वारा की गई हिंसा से उपजा भय भी है। यह हिंसा उसने माँ के दबाव के चलते की जो उसे गहरे झकझोर देती है उसका संवेदनशील मन बच्चे की चीख को भुला नहीं पाता और ना ही उसकी माँ मादा सुअर की उस मुद्रा को जिसे उसने उससे उसके बच्चे को छीनते समय देखा था। भय के ये दोनों संदर्भ एक दूसरे से गुथकर कहानी में आए हैं और संश्लिष्ट तो बनाते ही हैं, जाति के छिपाने पर उपजे हीनभाव के प्रति लेखक के कटाक्ष तथा अनपेक्षित हिंसा के प्रति उसकी मानवीय संवेदना दोनों को एक साथ**

चित्रात्मक अभिव्यक्ति देने की उसकी रचनात्मक क्षमता को भी उजागर करते हैं।"[8]

राज वाल्मीकि की '**इस समय में**' कहानी का नायक अपनी जाति छिपाकर शहर में अपने पत्नी, पुत्र एवं पुत्री के साथ रहता है। कथानायक नहीं चाहता था, कि उसके बच्चों को जातिगत हीन भावना को झेलना पड़े, इसलिए वह पुत्री मिली को भी नहीं बताता कि वे दलित वाल्मीकि जाति के हैं, जिन्हें सवर्ण हीन समझते हैं। मिली की शिक्षिका जब उसे उसकी जाति की सच्चाई बताती है, उसके बाल मानस पर इसकी प्रतिक्रिया का बखूबी चित्रण लेखक ने किया है। साथ ही युवा पीढ़ी द्वारा इन्टरकास्ट मैरिज को इस समस्या का समाधान बताया गया है।

मेरी दृष्टि में शिक्षित दलित अपनी जाति को छिपाकर, जाति के विषय में झूठ बोलकर या अपनी जाति के सगे–संबंधी, रिश्तेदारों, मित्रों आदि से संबंध तोड़कर यदि प्रगति करना चाहते हैं, तो वे बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। ऐसे शिक्षित दलित तो नई पीढ़ी के लिए आदर्श बनकर उनका मार्गदर्शन करके अपनी जाति के लोगों का हौसला बढ़ा सकते हैं, उन्हें नई दिशा दे सकते है, संघर्ष के लिए शक्ति प्रदान कर सकते हैं। यदि वे स्वयं छिपकर, सिमटकर रहेंगे तो दलितों की जातिगत हीन भावना की समस्या कभी खत्म नहीं होगी, बल्कि बढ़ेगी। आज ज़रुरत है, समस्या का सामना करने की न ही उससे मुँह छिपाने की। गौर करने की बात है कि अधिकतर कहानियों में जातिगत हीनभावना कहानी के पुरुष पात्रों में दिखाई गई है, वे ही अपनी जाति छिपाकर सवर्णों के बीच सवर्ण बनकर रहने में अपनी शान समझते हैं, जबकि नारी पात्र पुरुष पात्रों के विचारों का खण्डन करती हुई दिखाई गई हैं जैसे '**अंधड़**' की 'सविता' '**भय**' की 'माँ' का पात्र, '**घाटे का सौदा**' की 'रजनी'।

गुजराती की दलित कहानियों में जातिगत हीनता का बोध हिन्दी कहानियों के प्रमाण में कम देखने को मिलता है। हिन्दी के कहानीकारों ने वर्तमान समय में, शहरी परिवेश में भी जातिगत हीनता की दलितों की बढ़ती हुई समस्या को अपनी लेखनी द्वारा चित्रित करने की पहल कर दी है।

4.2 परिवेश

हिन्दी की दलित कहानियाँ

आधुनिक कहानी एवं उपन्यास के स्वरुप के निर्माण में परिवेश तत्त्व ने महत्त्वपूर्ण भाग निभाया है। कथासाहित्य को यथार्थ बनाने के लिए परिवेश की भूमिका अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। परिवेश एक ऐसा केन्द्र है, जहाँ रचनाकार ने जिस स्थल–देशकाल को संपूर्णरुप से जाना–पहचाना एवं अनुभव किया है, उन सभी को एकत्र करके इस रुप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है, जिससे की पाठक भी उसी देशकाल, स्थल एवं देश की विशिष्ट सत्ता का परिचय पाते हैं। रचनाकार जिस वास्तविकता का अनुभव स्वयं कर चुका है, वह बड़ी खुबसुरती के साथ अपने पाठकों को भी उसी परिवेश में ले जाकर वही आनंद या उसी वास्तविकता पूर्ण यथार्थ से परिचित करवाता है।

हिन्दी में 'परिवेश' शब्द के पर्याय के रुप में 'वातावरण', 'देशकाल', 'परिदृश्य', जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पाश्चात्य साहित्य में 'परिवेश' से

समानता रखने वाले शब्द हैं Setting, Background, Place, Location, Landscape, Circumstance और Description आदि।

हिन्दी की दलित कहानियों में कहानीकार ने अपनी कहानी में देशकाल, शहरी, ग्रामीण स्थल को ध्यान में रखते हुए परिवेश को चित्रित किया है। जैसे–

जयप्रकाश कर्दम की **'सांग'** कहानी में दलित परिवेश मिलता है। यहाँ स्थल के रुप में ग्रामीण परिवेश, रीतिरिवाज, व्यवसाय, खान–पान आदि से परिवेश प्रकट होता है। जैसे गाँव में संध्या के समय का दृश्य, नीड़ को लौटते पक्षियों के कलरव और खेत जोतकर घर लौटते बैलों के गले में बजती घंटियों की आवाज़, बैलों के खूंटे, भूसे की सानी और चरी, कमेरे, नंगे–अधनंगे बच्चे रेत, मिट्टी उड़ाते, पत्थरों के सिल–बट्टों पर मसाला पीसती, हांडिया छोंकती, चून मांडती स्त्रियाँ, मुखिया की चौपाल, नीम के पेड़, टाट–पट्टी के टुकड़े, ढोलक और नगाड़े, सांग खेल के लिए ग्रामीण लोगों की उमंग, कुल्हाडा, एवं खेत में पानी लगाना, बंध लगाना, मुहाला खोलना, क्यारी बदला आदि प्रकार के परिवेश में रहकर शोषित–पीड़ित पात्रों की समस्या कही गई है। ग्रामीण पुरुष एवं नारी पात्र परंपरागत शोषण को विशेष परिवेश में झेलते हुए दिखाए गए हैं।

डॉ. कुसुम वियोगी की **'अंतिम बयान'** कहानी में ग्रामीण परिवेश मिलता है। गाँव में प्रातःकाल हलकारों द्वारा अपने बैलों को खेतों में ले जाना, पनघट पर पनिहारिनों द्वारा पानी भरना, मजदूरी करने वालों का मजदूरी करने के लिए घर से निकलना, गाय–भैंस के न्यार फूस लाना रकम की ऊनी–दूनी ब्याज बेनामा करना, न्यार–टोली, दशंती, कट्टा, न्यार की गठरी, छप्पर की तीलियां, पुलिस की साईरन बजाती गाड़ियाँ, कुए, लाठियां भांजना, कुए की मुंडेर, नीम का पेड, कऊओं की कांव–कांव, सिपाही, सिविल अस्पताल, आंगन, बीड़ी सुटियाना, सरपंच प्रधान, पोस्टमार्टम, बांछे खिलना, आदि परिवेश में बंधते तत्त्वों में मात्र शोषण ही नहीं किन्तु दलित समाज की विशेषता भी प्रकट होती है। दलितों की दिनचर्या, खान–पान, जीवनशैली, रहनसहन, कार्यव्यापार, समस्या आदि को परिवेश में गूँथ लिया गया है।

सूरजपाल चौहान की **'टिल्लू का पोता'** कहानी में अलीगढ़ जिले के छोटे से गाँव सोनपुर के ग्रामीण परिवेश में गाँव की बगिया वाली प्याऊ, इक्का–गाड़ी, पगडण्डी, जेठ माह की तपती दुपहरी, बगिया की धर्मशाला, थ्रेसर, खेत की मेंड, हुक्का, बाल्टी को रेत से माँजकर साफ करना, आदि से उस गाँव में सवर्णों द्वारा दलितों के प्रति अस्पृश्यता, घृणा एवं ईर्ष्या को लेखक ने बखूबी प्रकट किया है। ग्रामीण बोली का प्रयोग आवश्यकतानुसार ही किया गया है।

सूरजपाल चौहान की **'अंगूरी'** कहानी का परिवेश ग्रामीण क्षेत्र है। कहानी में लेखक ने गाँव में दलितों की दीन–हीन दशा, बेगारी, खेत जोतना, जानवरों को चारा खिलाना, घर–घर जाकर लिपाई–पुताई करना, सवर्णों द्वारा दलित स्त्रियों से की जाने वाली छेडछाड, दलित स्त्रियों के जातीय शोषण, घर के चौके, हँसिया, घर की वाडी, आले में जलते दीये की रोशनी, घर की चौखट आदि परिवेश में अंगूरी की समस्या एवं समस्या के प्रति उसमें रहे साहस को दिखाकर गाँव की दलित स्त्री के नए रुप को उजागर किया है।

सूरजपाल चौहानी की **'घाटे का सौदा'** कहानी का परिवेश शहर का है। लेखक शहर में रहने वाले उच्च पद पर आसीन दलित के हृदय में रहने वाली जातिगत

हीन भावना को प्रकट किया है। जहाँ पॉश काम्लोनी, कोठी, सरकारी दफ्तर, कार, टेलीफोन, बंगला, अंग्रेजी स्कूल, कॉलेज, ड्राइंगरुम, बाबा साहब की तस्वीर, ऑफिस, प्रमोशन के आर्डर की फाइल आदि के साथ आंशिक रुप में लल्लनपुर गाँव की बस्ती के कच्चे घर, तंग गलियाँ, गाँव की स्कूल, छुआछूत से पीडित तमाम साथी और अध्यापक, हीनभाव आदि का वर्णन कर कहानीकार ने दलितों की गाँव एवं शहर के परिवेश में स्थिति, समस्या, एवं सवर्णों के दलितों के प्रति विचारों को वाचा दी है।

सूरजपाल चौहान की **'साजिश'** कहानी में नगर के परिवेश में दलित नत्थू की बेरोजगारी की समस्या, ट्रान्सपोर्ट का धन्धा, बैंक का कर्ज़, सरकारी नौकरी के लिए दी जाने वाली रिश्वत, पिगरी लोन, पिगरी फार्म, हेड क्लर्क, बैंक मैनेजर, सूअर पालने का धन्धा, ट्रेंड चेंज करना, पैतृक धन्धा, जूठन खाना, खानदानी धन्धा, दारु, मुहल्लों की सफाई, टोले–मुहल्ले, गाँवों को टोलों, धरना देना, विशाल जन–समूह, नेतृत्व, नारे लगाना, जिला प्रशासन, पॉलिटिक्स, नेता, आदि परिवेश के माध्यम से शहरों में दलितों के प्रति की जाने वाली साजिश का पर्दाफाश किया है। साथ ही दलितों में आई जागृति को भी उनके कथनों के माध्यम से प्रकट होते दिखाया है।

डॉ.कुसुम वियोगी की **'और वह पढ़ गई'** कहानी में शहर में दलित शिक्षित एवं अशिक्षितों दोनों के परिवेश, रहन–सहन, खान–पान, सोच–विचार, कार्यकलाप आदि को प्रकट किया है। जैसे–ड्राईंग रुम, जमादारिन का झाड़ू–पंज्जर, सिर पर टोकर, मोहल्ला कमाना, स्कूल की ड्रेस, तंबाकू का 320 नं. का पान, पिच्च से थूकना, गालियाँ, तमाशीबीनों, जाति–हीनता, पुश्तैनी धंधा। इसी के साथ लेखक ने वाल्मीकि बस्ती का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है–

> **"हमारी बस्ती तो दारुबाजों की जुआरिओं की बस्ती है। आए दिन सुअरों की टांगें पकड़ पेट में छुरी बुच्च.....रोज–रोज की चीं–चीं, चिल्ल–पों सुन–सुन मेरे कान पक से गये हैं। कौम की दाढ़ में खून जो लग गया है मांस–मट्टी का, झाड़–फूस जलाकर गली के बीचों–बीच सुअरों को भूनना, कितना अजीब–सा जगता है अंकल.........मर्दों की टोली द्वारा हुक्के की गुड़गुडाहट, सारा दिन चिलम के धंए में फूंक देना..... ।"**[९]

राजेश कुमार बौद्ध की **'आतंक'** कहानी में एक ऐसे गाँव के परिवेश को लिया गया है, जहाँ दलितों पर विशेषतः दलित स्त्रियों पर सवर्णों के अमानुषिक अत्याचार को प्रस्तुत किया है। गाँव में ठाकुरों का बोल–बाला, बाडीगार्ड, बन्दूक, लाठी, पुलिस थाने में भी ठाकुरों की अधिकता, दबंग ठाकुरों के अत्याचार एवं दबदबे। सूरज की लालिमा, निर्वस्त्र राखी, मार–पीट, बलात्कार, कैद, भयभीत गाँववासी, अमानवीय यातनाएँ, तडपना, कराहना, अत्याचार, थाना प्रभारी, पंचनामा, पोस्टमार्टम हाऊस आदि परिवेश में दलित नारी की करुण दशा, एवं सवर्णों के अत्याचार को दिखाया गया है।

कालीचरण प्रेमी **'उसका फैसला'** में दलित महाशय जी के रुप में लेखक ने दलित अधैड़ पुरुष की छबी को हमारे समक्ष उपस्थित किया है। जैसे–रंग गेहुंआ, सिरके आधेबा सफेद और आधे काले, अधकचरी दाढ़ी, लम्बा, पतला, शरीर गाल अन्दर को पिचके हुए, पीले पड़ गए दाँत, एक अदद चीकट कमीज, एक मटमैली धोती, घर के नाम पर एक कच्चा कोठरा आदि। गाँव के रस्म–रिवाजों, ब्याह, दहेज के सामान में एक

निवाड का पलंग, साइकिल, संदूक, टोकरी, परात, बर्तन–भाँडे आदि। घर में भैसों का न्यार–पानी का कार्य, ताश खेल, जंगल, गालियॉ, दारु, पारिवारिक शोषण, पंचायत, प्रधान, कुँए वाले चबूतरे आदि से दलित स्त्री के सामाजिक, पारिवारिक एवं सवर्णों द्वारा होते शोषण को शब्दबद्ध किया गया है। गाँव में पुरुष प्रधान समाज में पंचायत द्वारा एक तरफे फैसले, अन्याय को दिखाया गया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी **'बकरी के दो बच्चे'** में कहानीकार ने गाँव के परिवेश का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है–

> **"सर्दभरी जनवरी का वर्णन उन्मैष। बन्द आसमान। ठहरी धरती। सहमा परिवेश। घना कोहरा। कोहरे की श्वेत चादर ने सूमूचे गाँव को ढाँप लिया हो जैसे। सेही का भी सिर सिहरा देने वाले जाड़े से कँपकँपाते, घूजते, ठिठुरते लोग। लोग–बाग मिन्नतें मनाये कि कोहरा छँटे और वे अपने काम–धन्धे पर चले जाएँ।"**10

दलितों के कच्चे घर, सवर्णों की आसमान बतियाती हवेली, पक्का चबूतरा, दलितों का कच्चा चबूतरा, दलितों का पशुप्रेम, सवर्णों की ईर्ष्या, घृणा, चूल्हे में उपले जलाना, धुआँ, आगं तापना, भूख की भभूकी, छींके पर बाजरे की बासी रोटियाँ, अंगारा, कुरकुरी रोटी को कुटुर–कुटुर चबाना, बकरी का ब्याना, वेदना भरी मिमियाहट, छप्पर, दलपत का घुटनों में सिर खोंसकर बैठना, बकरी के मुर्दा बच्चे, हुक्का गुडगुडाना, तमाकू की थैली, पाँवों में कड़ियाँ, हाथ में कड़ले, गले में हाँसुली, गाँव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, गाँव में बस स्टेण्ड पर पीपल का एक रुख, टेम्पो, दारोगा का चेम्बर, थाना–कचहरी, सफाई कर्मचारियों की युनियन हथकड़ी, एफ.आई.आर दर्ज कराना, गिरफ्तारी, खूँटी से टंगी बन्दूक, दो फीते वाला हवलदार आदि।

सूरजपाल चौहान की **'बदबू'** कहानी में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों परिवेश दोनों में दलितों के रहन–सहन, खान–पान, दीनचर्या, काम–काज आदि को देखा जा सकता है। गाँव में दलित परिवार में कन्या शिक्षा की एहमियत, इंटर–कॉलेज की परीक्षा पास करने पर दलित युवती संतोष की स्थिति, उच्चशिक्षा से दलित युवतियों को वंचित रखने के पीछे दलितों के तर्क–वितर्क, दलितों की खेत मजदूरी, गाय, भैंस, बकरियों का पालन, रिश्तेदारों की परंपरागत विचारधारा, दिल्ली में एम.सी.डी. सफाई कर्मचारी, त्रिलोकपुरी व खिचड़ीपुर के बीच बनी झोंपड़–पट्टी, शंकरपुर व लक्ष्मीपुर के इलाके में मोहल्ले कमाने का कार्य, मयूर विहार के क्वार्टरों में झाडू–पोंछा। खुड्डी पालन, गंदे नाले में सूअरों का लोट मचाना, उनका चिंचियान, झाडू–पंजे से पाखानों से मल–मूत्र सँकेलना, मल–मूत्र को टोकरी में सिर पर उठाना, पारिवारिक अत्याचार लेखक दिल्ली में मैला ढोने एवं साफ करने के दृश्य को इस प्रकार चित्रित करते हैं।

> **"...........कुछ देर बाद अन्दर से बाल्टी भरकर फेंके गए पानी के साथ गंदगी का रेला पाखाने के पिछवाड़े से बहकर सास के कदमों के पास आ गिरा। मल–मूत्र से मिले पानी के छीटों से सास के पैर सन गए थे। संतोष थोड़ी दूर हटकर खड़ी थी, लेकिन पानी का रेला इतना तेज था कि कुछ छींटे उसकी साड़ी पर आ गिरे। सास ने संतोष को आवाज़ देते हुए कहा कि वह पानी से मल निकालकर जल्दी टोकरे में रखे।.......गंदगी**

और मल से टोकरा बजबजा रहा था और उस पर असंख्य मक्खियाँ भिन–भिना रही थीं।"11

इन वर्णनों द्वारा कहानी में कहानीकार ने ऐसे परिवेश का शब्दबद्ध किया है, जो जीवंत बनकर हमारे समक्ष उभरकर आ जाता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'अम्मा'** कहानी में शहर में सफाई कार्य करने वाली दलित स्त्रियों की दीनचर्या, गरीबी, परंपरागत कार्य करने की विवशता को दिखाया गया है। सुबह–सबेरे हाथ में झाडू–कनस्तर थामे हुए गली–मुहल्लों में सफाई करती स्त्रियाँ। लेखक ने बाकायदा इस कार्य के लिए बहुओं को सास द्वारा दी जाने वाली ट्रेनिंग को इस प्रकार प्रकट किया है–

> **"कैसे दरवाजे पर पहुँचकर आवाज देना है। कैसे टट्टी में घुसना है, कैसे पानी डालना है। फिर झाडू के कितने हाथ दाएँ, कितने बाएँ चलाने हैं। किस घर में किसे कैसे और कितनी बात करनी है। घर–आँगन में कितनी दूर तक जाना है। आँगन में पड़ी चीज को नहीं छूना है। कोई चाय पानी दे तो कप या गिलास वापस कहाँ रखना है। हरेक ठिकाने में आँगन के किसी कोने, आले या छोटे–मोटे पेड़ की किसी टहनी पर एक आध कप या गिलास सास ने सँभालकर रखे थे। जो वक्त–ज़रुरत पर काम आते थे।"**12

दलित पर कर्ज़ा, सूद चुकान, दलित स्त्रियों का जातीय शोषण, ठिकाना को बेचना–खरीदना, गालियाँ, नगरपालिका में रिश्वत लेना, बेरोजगारी, अनमेल विवाह, दलित स्त्री का स्वाभिमान, आदि को प्रस्तुत करके कहानीकार ने शहर में दलित समाज के परिवेश की चर्चा की है।

ओम प्रकाश वाल्मीकि की **'अंधड़'** कहानी में उच्च शिक्षित दलित नायक राजधानी की पॉश कॉलोनी के शानदार फ्लेट में रहता हैं। बच्चे अंग्रेजी पब्लिक स्कूल में पढ़ते हैं, किन्तु यहाँ तक पहुँचने के लिए वह जिस गाँव में पला बढ़ा था, पढ़ा था वहाँ का परिवेश कुछ इस प्रकार का था जैसे–घर में ही सुअर–बाड़ा, तीस–चालीस सुअर, सूअरों की ची–चाहट, छावनी की गाड़ी में गोश्त लादकर मेस में पहुँचाना, मक्खियों की भिनभिनाहट, बूचडखाना, मारना, दूणना, साफ–सफाई करना, धोना, काट–कूट करके छोटे टुकडों में काटना, जिस्म से सुअर के गोश्त की गंध आना, सहपाठी द्वारा 'खटीक' कहकर चिढ़ाना आदि। शहर में मान–सम्मान औपचारिकता, भ्रमजाल, जातिगत हीनभावना, जाति छीपाना, अतीत से दूर भागना एवं उसे भूलाना, अकेला हो जाना, सामाजिक सोच और मान्यताओं से पीडित होना, झूठी जिंदगी को सच मानना आदि के माध्यम से नगरीय परिवेश मे दलितों की मानसिक स्थिति का आलेखन मिलता है।

कावेरी की **'रिश्वत'** कहानी वर्तमान समय में नगरीय परिवेश में शिक्षित बेरोज़गार दलित समाज की वेदना को वाचा दी गई है। दलित जीवन वर्तमान समय के विकट प्रश्नों का निरुपण किया गया है, जैसे : आरक्षण का व्यंग्यबाण, कैम्पस सलैक्शन में जातिगत भेदभाव, भाई–भतीजावाद, योग्यता का सही माप न होना, रिश्वत, दलाल, ऊपरी कमाई, संयुक्त परिवार का भार, प्रतियोगिता, साक्षात्कार, मंत्री और विधायक की सिफारिश, कम्पीटीशन फेस करना, बिना पैरवी और रिश्वत के नौकरी का सपना बन

जाना, नामांकन करवाना, नौकरी की चिंता में नींद हराम होना, परिवार में विद्रोह, मानसिक डिप्रेशन, जीवन बीमा का सहारा आदि।

अनिता भारती की **'नई धार'** कहानी में दलितों के प्रति उच्च वर्ण के शिक्षित लोग कैसा भेदभाव रखते हैं और अपने से निम्न समझकर किस प्रकार उनकी अवहेलना करते हैं, उसका निरुपण समग्र परिवेश द्वारा किया गया है। जैसे– दलित भेदभाव विरोधी समिति की स्थापना, दलितों सरेआम हत्या का विरोध, दलित ग्रुप, शिक्षक, प्रोफेसर, बैंक ऑफिसर, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता आदि दलितों का संगठन, गाँव के गुंडा तत्त्व, बाबा साहब का नाम लेकर गरीब भोली, मासूम और भावुक दलित जनता को राजनैतिक पिछलग्गुओं द्वारा छला जाना, दलित आंदोलन में छल–कपट और अवसरवाद की विकृत परिपाटी, जातिविहीन समाज की कल्पना बर्बरता पूर्वक पुलिस दमन, महिला संगठन, मानव अधिकारवादी संगठन, आदिवासियों अल्पसंख्यकों के अधिकारों की लड़ाई में शिरकत, प्रेस कवर, प्रगतिशील डेमोक्रैटिक राइट थिंकिग फोरम, मीडियाकर्मी इतिहासकार, वकील आदि।

डॉ.पूरनसिंह की **'यूज एन्ड थ्रो'** कहानी में गाँवों एवं शहरों में दलित समाज के एक ऐसे परिवेश का देखा जा सकता है, जहाँ सवर्णों द्वारा दलितों का उपयोग करके उन्हें फेंक दिया जाता है। ग्रामीण परिवेश दलितों को सवर्णो के मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध, चमारों का अलग मंदिर, आर्थिक दंड दिया जाना, ब्राह्मणों के जूते में जबरन पानी पीने का दंड, असहनीय पीड़ा देना, दहशत फैलाना, सम्प्रदायिक झगड़ों में दलितों का उपयोग करना धर्म के नाम पर दलितों का शोषण, झूठ तथा ढ़ोंग के सहारे लोगों को धोखा देना। शहरी परिवेश में जैसे दुर्गावाहिनी संगठन, मंदिर–मस्जिद के झगड़े, लवमैरिज, सवर्ण अधिकारियों द्वारा दलित लोगों को यूज करना आदि।

राज वाल्मीकि की **'क्रान्ति'** कहानी का परिवेश दिल्ली की एक स्लम बस्ती का है जहाँ पर दलित सामज के वाल्मीकि समुदाय के लोग शैक्षिक रुप से बहुत पिछड़े हुए हैं। कहानी में दलित समाज का परिवेश इस प्रकार का है।– दलितों में जागरुकता की कमी, अज्ञान, पितृसत्तात्मक समाज, स्त्रियों को उनके अधिकारों से वंचित रखना, शराब का नशा, अन्य महिलाओं से अवैध संबंध, लड़ाई–झगड़े, अंध विश्वास, फिजूल खर्चे, लड़का–लड़की में भेदभाव करना आदि। इसी के साथ इससे मुक्ति के लिए दलित समुदाय के शिक्षित वर्ग द्वारा सोशल वर्क से जुड़कर दलितों में शिक्षा के प्रति जागरुकता, स्लम बस्ती का सर्वे करना, जुड़कर दलितों में शिक्षा के प्रति जागरुकता, स्लम बस्ती का सर्वे करना, उत्थान कार्य करना सरकार का सफाई कर्मचारी के बारे में 1993 कर एक्ट जिसमें मल ढोने की प्रथा को गैरकानूनी बताकर उस पर प्रतिबंध लगाया गया है, पुनर्वास योजना, सीनियर सिटीजन की सुविधाएँ जगया गया है, पुनर्वास योजना, सीनियर सिटीजन की सुविधाएँ दिलवाना, सरकार की स्कीमों का लाभ उठाना, उन्हें स्वतंत्रता, समता, लैंगिक समानता, बंधुता, आत्मसम्मान का पाठ पढ़ाकर जागृति की क्रान्ति लाना आदि देखा जा सकता है।

जय प्रकाश कर्दम की **'सूरज'** कहानी का परिवेश शहरी है, जहाँ पर गैर दलितों द्वारा दलित छात्र–छात्रओं को मानसिक एवं शारीरिक यातनाएँ दी जाती थीं। रेगिंग के बहाने उन्हें इतना उत्पीड़ित किया जाता था, कि वे आत्महत्या कर लें या, पढ़ाई छोड़कर भविष्य चौपट कर लें। दलित छात्रों का मनोबल तोड़कर उनसे स्वाभिमान

पूर्ण जीवन का अधिकार छीनकर, उन्हें सामाजिक सजगता, सक्रियता और साहसिकता से दूर रखने का षड़यंत्र न रचा जाता है। और सफल न होने पर दलित छात्र की हत्या कर दी जाति है। यहाँ आधुनिक युग में दलित नगरीय परिवेश में भी शोषण मुक्त जीवन जीने के लिए संघर्षरत देखे जा सकते हैं।

डॉ.रामसिंह यादव की **'एक दलित लड़की'** कहानी में दलित लक्ष्मी का जातीय शोषण उसके ही विभागाध्यक्ष द्वारा किया जाता है। इससे उच्च शिक्षण संस्थाओं में होने वाले अन्यायपूर्ण परिवेश पर प्रकाश डाला गया है।

अमर स्नेह की **'सनातनी'** कहानी में एक ऐसे गाँव का परिवेश दिखाया गया है, जहाँ सवर्ण बच्चें पाठशाला में मुहूर्त दिखवाकर प्रवेश लिया करते थे। नई पोशाक पहनाकर ढोल–नफीरी के साथ बच्चे को पूरे कस्बे में घुमाकर पाठशाला भेजा जाता था। सवर्णों की पाठशाला में दलित बच्चों को प्रवेश नहीं दिया जाता था। दलित महिलाओं का वहाँ नाली साफ करना, स्कूल की साफ–साफाई, मोहल्ले की साफ सफाई किया करती थीं किंतु–

> **"चन्द्रो के जाने के बाद गुरुजी ने पानी भरे लौटे में गंगाजल की कुछ बून्दे टपकाई और मंत्रोच्चार के साथ पूरे स्कूल में छींटे मार के रोज की तरह फिर से शुरु कर दिया।"**[13]

डॉ. सुशला टाकभौरे की **'टूटता वहम'** कहानी नागपुर शहर की शिक्षण संस्थाओं जैसे स्कूल एवं कॉलेज के शिक्षित परिवेश में शिक्षकों, शिक्षिकाओं, प्राध्यापकों, व्यवस्थापकों आदि औपचारिक तौर पर दलितों से भेद–भाव नहीं रखते जैसे मिलजुलकर सब साथ खाना खाते, विद्यार्थी सम्मान देते, नाश्ता एक प्लेट में मिलकर खाते, खाने की चींजें उनसे परोसने को कहते, किन्तु दूसरी ओर उनकी जाति का उल्लेख बार–बार व्यवस्थापक द्वारा किया जाना, उन्हें बार–बार जाति की याद दिलाना, उनके घर के भोजन का बहिष्कार करना, उनके बगल में या साथ में जमीन या घर न खरीदना उनके बनावटी उदार, मानवतावादी, विशाल दृष्टिकोण, सहजता एवं अपनेपन की झूठी पोल को खोल देता है। ऐसे परिवेश में पढ़े–लिखे वर्ग में भी दलितों को उनके कर्म एवं व्यवहार से नहीं जाति के कारण निम्न समझा जाता है। उन्हें अपने बराबर का दर्जा नहीं देकर उनके उन्हें सुनहरे जाल के धोखे में बड़े प्यार से भरमाया जाता है।

डॉ.सुशीला टाकभौरे की **'सिलिया'** कहानी मध्यप्रदेश के एक गॉव के परिवेश की है। जहाँ कन्या शिक्षा बहुत कम पाई जाती है। गाँव में दलित सवर्णों के कुएँ की रस्सी–बाल्टी नहीं छू सकते थे, प्यास लगने पर भी सवर्ण के कुएँ से पानी नहीं माँग सकते थे। नायिका के अनुसार

> **"कुत्ता–बिल्ली उस घर में बे–रोकटोक आ–जा रहे थे पर दहलीज पर ही उसे हाथ के इशारे से रोक दिया गया था। इस व्यवस्था को मिटाने के लिए क्या कुछ भी नहीं हो सकता ?...क्या जीवन भर ऐसे ही अमानवीय दु:ख भोगने पड़ेंगे ? कदम–कदम पर अपमान के घूंट पीने पड़ेगे।"**[14]

यहाँ हीनता और दीनता का भाव छोड़कर दलित स्वयं अपनी प्रगति एवं आत्मसम्मान के लिए सजग होते हैं एवं विशाल जनसमूह के विचारों में परिवर्तन लाने में सफलता पा सकते हैं।

रजत रानी 'मीनू' की **'सुनीता'** कहानी और डॉ.कुसुम मेघवाल की **'मंगली'** कहानी में शहर में मजदूरी करके अपना जीवनयापन करने वाले मजदूरों की बस्ती का परिवेश देखा जा सकता है। रोज मजदूरी करके रोज खाने वाले मजदूर वर्ग के पास बीमारी के समय दवाईयाँ खरीदना एक विकट समस्या बन जाती है। घर में दो चार बर्तन और टूटी झोंपड़ी में ही वे अपना जीवन व्यतीत करने पर विवश हैं। यहाँ तक की मृत्यु के समय उनके दाह–संस्कार के लिए रुपये न होने पर कई बार बड़े व्यक्ति को भी मिट्टी में गाड़ने की स्थिति भी आती थी। कभी चंदा इकट्ठा करके दाह–संस्कार किया जाता है। गरीबी से बड़ी कोई दुःख नहीं होता, तभी तो मंगली पति की मृत्यु के तीसरे दिन लम्बा घूंघट काढ़कर मजदूरी करने चली जाती है। ठेकेदार उसकी गरीबी और मजबूरी का ही लाभ लेकर उसका जातीय शोषण करना चाहता है।

कावेरी की **'सुमंगली'** कहानी में शहर में दैनिक मजदूरी करके जीने वाल गरीब मजदूर वर्ग की बस्ती को परिवेश के रुप में लिया गया है। ठेकेदार यहाँ मजदूरों का आर्थिक शोषण तो करता ही है, बाल मजदूरी भी करता है। साथ ही नाबालिग अनाथ लड़की का जातीय शोषण करता है। इस पर दुःखना की माँ कहती है

> **"......हम गरीबों का जन्म ही इसलिए हुआ है। हमारी मेहनत से अट्टालिकाएँ तैयार होती हैं और उसके पुरस्कार के बदले में हमारे शरीर को रौंदा जाता है।"**[15]

कहानी में भयावनी काली रात, मूसलाधार वर्षा, दिल दहला देने वाली कडकडाती बिजली, अनाथ लड़की, खुले प्रकृति के आंगन में कथरी बिछाकर सोना, झोली–गठरी की गृहस्थी, नाजायज औलाद को जन्म देने की पीड़ा झेलती दलित स्त्री, दवाई न मिले पर मृत्यु मुँह में जाता हुआ छोटा बच्चा, रोती, बीलखती माँ करुण, क्रन्दन, सारे सपनों का चकनाचूर हो मिट्टी में मिलना, एकाकी जीवन जीने की विवशता एवं पशु को सच्चे साथी के रुप में चित्रित किया गया है।

रजत रानी 'मीनू' की **'सुनीता'** कहानी में एक ऐसे अम्बेडकरवाद और बौद्ध को लिया गया है जो पुराने संस्कार को आधुनिक युग में भी लेकर चलते हैं। जैसे बेटे के जन्म पर खुशी एवं मिठाइयॉ. बँटती दावतें दी जाती हैं और बेटी के जन्म पर मातम छा जाता है, उपेक्षा पूर्ण व्यवहार किया जाता है। बेटे को वंश चलाने वाला कहकर उसका विशेष ध्यान दिया जाता है, जबकि बेटी को घर के कार्य के बोझ तले दबा दिया जाता है। दलित युवती होने पर समाज में दलितों एवं गाँव में सवर्णों द्वारा कन्या शिक्षा का विरोध, बालविवाह की जल्दी, अनमेल विवाह का चलन, ताने मारना, दलितों की स्थिति एवं व्यवसाय में आज़ादी के बाद भी कोई परिवर्तन न आना, पुश्तैनी धंधा में फँसे दलित, दहेज, आर्थिक दशा खराब होना, सवर्णों की भूखी निगाहें, आरक्षण कोटे से लाभ, दलित जन हिताय, संगठन बनना, गाँव का आधुनिकीकरण, पुश्तैनी रुढ़िगत सोच, पुरुष अहम् और मनुवादी व्यवस्था की दी गई हीन भावना के दुर्ग का ढ़हना आदि समय एवं संघर्ष बाद के आए बदलाव के परिवेश को दिखाता है।

रत्नकुमार सांभरिया की **'फुलवा'** कहानी में गाँव की दलित फुलवा का बेटा शहर की पॉश कॉलोनी में एक बड़ी सी कोठी में रहता है। उसके घर में संगमरमर की रसोई, कीमती बर्तन, कीमती वस्तुएँ, सुख–सुविधा की तमाम चीज़ें उपलब्ध हैं। ऐसे परिवेश में गाँव के ज़मीदार एवं बनिये, बामन भी न रहते हों। जबकि उसी शहर में गाँव के पंडित का परिवार दरिद्र अवस्था में जीता है जिनके पास न ढँग का घर था, न ही घर में दरवाजा, न बिस्तर, न भोजन की सामग्री, एक कोने में बकरी, गेट के पास कुत्ता बाँधा था, वह भी बीमार एंव खाँसने वाला, बकरी के पेशाब की गँध, कुत्ते की उल्टी आद से पंडिताइन के घर के परिवेश एवं वातावरण की तुलना दलित महिला फुलवा से की जा सकती है।

डॉ.कुसुम मेघवाल की **'बीती रात अंधेरी'** कहानी में खेतीहर मजदूर जो सदियों के कर्ज तले पिसते चले आ रहे हैं उनके भयंकर सामाजिक शोषण चक्र को परिवेश में देखा जा सकता है। साथ ही खान–पान में ज्वार की मोटी–मोटी अकड़ी हुई रोटी, छास के लिए भी तरसना, पनीली दाल, प्याज या मिर्च के साथ गले बतारना। सवर्णों के व्यंग्य बाणों की बौछार, दाम्पत्य संबंधों पर भी मर्मातक प्रहार करना, सवर्णों की ढोर चराना, सामर्थ्यवान रुढ़ सामाजिक परम्पराओं की आड़ में आर्थिक शोषण का कूर चक्र, श्रमिकों के जीवन की सारी घड़ियाँ बन्धक रख लेना, शहर में भी सिर छुपाने को फूस की छत भी न नसीब होना एवं नायक के घर के परिवेश का वर्णन कहानीकार ने इस प्रकार किया है जैसे–

> **"बीसियों बरसातों की मार खाकर जरा–जर्जर वृद्ध की कमर की तरह झुक आयी गोबर पुती मिट्टी की दीवारें ढिबरी के मंद प्रकाश में उसे और भी बीमार लगने लगीं। जाने किस बरसात में दम तोड़ दें इस बात का कोई ठिकाना नहीं। खपरेलों का भार और वर्षा की मार सहकर बांस–बल्लियाँ टूट चली थीं और चूल्हे का धुंआ पर्त दर पर्त जमता हुआ उन पर कालिख की मोटी परत बनकर चढ़ गया था।"**[16]

मेहनदास नैमिशराय की **'कर्ज़'** कहानी में सुरजपुर नामक गाँव के परिवेश में दलित की मृत्यु पर प्रकृति भी शोक में व्याकुल दृष्टिगत होती है। जैसे– अंधकार के सैलाब में डूबा गाँव, श्मशान जैसी नीरवता, कालिम की ओढ़नी ओढ धरती का गहरी निद्रा में सोना, चाँद–सितारों की उदासी आदि। झोंपड़ी में टिम टिमाते हुए मिट्टी के दीपक, अँधेरी रात में दहशत का साया, दलितों को कर्ज़ की ब्याज के ऐवजी में महाजन के खेत में काम करना, बदले में जूठन एवं फटे–पुराने कपड़े मिलना, गाँव के लोगों द्वारा मृत्यु के बाद तेरहवीं करने पर बल देना, पुराने रीति–रिवाज़ों को जबरन सम्पन्न करने के प्रयास, डॉक्टरों को छोड़ साधु–संतों की शरण, राख और भभूत की चुटकी में विश्वास, गॉव में दलितों को शहर की तरह हक और असूल पर न चलने देना, सर्वत्र दहशत, खून जैसी लाली, दीवारों से घिरी हवेली जो भुतहाखाने जैसी थी, वासना के भूखे भड़ियों द्वारा अनगिनत दलित अबलाओं की इज्जत लूटना, कानून के रक्षकों द्वारा धनवानों की रक्षा करना, खर्चीली अदालतें आदि वर्णनों से उस परिवेश की यथार्थता स्पष्ट होती है।

उमेश कुमार सिंह की कहानी **'पहली रात का अंत'** में पृथ्वीपुर नामक गाँव में एक ओर जमींदार के राजाओं जैसे ठाट–बाट एवं राजमहल जैसी हवेली, बाग, जमीन,

शानोशौकत तो दूसरी ओर दलितों की दयनीय दशा। गाँव के रीति रिवाज़ जैसे– शादी के समय ढ़ोल–तासे बजना, बाजे वालों के साथ एक लड़कों का स्त्री वेश में नाच करना, स्वांग, आल्हा या होली पर मंडलियों को गाना–बजाना, मंगल गीत गाना, ठाकुर को सीस नवाना, बदले में कुर्त्ता–धोती, रुपये मिलना, कुत्ते की झोली फैलाकर ठाकुर से सगुन लेना, रात के समय झींगुरों, मंजीरों का संगीत गूँजना, चमारों के मुहल्ले में दुल्हे को घोड़े पर बैठकर बारात चढ़ाने की इज़ाजत सवर्णों से न मिलना, बड़ी–बूढ़ी औरतों का विवाह के अवसर पर गाली भरे–गीत गाना शगुन माना जाना, अनमेल विवाह, बाल विवाह, सियारों के बोलने की आवाज़, हवेली में भव्य और आलीशान कमरा, शानो–शोकत, सबसे बड़ी बात उस गाँव में पुश्त–दर–पुश्त सवर्णों द्वारा दलितों की नई–नवेली दुल्हन को पहली रात में किया जाने वाला जातीय शोषण उस गाँव के परिवेश में दलितों की स्थिति एवं करुणता को प्रस्तुत करते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की **'बात'** कहानी में दलित विधवा बेटे को पढ़ाने स्कूल भेजती है, जहाँ राजनीति की शिकार स्कूल की कुछ कक्षाएँ सर्दी, गर्मी, बरसात बरामदों में ही लगती थी। द्रोणाचार्य से भी कठोर गुरु, एवं स्कूल का वर्णन कुछ इस प्रकार है–

> **"स्कूल में आस पड़ोस के गाँवों के अध्यापकों की धाक थी। स्कूल मायने आंगन में बिछी खटिया। आधा स्टाफ दिनभर अपने खेत–खलियानों, निजी कामों और ठोर डंगरों में खटत। स्टाफ रुम में ताशें बजतीं। गप्पे उठतीं। ठहाके पटाखें से फूटते राजनीति की चौसर बिछी रहती।"** [17]

दलित स्त्रियों के कानों की लवों में नीम की सींके, नाक में चांदी का कांटा गले में काला डोरा, हाथों में रबड़ की चूडियाँ, नंगे पाँव, लंबा घूंघट उनके रहन–सहन को व्यक्त करता है। तो स्कूल यातना शिविर के रुप में हमारे समक्ष आती है।

विजय कांत की **'मरीधार'** कहानी में बांस और बबूल से घिरे गाँव में एक मात्र दलित के घर सुअर बाड़ा है वह गाँव के सभी ठाकुरों का मैला ढोता है। सूम, डगरा, डाला, दौरा, मौनी, बीयन, मोर–मुकुट और सिकड़ी जैसे बांस के बनाई जाने वाली वस्तुएँ दलितों की पुश्तैनी कारीगरी थी, किन्तु सवर्ण उन्हें मैला ढोने के लिए बाध्य करते इसलिए सूअर मार दिए गए, हुनर खाक कर दिए गए। गिद्ध मरीधार के आखिरी छोर पर जहॉ मरे हुए जानवर फेंके जाते हैं, जानवरों की लाशें खसोटते विकराल गिद्धों की किटकिटाहट, मांस की बदबू, अस्थि–पंजरों का ढेर, गिद्ध–कुत्तों के नोच–खसोट से सिहरती और जानवरों की लाशों से बजबजाती मुर्दघट्टी आदि मरीधार के परिवेश हो प्रस्तुत करता है।

राज वाल्मीकि की **'इस समय में'** कहानी में शहर में रह रहे इक्कीसवीं सदी को दलित युवा पीढ़ी की विचारधारा, महत्त्वाकांक्षा, रहन–सहन, ऐशो–आराम की ख्वाहिश, मोबाइल प्रेम, एडवांस युवा पीढ़ी, जागरुक, कैरियर के प्रति सजग, जाति के जंजाल से मुक्ति के रुप में इन्टरकास्ट मैरिज में विश्वास, साथ ही जाति के टाइटल को लेकर स्कूल में भेदभाव पूर्ण वातावरण को परिवेश के रुप में देखा जा सकता है।

महेश कुमार केशरी 'राज' की **'कैद'** कहानी में ईंट के भट्ठे में बंधुआ मजदूरों की दशा एवं स्थिति को परिवेश को दिलावर खान के क्रूर व्यवहार, अत्याचार, शोषण, बर्बरता, वीभत्सता, कैदखाने में कैदी सी स्थिति। गाँव में भूख से बिलबिलाते बच्चे, इसके लिए कौन जिम्मेदार है एवं किसानों की स्थिति एवं परिवेशगत विवशता को लेखक ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

> **"अब गाँव में कुच्छो नहीं रह गया है। तुम लोग आए दिन अखबारों में पढ़ते–सुनते हो कि अब खेती–किसानी में कुछ रह नहीं गया है। नहीं तो रोज़–रोज़ अखबार में इतने किसानों की आत्महत्या की खबरें पढ़ने को काहे को मिलतीं। सरकार अनाज के दाम बढ़ा नहीं रही है। ऊपर से खाद–बीज का भाव भी आसमान छूने लगा है। पानी–बारिश का भी कुच्छे ठिकाना नहीं। हुआ–हुआ नहीं हुआ। अब किसान क्या करें। महाजन से सूद– ब्याज पर पैसा न ले तो और क्या करे। मर–मरके खेती करने का परिणाम क्या होता है। खेती करो लेकिन अनाज़ का दाम ठीक–ठीक नहीं मिलेगा। सरकार कहती है, भारत को नए युग में ले जाएँगे। भारत देश डेवलप होगा, सोचिए जरा आप लोग जहाँ खेती–किसानी का ई हाल है। और इस देश में जहां सत्तर प्रतिशत लोगों का पेशा ही खेती है तो किसान आत्महत्या नहीं करेगा तो क्या मिनिस्टर लोग आत्महत्या करेगा।"**[18]

उपर्युक्त गद्यांश से वर्तमान समय में किसानों का मजदूरी की तलाश में शहरों की ओर पलायन के कारण को दर्शाता है। साथ ही खेती प्रधान देश में किसानों की दुर्दशा दृष्टिगत होती है।

रत्नकुमार सांभरिया की **'आखेट'** कहानी में पौष की थरथरा देने वाली सर्दी में पेड़–पौधे भी जाड़े की मार खा रहे थे, शरीर चीरने लगता, दाँत किटाने लगते। मजदूरों के लिए धरती बिछावन और आकाश ओढ़न, उनके इर्द–गिर्द दुःखों का अलाव जलता, पीड़ाओं का जंगल हरा रहता, विपदाग्रस्त जीवन, टाट की बोरियों और प्लास्टिक की पन्नियों की एक तान ही उनकी झोंपड़ी, जानलेवा जाड़ा, जानवर पेड़ों से गिर कर मर रहे थे, बादल का बोलना, बिजलियों का कड़कना आदि से शहर में गाँव से आए मजदूरों की परिवेशगत स्थिति को हमारे समक्ष रखते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की **'आधा सेर घी'** कहानी में गाँव एवं शहर दोनों का परिवेश देखा जा सकता है। दलितों के पास अतीत के नाम पर गालियाँ और लड़खड़ाता हुआ वर्तमान था, गाँव हो या शहर बड़ी जाति के आदमी दोनों जगह छोटी जात के व्यक्ति से उसका व्यक्तित्व छीन लेते हैं। दलितों का सूखी रोटी खाकर डिप्टी कलक्टर बनने का सपना देखना, मजदूरी करना साहूकार के पास जमीन गिरवी रखना, डॉक्टर या वैध का गाँव में न होना, दवाई के लिए रुपये न होना, शहर में शैडयूल्ड कास्ट के ताने सुनना साथ ही वर्तमान परिवेश में शिक्षित दलितों की स्थिति इस प्रकार व्यक्त की है जैसे यह वाक्य देखिए –

"देखो धन्नालाल जी हर साल आरक्षित प्रत्याशियों की संख्या बढ़ रही है और आरक्षण तो उतना ही है। फिर पदों की संख्या में भी कुछ खास बढ़ोत्तरी नहीं होती।"19

मोहनदास नैमिशराय की **'मजूरी'** कहानी में शहरी परिवेश में मजदूरी करने वालों की दयनीय स्थिति, गरीबी, भुखमरी, लाचारी एवं धनाढ्य वर्ग के लोगों में ऐशो आराम के जीवन के साथ बीयर, व्हिस्की, मूवी, मांस–मदिरा का सेवन आदि देखा जा सकता है।

मोहनदास नैमिशराय की **'सिमटा हुआ आदमी'** कहानी शहर में सरकारी ऑफिस के परिवेश को हमारे समक्ष लाती है जहाँ वेलफेर एसोसिएशन, मीटिंग हॉल, शैडयूल्डकास्ट एसोसिएशन, जातिगत हीनता का भाव, बेरोजगारी, ऐसे परिवेश में एक दलित आई.ए.एस. के विचार इस प्रकार के हैं जैसे–

"पीछले बारह वर्षों के दौरान आई.ए.एस कैडर में रहते हुए इतना तो वह सीख ही चुके थे। नौकरीशाही में दूध जैसी छबि बनाकर रखना कोई हँसी–खेल नहीं है। कभी–कभी अपनी जाति तथा परिवार के लोगों से भी किनारा करना पड़ता है। आई.ए.एस अधिकारियों के प्रमोशन प्रायः इसी बात पर निर्भर करते हैं।"20

साथ दलितों की बस्ती में धुएं की लकीरों, दाल भात की गंध, चूड़ियां बजने की आवाज़, मनिहार, अंगीठी पर चढे मांस के पकने की महक, गली के कुत्ते का मांस की महक पाकर दौड़ आना, रेडियो पर फिल्मी गीत की आवाज़ आदि शहर में रहने वाले दलितों के परिवेश को हमारे समक्ष लाते हैं।

मोहनदास नैमिशराय की **'दर्द'** कहानी में आकाश में बादल और परिवेश में उमस, बस्ती में प्रकाश की अव्यवस्था, दलित बस्ती की गली के खड़ेजे की उबड–खाबड़ स्थिति, मकानों की प्लास्टर उखड़ी दीवारें, बस्ती का परिवेश को लाहल से भरपूर, एवं शहर की सरकारी ऑफिस में पदोन्नति के लिए किया जाने वाला भेदभाव, ईर्ष्या आदि।

डॉ.सुशीला टाकभौरे की **'मेरा समाज'** कहानी में वाल्मीकि समाज के मोहल्ले के परिवेश में शराब पीने की आदत, फिजूल के झगड़े, बेरोजगारी, अशिक्षा, सफाई कार्य को आराम दायक समझने की सोच, स्कूली बच्चों से सफाई कार्य करवाते माता–पिता, किताब–कापियों का अभाव, पारिवारिक झगडे, मार–पीटा, ऐसी घटनाएँ प्रतिदिन होतीं, परंपरागत कार्य के प्रति मोह एवं पारम्परिक विचारधारा को देखा जा सकता है।

सुशीला टाकभौरे की **'बदला'** कहानी में गॉव के परिवेश में दलित अछूतों के साथ दुर्व्यवहार, अपमान, अत्याचार की घटनाएँ, न पुलिस, न कानून बस अन्धा कानून, अस्पृश्यता एक तरफे न्याय को देखा जा सकता है।

अखिलेश कुमार की **'कर्फ्यू'** कहानी में शहर में दैनिक मजदूरी करने वाले दलित परिवार में प्रतिदिन मांस के साथ दारु पीना, शहर में दंगा, वारदात, हत्या, कर्फ्यू,

सन्नाटा, बलात्कार, भूख, रोते–बिलखते बच्चे, पुलिस की गाड़ी का सायरन, कर्फ्यूग्रस्त सुनसान सड़क एक भय के परिवेश को उपस्थित करता है।

सूरजपाल चौहान की **'अत्तू और अम्मा'** कहानी में दिहाड़ी मजदूरी करने वालों की स्थिति, फैक्ट्री मालिकों के अन्याय, दलितों के पैबंद लगे कपडे, तार–तार, ओढ़नी, घर के नाम पर फूंस की कच्ची कुठरिया, सवर्णों के अत्याचार अपमान, जातीय शोषण, ढ़िबिया की रोशनी में पढ़ाई, गरीबी, सवर्णों के अन्यायपूर्ण परिवेश को हमारे समक्ष रखता है।

दीपक कुमार 'अज्ञात' की **'जोजना'** कहानी में खेत में धान कमाने जाना, 'मड़सटका' भात बनाना, झींगे की चटनी बनाना, हांडी, चूल्हा आदि से एक ग्रामीण परिवेश उभरकर आता है। सरकारी स्कूल में मिलने वाले अनाज की काला बाजारी, दलाली, अखबार में भंडाफोड़, राजनीति, खून–खराबा, धोखा, गाँव सरकारी स्कूलों में दलितों पर होने वाले अन्याय को चित्रित किया गया है।

शिवकुमार कश्यप की **'रात'** कहानी में दलितों को सरकार से मिलने वाले समानता के अधिकारों से वंचित रखना, भेदभाव रखना, ईर्ष्या, एवं छोटे शहर में दलितों को किराए पर घर न मिलने की समस्या, पढे–लिखे सवर्णों की मानसिकता, गाँव एवं शहर के परिवेश में समान देखा जा सकता है।

डॉ.सी.बी भारती की **'भूख'** कहानी में विकास के नाम पर गाँव से शहर में तबदील हुए भुइसर टोले के परिवेश का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

> **"एक समय था, जब भुइसरटोली की समूची भूपट्टी हरे–भरे जंगलों से आबाद थी।.......जंगलों के उत्पाद, पत्तियों, फूलों, शहद आदि को बेचकर आदिवासी किसी तरह अपना गुज़ारा करते थे। फिर आई विकास की वह आँधी, जिससे पेड़ कटते गए और फ़ैक्टरियाँ आबाद हुई। आदिवासियों के विकास का बहाना लेकर चारों तरफ गैर आदिवासियों की गगन चुम्बी अट्टालिकाऐं खड़ी होती गई। धीरे–धीरे शोषण का अन्तहीन सिलसिला निरन्तर जारी रहा, पर अब उसका रुप बदल गया था। मोहल्ले–मोहल्ले में शराब के ठेके, लौटरी की दुकानें, अंग्रेजी स्कूल और पोस्ट ऑफ़िस खुलते गए। जैसे से यहाँ कुछ भी कभी भी उपलब्ध हो सकता है। मुलिया रम्पा, फुल कुँवारी कोई भी हो, पेट की आग से त्रस्त हो बिकने को तैयार रहती है मजबूर होकर। सिनमा और लौटरी ने आदिवासी सभ्यता को पूरी तरह ढ़ँक लिया और इसके मांस एवं हड्डी में अपने खूनी दाँत गडा दिए।"**[21]

कुसुम मेघवाल की **'अंगारा'** कहानी में गाँव में सवर्णों द्वारा होते अत्याचार, थानेदार द्वारा रिपोर्ट लिखने के लिए रिश्वत मॉगना, अत्याचारियों को पुलिस और मंत्रियों द्वारा संरक्षण दिया जाना, युवा दलितों में प्रतिशोध की भावना जागना आदि नये परिवेश के रुप में देखा जा सकता है।

श्याम नारायण कुन्दन की **'सुनरी'** कहानी में एक ऐसे गाँव के परिवेश को लिया गया है, जहाँ आज़ादी के साठ वर्ष बाद भी बिजली का नामोनिशान नहीं है। किंतु मोबाइल अवश्य है, भले ही शिक्षा, परिवार कल्याण के बारे में जागरुकता नहीं आई हो। युवकों का फिल्मी अंदाज़ की हेयर स्टाइल, लुंगी छोड़ जीन्स टीशर्ट पहनना, झोंपडियों की जगह पक्के मकान, बेरोजगारी दलितों और सवर्णों के अलग कुँए होना, दलितों का मजबूरन गंदा पानी पीने पर विवश होना आदि के कारण दलितों में जागृति आना आदि से उस गाँव में सवर्णों का मैला ढोने वाले, उनकी जूठन फेंकने वालों की स्थिति का जाना जा सकता है।

सुरेन्द्र नायक की कहानी **'खटिया की जाति'** में ऐसे में ऐसे छात्रावास के परिवेश को लिया गया है जहाँ सामंतकालीन वर्णीय व्यवस्था आज भी व्याप्त है। अंतरिक्ष युग में सडी गली मानसिकता, छात्रावास में सवर्णों एवं दलितों के रहने की अलग व्यवस्था, वर्ण–संघर्ष, शिक्षण संस्थान की सड़ांध, दलितों के प्रति दारोगा के कटु विचार आदि से दलित छात्रों के शिक्षा में आने वाले संघर्ष पूर्ण वातावरण को प्रस्तुत किया गया है।

लखनलाल पाल की **'बदरिया'** कहानी में धूल भरी हुई गलियों के गाँव, फसल में होने वाले नुकसान, गरीबी, गाँव में नाले पर बने चैकडेम, खेतों में सरकारी बंधे, पर्दा प्रथा, शराब, द्यूत क्रीड़ा, घरेलू कलह दलितों में हरिजन एक्ट की जानकारी का होना, अनमेल विवाह, दलित स्त्री का बिना पुरुष के रहने में आने वाली मुश्किलें, कर्ज, ब्याज, आर्थिक शोषण की परंपरा आदि।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'चिड़ीमार'** कहानी में शहरी परविश में दलितों से की जाने वाली अस्पृश्यता, भेदभाव, क्षेत्रीयता, जाति, भाषा, बेरोजगरी, के बीच दलित युवती को सरेआम शहर के बीच सवर्ण युवकों द्वारा नाम लेकर पुकारना; फिकरे कसना, भद्दे, अश्लील इशारे करना, द्विअर्थी शब्दों में बोलना, भंगिन जमादारनी, मेहतरानी, चूहड़ी कहकर अपमानित करने जैसी हरकते देखी जा सकती हैं। दलित इंस्पैक्टर भी दलित होने के कारण सवर्ण अधिकारी से बार–बार अपमानित होता दिखाया गया है। इससे शहरी परिवेश में वर्तमान समय में शिक्षित दलितों की परिस्थिति, विवशता को समझा जा सकता है।

रजतरानी 'मीनू' की कहानी **'हम कौन हैं ?'** में शहरी परिवेश में स्कूल के बच्चों के एडमिशन की बढ़ती हुई फीस, अभिभावकों पर बढ़ते बोझ, पब्लिक स्कूल में शिक्षकों द्वारा जातिगत भेदभाव, सरकारी स्कूलों में ब्राह्मणवादी संस्कारों के कर्मकाण्डी अध्यापक, मिशनरी स्कूलों में अंग्रेजी प्रभाव की शिक्षिकाओं की मानसिकता, चन्दौसी से दिल्ली तक के परिवेश में दलितों के लिए साम्यता, अबोध दलित बच्चों को शिक्षकों द्वारा मिलने वाली मानसिक यातना अपमान आदि।

जय प्रकाश कर्दम की **'लाठी'** कहानी में गाजियाबाद के नज़दीक के मढ़ैया, हरसांव, सरदपुर, रईसपुर, काजीपुरा, महरौली, रजापुरा आदि गाँवों में समाज का ध्रुवीकरण जाति के आधार पर होना, जाटों का बोलबाला, लाठी और जाति के बलबूते पर दलितों पर अत्याचार खेतों में सिंचाई के एक मात्र साधन अपरगंग नहर से निकलता बम्बा, सरकारी पानी से खेतों की माप के आधार पर पानी के समय घंटे बँटे होना, इन्हें

'वार' कहा जाना, माँग की तुलना में आपूर्ति कम होना, आस–पास के खेत वालों में झड़प–झगड़े दूसरों का वार हथिया लेने की घटनाएँ, दलितों में एकता की कमी, भीरुता, आक्रोश आदि।

अजय नावरिया की **'उपमहाद्वीप'** कहानी में गाँव एवं शहर दोनों परिवेश में दलितों की स्थिति का चित्रण किया गया है। गाँव में दलित दुल्हे को घोड़े पर बैठकर बारात निकालने का अधिकार नहीं था, नए कपड़े वे नहीं पहन सकते थे, सवर्णों द्वारा दलित स्त्रियों को जूतियों से मारना, दण्ड लगाना, थूक चटवाना, गालियाँ देना, धर्म–ईमान के नाम पर सूखा, हैजा–प्लेग फैलाने का अंधविश्वास, परंपरागत भांडो वाली पंडित की वेशभूषा, कंधे पर रामनानी, हाथ में मनकों वाली माला, औरतों के रोने–चिल्लाने की आवाज़ों, से आसमान का भांय–भांय रोने लगना, दूल्हे का पैदल जाना, घोड़ी का लौट जाना, नायब थानेदार का दलित विरोधी होना, गाँव में दलितों की स्थिति इस प्रकार थी–

> **''हर क्षण छोटे होने का अहसास। दूर–दूर तक रेत है, पानी से निचुड़ी, जहाँ हमारे लिए न थाना–पुलिस है, न अस्पताल, न कचहरी गाँव की पंचायत है, पर वह हमारी नहीं है। उस पंचायत में हमारे लिए न्याय नहीं है, सुनवाई नहीं है। सिर्फ उपहास है। वहाँ खेत न थे, ज़मीन न थी हमारी, बस मेहनत थी। फसल उनकी थी, खेत उनके थे, घर उनके थे धरती उनकी थी हमारे पास एक झोंपड़ी थी। हमारे पास सिर्फ नमक था, मिर्च थी, आधे पेट के लिए रोटी थी, आधे के लिए पानी था। पर कुआं नहीं था। हमारे पास नया कपड़ा नहीं था, जूती नहीं थी।''**[22]

जबकि शहर में दलित सरकारी संस्थान में मैनेजर होने से सुसज्ज घर, गाड़ी, ड्राईवर, फेमिली डॉक्टर, एयकंडीशन, लिफ्ट, म्जूजिक टीच, मैकडोनॉल्ड, पीजाहट, हल्दीराम आदि शहरी सुख–सुविधा, किन्तु शहर में भी शिक्षितों द्वारा जातिगत ताने, भेदभाव पूर्ण वातावरण आदि शहर एवं ग्रामीण परिवेश में दलितों की स्थिति में साम्यता एवं वैषम्यता को चित्रित करता है।

गुजराती की दलित कहानियाँ

गुजराती की दलित कहानियों में विठ्ठलराय श्रीमाली द्वारा रचित **'सपायडो'** कहानी में डांग प्रदेश के गाँव के परिवेश एवं गरीब दलितों के रहन–सहन खान–पान, वेश–भूषा, कार्यकलाप इस प्रकार वर्णित है–

> **''चारों ओर ऊँचे हरियाली से भरे पर्वत, साग, साल, सीसम, केसुडा और खाखरा के वृक्षों से बनहुआ घना जंगल, बारह मास बहती अंबिका नदी और उसके किनारे पर मिट्टी एवं जंगली लकड़ी से बनी हुई छोटी सादी झोंपड़ी में परिवार के साथ रहता था वेस्ता। उसकी पत्नी रामड़ी और पाँच छोटे बच्चे ही उसका घर संसार था। सौ बाय सौ फुट की जमीन के तीन भाग थे। गाढ़ जंगल से घिरी हुई इस बिन ऊपजाऊ खेती की जमीन में वेस्ता प्रति वर्ष नागली, मक्का और लाल ज्वार की खेती करता था। उसमें बड़ी मुश्किल से गुजारा हो इतना ही अनाज ऊगता था।**

उसमें से परिवार का पोषण नहीं होता था, इसलिए वेस्ता आस पास के जंगलों से लकड़ी फाटकर ले आता था। उसकी पत्नी रामड़ी उसके गट्ठर बना कर बड़े गाँव में बेचने जाती थी। उसके छोटे नंग धड़ंग बच्चे दिन भर दो भेंस और चार बकरियों को, जंगल में चराने जाते थे।''[23]

इस प्रकार डांग प्रदेश में हर घर में शराब की भट्टी होना, शराब बेचने का व्यापार करना, पेटभर अन्न प्राप्त न होना, दूर–दूर घर होना, शराब पर प्रतिबंध के उपरांत उसका दुरुपयोग करते पुलिस कर्मचारी, आदि वर्णन के माध्यम से लेखक ने संपूर्ण डांग क्षेत्र को सजीव रुप से हमारे समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

विठ्ठलराय श्रीमाली की **'इसमें सीता का क्या दोष ?''** कहानी में गाँव की सीमा पर आए दलित रावणवास में रहते परिवार एवं परिवेश का वर्णन इस प्रकार किया गया हैं–

''रावणवास में, कच्ची मिट्टी में से बनाए गये दस झोंपड़ी थी। प्रत्येक घर के आगे पाँच–छः गधे बँधे होते थे। गधों की लिद्द और मूत्र से रावणवास में एक तरह की दुर्गंध निकलती थी। रावण परिवार इस दुर्गंध के आदी बन गए थे।''[24]

इसके अतिरिक्त रावणवास में तंबूरा, मंजहीर, करताल बजाकर रात्रि के समय भजन गाना, ग्राम्य समाज का भजन सुनने के लिए प्रतिदिन उपस्थित होना, टूटी खटिया, फटी गुदडी, गोबर से घर लीपे जाने की सुगंध, मीठे पानी का कुँआ, गाँव में घडिया विवाह करने की प्रथा, पुरुष प्रधान समाज, पंचायत में एक तरफा न्याय आदि से कहानी का एक साकार परिवेश उपस्थित होता है।

विठ्ठराय श्रीमाली की **''भूल किसी की भोगे कोई''** कहानी में अहमदाबाद के मिल में मजदूरी करने वाले परिवार एवं उसके आस–पास के परिवेश को लिया गया है। अनमेल–विवाह, बालविवाह, गरीबी के कारण बेटी को जड़ बुद्धी मिल मजदूर के हाथों सौंपना, पारिवारिक हिंसा, अंधविश्वास, तांत्रिक द्वारा मीर्च का धुँआ करना, अवचेतन मन का जागृत होकर माताजी के रुप में उपस्थित होना, शहर में जुआ, शराब आदि मजदूरों की रोजमर्रा के जीवन में आम बात होना। मजदूरों के परिवार की बस्ती में उनकी दीनचर्या को दिखाया गया है।

विठ्ठलराय श्रीमाली की **'सांकडा'** कहानी में ऐसे गाँव को चित्रित किया गया है जहाँ महिला ही बैलगाड़ी हाँकती है और पुरुष के बीमार होने पर खेती, परिवार की जिम्मेदारी उठाती है। घर में छाछ के साथ रात की ठंडी रोती खाना, बच्चों का विद्यालय जाना, सरंपच का नई विचारधारा का होना, न्याय प्रिय होना, सवर्ण युवकों द्वारा दलित महिलाओं का जातीय शोषण किया जाना, पैरों की पैजनी पहनना स्त्रियों के लिए गौरव की बात होना आदि बहुत ही कम शब्दों में लेखक ने उस गाँव के परिवेश का वर्णन किया है।

विठ्ठलराय श्रीमाली की **'मुखीया का भांजा'** कहानी में खेतों में दैनिक मजदूरी करने वाली दलितों के रहन–सहन, शिक्षित युवक को जातिगत भेदभाव के

कारण बेरोजगार रहता, सरकार द्वारा रोजगार न दिया जाना, शिक्षित बेकारों की हताशा, अपराध के रास्ते पर बढ़ना आत्महत्या करना, गाँव में रुढ़िचुस्तता, दलित वर्ण के लोगों के प्रति अस्पृश्यता की मान्यता, तिरस्कार की भावना ग्रामीणों की कुंठित विचार धारा आदि को परिवेश के रुप में देखा जा सकता है।

'शैली का व्रत' कहानी में विठ्ठलराय श्रीमाली ने परिवेश का वर्णन इस प्रकार किया है–

> **''आषाढ़ महिने की बरसात बरसकर शांत हो गई थी। खाली हो गए बर्तन की तरह, खाली हो गए बादल आकाश में इधर–उधर घूम रहे थे। नवविवाहित के शरीर में से आने वाली मादक सुगंध की तरह ताजी गीली धरती की सुगंध आ रही थी।''**[25]

इसके अतिरिक्त उस सोसायटी में जया पार्वती के व्रत का महत्त्व, पूर्जा, अर्चना, उपवास, इस व्रत के करने से अच्छे वर प्राप्त होने की मान्यता नए वस्त्र पहनकर किशोरियों का बाग–बगीचे में घूमना, मंदिर प्रवेश में दलितों के प्रति किया जाने वाला भेदभाव, दलितों के मंदिर में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाना, दूसरी ओर मानव कल्याण आश्रम में सवर्णों द्वारा दलितों को शरण देकर उनकी प्रगति में सहायक बनना आदि से शहरों में भी सवर्णो की मानसिकता को देखा जा सकता है।

बी.केशरशिवम् की **'राती रायण की रताश'** कहानी में एक गाँव के परिवेश में सवर्ण युवकों द्वारा दलित स्त्रियों से अश्लील मजाक करना, दलित स्त्री द्वारा बेहद गंदी गालियाँ देना, साथ ही गाँव के बुजुर्गों से पर्दा करना, गाँव में दलित स्त्री के विद्रोही रुप के समक्ष पुरुष समाज को लाचार दिखाया गया है।

'दाझवुं ते' धरमाभाई श्रीमाली की कहानी में ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र में विवाह के अवसर के परिवेश को चित्रित किया गया है। जैसे पेट्रोमेक्ष सिर पर लिए महिलाओं का बरात में चलना, बेंडबाजा, शहनाई का सूर, ढोल का बजना, दुल्हे का सिर पर साफा, साफे में लगी कलगी, कंधे पर मखमली म्यानवाली तलवार, पैरों में जूती। इसी के साथ शराबखाना, पेट्रो मेक्ष के आस–पास घूमते जीवजंतु, गाँववालों का झुंड, मशाल की ज्योत, टोले में सीटी बजना घोडे पर सवार दुल्हा, तोरण (बंदनबार) आदि। कहानी में आदिवासी प्रादेशिक बोली का उपयोग किया गया है, जिसमें गालियों का भी समावेश देखा जा सकता है।

पुष्पा माधड़ की **'गोमती'** कहानी में पृथ्वीलोक के साथ स्वर्गलोक के परिवेश को भी देखा जा सकता है। जहॉं इन्द्र की सभा, गंधर्व का संगीत, अप्सराओं का नृत्य, देवराज इन्द्र, देवर्षि नारद, अमृत कटोरे की उपस्थिति है। पृथ्वीलोक में दलितोद्धार के लिए दलितों को मिलने वाली सहायता, बलात्कार होने पर मिलने वाले रुपयों में होने वाली बढोत्तरी, मंदिर में बलात्कार, गाँववालों द्वारा किया जाने वाला बहिष्कार आदि।

डॉ. मोहन परमार की **'थड़ी'** कहानी में आदिवासी ग्रामीण परिवेश को चित्रित किया गया है। जहाँ धान कूटना, ओखली–मूसल, गोबर से लीपा हुआ आँगन, वणकर–चमारों का मोहल्ला, स्त्री–पुरुषों का अपने समाज के बड़े बुजुर्गों के प्रति आदर, मज़दूरी के लिए गाँव छोडते जवान, आंगन में टूटे हुए खिलौने से और कंची से खेलता

बच्चा, हसिया, कटाई पर जाते ग्रामीण, अंधकार में भरी रसोई की कोठरी, पतरे की संदूक, दीवारों की दरारें, खेतों में बनी मचिया, सवर्णों में सामाजिक मर्यादा के खोने का भय, जाति में बेटी के विवाह की चिंता आदि। लेखक ने परिवेश के अनुरुप आदिवासीयों की प्रादेशिक बोली का प्रयोग किया है।

मधुकान्त कल्पित की **'लाखु'** कहानी का परिवेश एक गाँव का है, जहाँ मुहल्ले में धना नीम का पेड़, इमली का पेड़, उसकी छाया में बैठते पशु, तालाब की मिट्टी से लथपथ भैंसें अपने घर कि ओर जातीं, एक कतार में बने दलितों के घर, घर के पतरे की छत पर जंग के चिह्न, बंदरों से रक्षण हेतु नलिए वाले छतों पर कँटीली जाली बाँधी जाती थी, कितने मिट्टी के घर मात्र घास–फूस के बने थे। झोंपड़ी में फानूस की पीली रोशनी, टूटी खटिया, सुबह–सुबह मजदूरी के लिए जाते ग्रामीणजन, अपने साथ पोटली में गाद्य पदार्थ बाँधे, सिर पर जरुरी सामान लेकर घर से निकलते लोग आदि से उस गाँव का परिवेश हमारे समक्ष उपस्थित होता है।

हरिपार की **'सोमली'** कहानी की शुरुआत में कोर्ट के परिवेश को चित्रित किया है, जहाँ न्यायधीश, वकील आदि हैं साथ ही कटघरा भी है। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में शराब के व्यापार, गैरकानूनी शराब का धंधा, जबरन नाबालिग दलित बच्चों को सवर्णां के घर पशु चराने की विवशता, गुलामी के बदले मिलने वाली जूठन, पुराने कपड़े, दलितों को सरकारी सहायता जैसे कुँआ, बैल, खादी की साड़ी पर सवर्णों का कब्जा होना, पीढ़ी–दर–पीढ़ी किया जाने वाला दलित का शोषण दलितों में विवाह के अवसर पर कन्यादान में दी जाने वाली गाय की प्रथा, नववधु का सवर्ण पुरुषों द्वारा किया जाने वाला परंपरागत जातीय शोषण, पात्रों द्वारा आदिवासी बोली का उपयोग आदि से उसे गाँव के वातावरण एवं परिवेश को जाना जा सकता है।

हरीश मंगलम् की **'दायण'** कहानी की शुरुआत गुजरात की साबरमती नदी के किनारे के परिवेश के वर्णन से शुरु होती है। साबरमती के किनारे कतारबंद वृक्षों की हरियाली, लाल सूरज का उदय, आंबेडकरवास में से निकलते लोगों का समूह मजदूरी के लिए खेतों की ओर जाना, दलितों की अंधेरी कोठरी फलों की खरीदी दलितों की पहुँच से दूर होना, गाँव में आज भी दाई द्वारा की जानेवाली प्रसव–सेवा, सवर्णों द्वारा दलितों के प्रति बरती जाने वाली अस्पृश्यता, सूर्य को काले बादलों में घिरा दिखाना आदि।

डॉ.केशुभाई देसाई की **'बोटेली वस'** कहानी में गुजरात के इडर शहर के परिवेश को लिया गया है जहॉ सोसायटी में सफाई कर्मचारियों द्वारा सफाई करना, बदले में रात का बचा हुआ भोजन, पुराने कपड़े, टूटे हुए कप में चाय देना, कप टोयलेट की खिड़की पर रखना, पीछे के रास्ते से सफाई के लिए आना–जाना, तुलसी के पौधे न छूना, कपड़ों को न छूना, शहर में मुँह माँगी पगार माँगने वाली नौकरानियों की समस्या, अस्पृश्यता, गरीबी, भुखमरी, अधिक संतान आदि दलितों के लिए आज भी एक बड़ी समस्या है। इन सारे वर्णनों से इडर की एक सोसायटी का परिवेश उभरकर हमारे समक्ष आता है।

बी. केशरशिवम् की **'रामली'** कहानी में गुजरात के शहर में फैली प्लेग की बीमारी एवं उस बीमारी में सफाई कर्मचारियों की स्थिति एवं परिवेश को चित्रित किया गया है। जैसे गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी समाचार देखने के लिए दलित की झोंपड़ी में टी.

वी. के समक्ष भीड़ का उमटना, शहर में मनुष्य से ज्यादा कचरे अधिक दिखाई देना, शहर में दलितवास में दिनभर मलमूत्र का दुर्गंधयुक्त वातावरण, चारों ओर गंदगी का जत्था, गटरों का भरना, जगह के अभाव में गटर पर खटिया रखकर सोने की विवशता, शहर में वी.आई.पी. लोगों की बैठक, उनके होस्पिटल का निरीक्षण, मरीज़ों से बात–चीत, शहर छोड़ते लोगों की भीड़, रेलवे स्टेशन, बस स्टोप पर उनकी चेकिंग के काऊँटर, चूहों से बड़े आदमियों का डरना, लेबोरेटरी में एक साथ दो सौ चूहों को जीवत ही जला देना, स्कूल, परीक्षा, सिनेमाघर, दुकान, काम धंधा, मिल, फेक्ट्री, आदि बंद एवं विवाह और जन्मदिन का उत्सव मनाना भी बंद हो जाना, सफाई कर्मचारियों का सफाई न करने पर सस्पेन्ड करने की धमकी, दलितों को प्लेग से ज्यादा चिंता नौकरी की होना आदि।

बी.केशरशिवम् की **'जेल की रोटी'** कहानी में सीतापुर गाँव की बस के लिए धक्का–मुक्की करते लोग, खिड़की से बच्चों को बस में चढ़ाते लोग, अस्पृश्यता, भगवान की मूर्ति की चोरी, विद्यालय में पढ़ते दलितों के कारण विद्यार्थियों का घर पर जाकर पानी के छींटे लेना, दलित विद्यार्थी को पीने का पानी न मिलना पानी पीने के लिए दलितों को अपने मोहल्ले में घर पर ही जाने की विवशता, परंपरागत छींटे लेने की प्रथा, दलित शिक्षित युवकों की बेरोजगारी, शिक्षित दलित युवकों को भी खेती एवं मजदूरी करने की विवशता, ग्रामीणों से उन्हें मिलने वाला तिरस्कार, उपालंभ, मज़ाक उड़ाया जाना, बेरोजगारों का ड्रग्स और शराब बेचने के व्यापार के प्रति बढता कदम। बुद्ध पूर्णिमा की चाँदी जैसे उजाले में तालाब के पास मंदिर, तालाब में चंद्र की किरणों का आह्लादक दृश्य, दलितों के मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध, प्रवेश करने पर उसके परिवार ही नहीं संपूर्ण दलित बस्ती का सामूहिक बहिष्कार किया जाना, मारपीट करना, मोहल्ला जलाना, दलित स्त्री का सामूहिक बलात्कार, जिंदा जलाया जाना, क्रूर हत्या, सवर्णों का अत्याचार एवं प्रशासन की नज़रअंदाजी। आदिवासी बोली का प्रयोग कहानी में किया गया है।

बी.केशरशिवम् की **'कमली'** कहानी में गुजरात के शहरी परिवेश में मजदूरी के लिए आदिवासियों की बढ़ती संख्या, घर, बिल्डींग के निर्माण कार्य में उनकी मजदूरी, मजदूरों का परिश्रमी जीवन, इलेक्ट्रिक मशीन से पानी बनते मकानों पर छाँटना, निर्माणकार्य के अंतर्गत की जाने वाली लापरवाही के कारण मजदूरों की मौत, बदले में उन्हें कोई हरजाना न मिलना, आदिवासी महिलाओं में शरीर के ढँके जाने वाले अंग को न ढँककर घूँघट करके परिवार के पुरुषों से पर्दा करने की परंपरागत प्रथा, आदिवासियों में अन्य त्यौहारों से अधिक होली के त्यौहार का अधिक महत्त्व होना। आदिवासी महिला का खुले स्थल पर उघाड़े बदन स्नान करने में संकोच न करना आदि से शहरों की ओर दलितों का पलायन एवं बहॉ उनकी दीनचर्या को देखा जा सकता है। शुद्ध गुजराती एवं आदिवासी बोली का मिश्रण किया गया है।

बी.केशरशिवम् की **'शहर की बहू'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में दलितों के मोहल्ले में महिलाएँ घर पर ही हाथ की चक्की से अनाज पीसती हैं, कुँए से पानी भरती हैं, रंगबीरंगी मोतियों से भी उड़ली सिर पर रखकर उस पर घड़ा रखती हैं। कवेलु के टुकड़े बीनकर उन्हें निर्माण कार्य के लिए बेचना, रेलवे की पटरी से आधे जले हुए कोयले बीनकर उन्हें पीसकर तालाब की काँप लाकर उनके साथ कोयले के बुरे को

मिलाकर उनके उपले बनाकर सुखाती। सीगड़ी में उन्हें ईंधन की तरह उपयोग में लेतीं, कपास के छिलके न फेंककर उसे पीसकर गोबर के साथ मिलाकर उसके उपले बनाकर सुखाती वर्षाऋतु में जब लकड़ियाँ गीली हों तो ये उपलों में से भोजन पकाती, खेती में जुताई–बोआई के साथ खरपतवार निकालने की मजदूरी करतीं साथ ही निर्माण कार्य में मजदूरी भी करतीं। गाँव में आरक्षण के मुद्दे पर हिंसा भड़कना, दलितों को घेरकर सवर्णों द्वारा उन्हें पीटना, पत्थरों की बरसात करना, लाठी से मारना आदि।

बी. केशरशिवम् की **'पोक'** कहानी में एक दलित मोहल्ले का वर्णन है, जहाँ गरीबी के कारण लोग गुड़ की चाय पीते हैं और मेहमानों को शक्कर की चाय पीलाते हैं। चाय के साथ रात की बची हुई बाजरे की रोटी खाते हैं। रात की रोटी सूखकर कड़क हो जाती है, फिर भी लोग तीन–तीन दिन की सुखी रोटी भी खाते हैं। खेत में पुरुषों के साथ महिलाएँ भी मजदूरी करती हैं, जहाँ सवर्ण उनके साथ गाली से बातें करते हैं। जबकि कुछ दलित रास्ते की पोलीथी, प्लास्टिक के टुकड़े, पुराने स्लीपर, चप्पल, हड्डी, कागज बीनकर उन्हें भंगार में बेचकर सात–आठ रुपये कमाते हैं। दलित महिलाओं को सवर्णों द्वारा छाछ दी जाती है, जिसके लिए उन्हें अपनी निश्चित बारी वाले दिन ही छाछ मिलती है, ताकि सभी को छाछ मिलने का अवसर मिल सके, यह छाछ सवर्ण महिला द्वारा इस प्रकार दी जाती है, जिससे दलितों का बर्तन उसे स्पर्श न कर सके। दलित महिलाएँ मजदूरी से लौटते हुए अपनी टोकरी में रास्ते में मिलने वाले गोबर, लकड़ी के टुकड़े आदि ईंधन लेकर आती हैं। रोटी के साथ प्याज खाई जाती है, कोई सब्जी घर पर बनना किसी त्यौहार से कम नहीं होता। आरक्षण के मुद्दे पर होने वाले झगड़े में गरीब दलितों को चोट पहुँचाई जाती है। कहानी में गुजरात की बोली का प्रयोग किया गया है।

स्वप्निल मेहता की **'कदाच'** कहानी में गुजरात के पंचमहाल जिले के एक गाँव का परिवेश लिया गया है, जहाँ गरीब आदिवासी की झोंपड़ी आग की लपटों में जलने लगती है, सवर्ण धन प्राप्ति की लालसा में राजनीति में प्रवेश करते हैं, वे दलितों का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग करते हैं। दलितों को झोंपड़ी बनवाकर राजनीतिक कार्य में उनका उपयोग करना, उन्हें खादी का पजामा–कुर्ता, साड़ी देना आदि। ठंडी में सुबह की कोमल ओस द्वारा दलित की जली हुई झोंपड़ी की आग को बुझाने का सफल–असफल प्रयत्न करना, सवर्णों की अवसवादीता, दलितों की भुखमरी, गरीबी, दीनहीन दशा, भोलापन को लेखक ने आदिवासी बोली में प्रस्तुत किया है।

वसंतलाल परमार की **'एक छालियु दालने खातर'** कहानी में सुमेरपुर नामक गाँव में एक ओर जमींदार की हवेली उसके समक्ष चोक दूसरी ओर चमारों का मोहल्ला, चमारों के मुखीया द्वारा सवर्ण जमींदार को चार हाथ दूर से ही जमीन पर हाथ छूकर उन्हें सलाम करने का रिवाज़ दलितों का परंपरागत रुप से सवर्णों के पशुओं को चराने की गुलामी करना, बदले में मक्का की सूखी रोटी मिलना, समाज के नियम तोड़न वालों को झोंपड़ी तोडना, गाँव से बाहर निकालना समाज के लोगों का भोज करवाना जैसे दंड दिए जाना। विधवा दलित महिला का पुर्नविवाह या दूसरे पुरुष को स्वीकार करने पर समाज की सहमती मिलना। अकेली रहनेवाली विधवा पर समाज द्वारा लांछन लगाना, उस पर शंका करना, अत्यंत गरीबी को परिवेश के रुप में देखा जा सकता है।

जयंतीलाल पी. दाफड़ा की **'दो बीघा जमीन'** कहानी में गाँव में सूर्यास्त के समय का वर्णन जिसमें प्रकृति के साथ पशुओं का वर्णन भी है। खेतों से घर की ओर लौटते बैलगाड़ी में लगे बैलों के गले में घंटीयों की आवाज़, मजदूरों का बैलों के साथ घर की ओर लौटने का दृश्य, उनके फटे कपड़े, फटी हुई पगड़ी वहाँ के परिवेशगत स्थिति को चित्रित करती है। गाँव में मृत व्यक्ति से कर्ज़ लेने की विवशता, बदले में पाँच कई वर्षों तक बेगार करने की मजबूरी, दलितों की जमीन पर मुखीया का जबरन अधिकार करना, पुलिस द्वारा सर्वर्णों का साथ देकर दलितों पर अत्याचार करना, उन्हें झूठे आरोप में फँसना आदि। कहानी में लेखक ने आदिवासी परिवेश के अनुरुप आदिवासी बोली का प्रयोग किया है।

डेनियल मेकवान की **'लोही नी लागणी'** कहानी में दलित युवती दैनिक मजदूरी करके सात भाई–बहनों को शिक्षा देना एवं भरण–पोषण की जिम्मेदारी उठाकर परिवार को सहायक बनती है। समाज गाँव में संवर्णों का बोलबाला दलितों की दीनहीन दशा, गरीबी को चित्रित किया गया है।

जोसेफ मेकवान की **'रोटलो नज़राई गयो !'** कहानी में गुजरात के आदिवासी परिवेश में मजदूरों के मोहल्ले को चित्रित किया गया है, जहाँ दलित महिला गिनकर चार बाजरे की नमक डालकर रोटी बनाती है। साथ में प्याज, लहसून खया जाता है। शहर की स्कूल में दलित बच्चे की बाजरी की रोटी का सवर्ण बच्चों द्वारा तिरस्कार करना। एक ओर पुराने डब्बे में बाजरे की रोटी दूसरी ओर स्टील, या तो सुंदर रंगीन प्लास्टिक के डब्बे में पूड़ी, घी से चिपड़ी रोटी, सेन्डवीच आदि व्यंजन। दलित स्त्री–पुरुषों की दैनिक मजदूरी करना, सरकार द्वारा एक समय का भोजन देने की योजना को शुरु करके अचानक बंद करने पर गरीब मजदूरों की स्थिति बिगड़ना, परिश्रम के अनुपात में मजदूरी न मिलना, भरपेट भोजन न मिलना, मँहगाई का बढ़ना, पेट पर पट्टा बाँधर बच्चों को शिक्षा दिलाना, बीस मील चलकर स्कूल पहुँचना, लालटेन की रोशनी में पढ़ना स्कूल में दलित बच्चों के प्रति सवर्ण बच्चों एवं शिक्षकों का भेदभाव पूर्ण व्यवहार, इलाज के लिए रुपयों का अभाव आदि।

प्रज्ञा पटेल द्वारा रचित **'सगपण'** कहानी में शहर के दलित मोहल्ले एवं एक अस्पताल के परिवेश को लिया गया है। बरसात का मौसम दिन में सफाई कर्मचारी एवं दोपहर एवं रात में अस्पताल में ड्यूटी करने वाले दलित, बेटी की बिदाई में देने के लिए वस्तुएँ एकत्र करना, डॉक्टर द्वारा दलित युवती पर बलात्कार एवं हत्या करना, दलित को न्याय न मिलना आदि से शहर में होने वाले गरीब दलितों की स्थिति हमारे समक्ष आती है।

प्रवीण गढवी की **'दरुपदी'** कहानी एक ऐसे गाँव के आदिवासी परिवेश को लिया गया है, जहॉ के दलित स्त्री–पुरुष मजदूरी करते हैं, वर्ष में आठ महीना एक समय का भोजन उन्हें सवर्णों से मिल जाता है, जबकि रात्रि के भोजन में खिचडी आदि बनायी जाती है। मोहल्ले में किसी के घर पशु खरीदा जाता तो भी कटोरा भरकर भोजन मिल जाता है। गाँव के अधिकतर दलित पुरुष जुआ खेलते, शराब पीते, पत्नी के गहने गिरवी रखते, ठाकुर, भील, बंजारे, पटेल आदि भी शराब पीते। सवर्ण दुकानदार दलितों से सामान के पैसे पर पानी के छींटे मारते फिर उसे उठाते थे, जरुरत से ज्यादा परिश्रम करवाने पर मजदूरों को टी.बी. की बीमारी हो जाती, आंकड़ा, मटका जैसी जुए की

आदतों से पानी को भी गिरवी ही रख दिया जाता जिसका जातीय शोषण सवर्ण करते अपने प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने के लिए राजनीति के चलते दलित महिला को सरेआम निर्वस्त्र करके घुमाया जाता। उन्हें चरित्रहीन समझा जाता अर्थात् सवर्णों के पाप का दण्ड भी दलितों को ही दिया जाता। परिवेश के अनुरुप आदिवासी बोली का उपयोग किया गया है।

प्रवीण गढ़वी की **'सपाटु पेरवानु मन'** कहानी में गुजरात के आदिवासी क्षेत्र के एक गाँव के परिवेश को चित्रित किया गया है, सवर्ण दलितों से छुआछूत बरतते हैं, किन्तु दलित युवतियों के स्पर्श का आनंद भी लेना चाहते हैं। दैनिक मजदूरी, ईंधन रास्ते से बीनकर लाना, गाँव में तालाब, आकाल की स्थिति में कम मजदूरी पर मजदूरों से काम लेने वाले सवर्ण जैसे तीसरी मंजिल पर घड़ा भरकर पानी भरना, मिट्टी, सिमेन्ट, ईंट आदि चढ़ाना। आदिवासी क्षेत्रों में पूनम के दिन मेला लगना एवं मेले को अधिक महत्त्व होना, आदिवासियों में झूले पर बैठने की उत्कंठा, सवर्णों के मोहल्ले में दलितों को चप्पल पहनकर नहीं जाने की इजाजत मिलना, उन्हें ऐसा करने पर सिर पर चप्पल रखकर जाना पड़ता था, साईकिल पर से भी उतरकर जाना पड़ता था, रास्ते के बिल्कुल किनारे पर दबकर चलना पडता था, सिर पर पल्लू ढ़ँककर चलना पड़ता था, दलित सवर्ण के घर पानी नहीं माँग सकते थे, सवर्णों का दलित युवतियों को मेले में ले जाने, चीज वस्तुएँ दिलाने का लालच देकर उनका जातीय शोषण करना आदि। आदिवासी बोली का प्रयोग किया गया है।

प्रवीण गढ़वी की **'दीकरा नी वहु'** कहानी में एक गाँव के सवर्ण एवं दलित समाज के परिवेश को लिया है, जहाँ सवर्ण बकरी पालते हैं एवं बकरी के दूध की चाय पीते हैं, ब्राह्मण समाज में विधवा विवाह की हिंमत किसी में नहीं ऐसा करने वाले को गाँव से निकाल दिया जाता था, विधवा का पुर्नविवाह करने पर उन्हें समाज से हमेशा के लिए उन्हें अपना क्षेत्र छोड़ना पड़ता था, निकाल दिया जाता था। विवाह के लिए दलित युवती को ब्राह्मण समझकर खरीदना, उस पर जातिगत शंका करना, अस्पृश्यता की भावना, दलित के स्पर्श किए गए भोजन को ग्रहण करने में पाप लगने का भय कहानी में आदिवासी क्षेत्र में युवतियों की खरीदी, बीकी करना, समाज से निकाले जाने पर ब्राह्मण परिवार में रहने वाली जातिगत अंहकार आदि।

बी. केशरशिवम् की **'रुपा का पानी'** कहानी में एक नलसरोवर के किनारे बसे हुए गॉव का परिवेश लिया गया है। इस गाँव में सरकार ने स्वैच्छिक संस्था से सहायता लेकर ग्रामीणों को एक कमरे का कवेलु वाला घर बनाकर दिया है। उसके चारों ओर मिट्टी की दीवार, उस पर गोबर से लीपा गया था, उन दीवारों पर चित्र बनाए गये थे, दरवाजे के चारों ओर सितारे लगाए थे, गाँव में बस्ती ज्यादा थी, एक घर में दस–बाहर बच्चे थे। नलसरोवर के किनारे की जमीन खारी होने के कारण बिनऊपजाऊ थी, उसमें जंगली पौधे के अतिरिक्त बंटी नामक अनाज ही उगता था, जिसकी लोग रोटी बनाते थे। । थेक नामक वनस्पति भी वहाँ उगती थी। मच्छरों, जंगली जानवरों का उत्पात था, मछली, बतक आदि देखे जाते थे, नलसरोवर को सरकार ने अभयारण्य बना दिया था, तब से सैलानियों ही संख्या बढ़ने लगी थी, कान में बीड़ी लगाते मजदूर, जीप भरकर मजदूरी करने जाते मजदूर, सरकार ने दलितों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पचास प्रतिशत सबसिडी देकर उन्हें जीप दी थी, किन्तु सवर्ण दलितों को पॉचसौ रुपये देकर उनका अंगुठा लगवाकर जीप हथिया लेते थे और लोन का हप्ता स्वयं भरते

थे। गाँव में पानी की किल्लत, तीन मील दूर पानी लेने की लाचारी, सवर्णों की लोलुप दृष्टि आदि।

बी. केशरशिवम् की **'राजीनामु'** कहानी में शहर के एक कॉलेज परिवेश को लिया गया है, कॉलेज केम्पस, स्टाफ, विद्यार्थी एवं अभिभावकों का हड़ताल पर उतरना, दलित युवती से त्यागपत्र जबरन माँगना, बिदाई सभारंभ, दलित युवती का ब्राह्मण युवक से प्रेम को कॉलेज परिवार द्वारा न स्वीकारना, दलित जाति के अध्यापकों द्वारा षडयंत्र रचकर दलित अध्यापिका को मानसिक यातना देना, विद्यार्थियों की शक्ति का दुरुपयोग करना आदि। कहानी में शुद्ध गुजराती भाषा का प्रयोग है।

बी. केशरशिवम् की **'चामड़ी घसावानी वेदना'** काहनी में फुलपुरा गाँव एवं शहर दोनों का परिवेश लिया गया है। फुलपुरा गाँव में दलित स्त्रियों पर पुरुषों का अत्याचार खुलेआम होना, पानी, बीजली की सुविधा न होना, दलित समाज के बच्चों में शिक्षा का अभाव, सरपंच से शिक्षिका का शारीरिक संबंध, शिक्षिका का समाज सुधार एवं दलितोद्धार के लिए कॉलगर्ल बनना, गाँव की स्कूल में इर्ष्या खने वाले शिक्षकगण प्रामणिक दलित ऑफिसर को उन्हीं के साथियों द्वारा एन्टीकरप्शन के जाल में फँसाना, सस्पेन्ड करवाना लंबे समय तक चलने वाली कानूनी प्रकिया के कारण अर्धपागल अधिकारी का आत्महत्या करना, समाज में पति बिना की स्त्री के साथ छूट लेता पुरुषवर्ग, विवाह से पहले शारीरिक संबंध बनाने वाले युवा, जातिगत झगड़े से होने वाली हानि।

बी. केशरशिवम् की **'आँखो खुली गई'** कहानी में अहमदाबाद में चलने वाली मिलों, मिल मजदूरों के लिए बनाए गए कतारबंद घर, कांकरीया तालाब, नगीनावाड़ी का बगीचा, भेलपुरी, पानी पुड़ी, मिलों के बंद होने पर भूख का नग्न तांडव, मिलमजदूरों का अगरबत्ती, बीड़ी आदि के काम से गुजारा करना, खेतों में मजदूरी करना एवं आत्महत्या के प्रयास। बच्चों के मिट्टी के खिलौने, विवाह में महंगी साड़ी, बेटी की बिदाई में परिवार के साथ, रिश्तेदार, पड़ोसी, सखियों के आँखों में अश्रु आना, माँ का बेहोश होना, पारिवारिक झगड़े, हिंसा, विवाह के बाद बेटी का असली घर ससुराल होने की सामाजिक मान्यता एवं कठोरता, बेटी को त्यौहार पर साड़ी, बर्तन देने का रिवाज़ मिल की केन्टीन में दलितों के लिए पानी एवं चाय की अलग सुविधा, अस्पृश्यता, भेदभावपूर्ण व्यवहार, सत्याग्रह करते दलित, होटल प्रवेश तथा मंदिर प्रवेश के लिए दलितों का सत्याग्रह शिक्षित दलितों का समाज से संबंध टूटना, हीनता आना, ऐश–आराम के लिए समाज को दगा देते दलित, गरीबी, पारिवारिक संबंधों में आती दूरियाँ, आधुनिकता की दौड़ में स्वार्थी होती युवा पीढी आदि। कहानी में गुजराती भाषा का प्रयोग किया गया है।

बी. केशरशिवम् की **'मेना'** कहानी में नदी के किनारे बसे गाँव के परिवेश में सरकार द्वारा दलितों की माँग पर दी गई नदी के किनारे की एक–एक एकड जमीन, नदी में से रेती निकालकर, क्यारी बनाकर उसमें तरबूजा, खरबूजा लगाते लोग, ईंट का चूल्हा, टूटे हुए तवे पर बनती रोटी, नमी वाली भूमि खोजकर उसमें खाद डालना, वर्षा ऋतु में सब कुछ बह जाना, प्रत्येक वर्ष दलितों का यही कार्यकलाप, हमेशा हाथ में फावड़ा रखना, नदी के दोनों ओर बाँस के पेड़, खुले आकाश में सोते बच्चे, बांध का पानी अचानक छोड़ने से मरते लोग, गाँव में दलितों से साग–सब्जी कोई सवर्ण नहीं

खरीदता, इसलिए शहर में टोकरी सिर पर रखकर साग बेचते दलित, खाद, बीज आदि के लिए मूड़ी की समस्या, सगे–संबंधी सभी की आर्थिक स्थिति का दयनीय होना, बीज–खाद के व्यापारियों द्वारा कागज पर अंगूठा लगवा, कर उनका आर्थिक शोषण करना, अधिक ब्याज वसूलते व्यापारी भाव एवं वनज के बगैर ही दलितों से आलू वगैरह अपनी शर्तों पर लूटते सवर्ण व्यापारी, परिश्रम करने वाले के हाथ में आधी रोटी और गद्दी, तकिये पर ठंडक में बैठने वालों के हाथों में पकवान, नदी के किनारे शराब का धंधा करते लोग, शराबी लोगों का उत्पाद, स्कूल का अभाव आदि।

बी. केशरशिवम् की **'डाईग डेक्लेरेशन'** कहानी में गुजरात के आदिवासी क्षेत्र के एक गाँव के परिवेश को लिया गया है, जहाँ गरीब आदिवासियों को व्याज पर उधार रुपये देकर उसके पूरे परिवार से वर्षों तक पारिश्रमिक वसूला जाता था किन्तु उधार की रकम दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती जाती थी। पुरुषों को खेत में और स्त्रियों को अपने घर में सुबह से घर का पानी भरना, बर्तन माँजना, कपड़ा धोना, पशुओं को चारा देना, गोबर साफ करना, नीम के पत्ते जलाकर मच्छरों को चारा देना, गोबर साफ करना, घर का अनाज साफ करना आदि काम करवाकर बदले में एक समय का भोजन, पुराने कपडे एवं पच्चीस रुपये महीने के मिलते। इसके अतिरिक्त परंपरागत रुप से चलता आर्थिक, जातीय शोषण, शराबी पुरुषों के अत्याचार, आदिवासियों के विवाह के अवसर पर सगे–संबंधियों को नए कपड़े देने का रिवाज, सिर पर कलगी लगा साफा बाँधे दुल्हा, हाथ तलवार, पैरों में जूता भोज का आयोजन, हल्दी की रस्म में देवर–भाभी एक दूसरे से हल्दी खेलते, विवाह के अवसर पर कर्ज़ लेना पनियारी की प्रथा आदि। कहानी में आदिवासी बोली का प्रयोग किया गया है।

बी. केशरशिवम् की **'जोगणी'** कहानी में शहर एवं ग्रामीण परिवेश में दलितों के रहन–सहन एवं स्थिति को देखा जा सकता है। गाँव में दलितों को अस्पृश्यता, अपमान, गालियाँ सुननी पड़ती, जातिगत झगड़े में घर जलाए जाते, आरक्षण के मुद्दे पर उन्हें पीड़ित किया जाता, रोजी–रोटी की अधिक मुश्किलें आतीं। शहर में जाति–पाँति का भेदभाव कम था किन्तु रहने के लिए दलित मोहल्ले में ही झोंपड़ी मिल सकती थी। कोई हाथलारी खींचता, कोई प्लास्टिक के टुकड़े बीनता, कोई अगरबत्ती बनाता तो कोई मजदूरी करता, बीमारी, गरीबी, हर घर की मुसीबत थी। अकेली युवा स्त्री मायके एवं ससुराल में चिंता का विषय बनी रहती है। शहर में भी लाज बचाने के लिए घूँघट निकालना, हाथ लारी के नीचे झूले में बच्चे को लिटाना, स्त्री द्वारा हाथलारी खींचना, वर्षाऋतु में बीजली का चमकना, मिट्टी के तेल से दीया जलाना, दुकानदारों की कुदृष्टि, आरक्षण के दंगे भड़कना आदि।

बी. केशरशिवम् की **'मंकोड़ा'** कहानी एक गाँव के दलित मोहल्ले के परिवेश को चित्रित करती है। सरकार द्वारा दलितों को मकान बनाने के लिए लोन देकर मकान बनवाना, एक वर्ष के भीतर ही दीवारों में दरारे, सिमेन्ट की जगह मिट्टी का इस्तेमाल, घर में से बिच्छू निकलना, नजदीक पोखर होने से बरसात में मकान डूबने का भय, लोन का हप्ता भरना, अंधविश्वास पूर्ण समाज, चींटी के काटने पर घांसीमा नामक देवी की मानता रखना, प्रसाद चढ़ाना, महिलाओं का घर एवं खेत में मजदूरी करना, सवर्ण पुरुषों का दलित स्त्रियों पर जातीय शोषण एवं हत्या करना, दलित पुरुषों की भीरुता, विवाह में हल्दी खेलने का रिवाज, चोट पर हल्दी का लेप लगाना, पारिवारिक

हिंसा, सुख–दुख में मोहल्ले का एकजुट होना आदि। कहानी में गुजराती बोली का प्रयोग किया गया है।

बी. केशरशिवम् की **'भोरींग'** कहानी एक गाँव के परिवेश को चित्रित किया गया है, जहाँ बच्चे घर के ईंधन के लिए लकड़ी, गोबर को टोकरी में बीनकर लाते, घर आकर गोबर के उपले बनाते, रास्ते में से ऊँट, गधे, हाथी, भेड़, बकरी, घोड़े आदि की लीद ले आते। कपास के छिलके को पीसकर उसे गोबर में मिलाकर उपले बनाते, खेतों में अनाज की सूखी लकड़ियाँ बीन लाते। गाँव में स्त्री–पुरुषों का अनैतिक संबंध, दलित बच्चों का पशुओं की हड्डियाँ एकत्र कर बेचना, बाजरी की रोटी एवं दलिया खाना, चावल का अभाव, स्त्री–पुरुषों का मजदूरी करके भी पेट भर अनाज न मिलना, चावल के लिए बर्तन बेचना, भूखे पेट नींद न आना, अस्पृश्यता पूर्ण वातावरण, भूखे बच्चों का मक्का के कोमल छिलके खाना, मजदूरी के बदले रुपये न देकर जूठन देना, पुजारी एवं अन्य सवर्ण व्यक्तियों द्वारा दलितों को गालियॉ देकर ही बात करना आदि। आदिवासी परिवेश के अनुरुप आदिवासी बोली का प्रयोग किया गया है।

प्रवीण गढ़वी की **'गांठाण'** कहानी में एक ऐसे गाँव का परिवेश लिया गया है, जहाँ पशुओं के नाम तो रखे जाते थे, उनसे सभी प्रेम से व्यवहार करते, किन्तु दलितों को न तो अच्छा नाम रखने का अधिकार था, न ही उन्हें मनुष्य समझा जाता था। दलितों से बेगार करवाना बदले में जूठन, दूर से ही विशिष्ट एक ही पतरे के डब्बे में छाछ देना, पाँच सौ से अधिक निशान वाला डब्बा, बाजरे की रोटी मीर्च से खाना, पशओं की चमड़ी बेचना, दो–तीन दिन तक मरे पशुओं का मांस खाकर गुजारा करना, बचे हुए मांस को सूखाकर बाद में उसका भोजन के रुप में उपयोग करना, पटेलों का पालित पशु भेंस के प्रति प्रेम। दलितों के पास न खेत, न घर, था। आर्थिक अभावों के कारण दलित बच्चों का शिक्षा से वंचित रहना, ईधन एकत्र करने की समस्या, अस्पृश्यता, दलित स्त्री का सवर्ण द्वारा अपमान किया जाना, गाँव में अंधविश्वास के रुप में जीन पर विश्वास, मुसलमान के पीर की दरगाह पर जाना, सीकड़ से स्त्री को पीटना, तांत्रिकों का मुर्गी माँगना, नारियल, उड़द की दाल माँगना, भूत उतारने के नाम पर लोगों को लूटना। यहाँ लेखक ने संयमित निरुपण करके उस गाँव की नास्तवित सामाजिक स्थिति को हमारे समक्ष चित्रत किया है।

प्रीतम लखलाणी की **'फट रे भूंडा'** कहानी दलितों का मोहल्ला गाँव की सीमा पर होना, जन्माष्टमी पर गॉव के लोगों का नज़दीक के शहर में मेले में जाना, सिनेमा देखना, सवर्णों द्वारा दलित कुमारियों का शारीरिक शोषण, गॉव में नवरात्रि के अवसर पर शहरनाई, ढ़ोल बजना, सवर्णों के मोहल्ले में माताजी के मंडप खंभों को रंगों से सजाना, सितारों से सजाना, अस्पृश्यता, सर्पदंश वैध के अतिररिक्त ओझा पर विश्वास आदि।

दलपत चौहान की **'गंगामा'** कहानी में एक ऐसे गॉव के परिवेश को लिया गया है, जहाँ अस्पृश्यता, ऊँच–नीच का भेदभाव प्रसव के समय दलित स्त्री के दाई के कार्य में अत्यधिक कुशलता, दलितों के स्पर्श पर सोने गहने को पानी में डालकर उस पानी से घर का शुद्धीकरण करना, दलित दाई द्वारा स्पर्शी वस्तुओं जैसे चादर, गुदड़ी आदि को गरीबों को बाँट देना, सवर्णो द्वारा घर में शुभ प्रसंगों पर दलितों एवं गरीबों को दान, शुभ प्रसंग पर गुड़ बाँटना, साड़ी बाँटना, दलित स्त्रियों का सवर्णो द्वारा जातीय

शोषण, दलितों की निःस्वार्थ सेवा के बदले सवर्णों की क्रूर मानसिकता, का परिवेश देखा जा सकता है। उत्तर गुजरात की बोली का प्रयोग कहानी में किया गया है।

दलतप चौहान की **'मुंझारो'** कहानी में उत्तर गुजरात के एक गाँव में दलितों के एक मोहल्ले के परिवेश को लिया गया है। जहाँ अत्यंत गरीबी, दलितों द्वारा मृत पशुओं ढ़ोना, काटना, खाना, कुत्ते, गीध का मँडराना, मृत पशुओं को काटने पर रक्त का फूट पडना, सवर्णों द्वारा पाँच किलो बाजरी की लालच देकर बीमार पाड़े को दलित को सौंपना, ग्यारस का महत्त्व, चीलम पीना, सवर्णों की झूठी सिगरेट दलितों द्वारा पीना, तमाकु खाना, दलितों का परंपरागत शोषण, दलित की पाड़े की हत्या के दोष से मुक्त होने के लिए सोने का पाड़ा दान करने की चिंता, अत्यंत गरीबी, भीरुता, मृत पशु के मांस को पकाकर खाना आदि परिवेश का वर्णन उत्तर गुजरात की बोली में किया गया है।

विठ्ठलभाई श्रीमाली की **'रेड कार्पेट'** कहानी में गाँव को उत्सव के अवसर पर अशोक के पत्तों से सजाना, सफाई करना, उत्सव में वृद्धों के साथ, स्त्री–पुरुष एवं बच्चों का उल्लास, दलितों के मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध, सवर्णों के तिरस्कार के बदले दलितों की उदारता, दलित युवती का कलेक्टर बनने पर गाँव के सवर्णों द्वारा उसका स्वागत, सम्मान एवं रेड कार्पेट बीछाना, गाँव में तहसीलदार, डी.डी.ओ. जिला पंचायत के प्रमुख का आना, दलित कलेक्टर शैली द्वारा महादेव के मंदिर में प्रवेश एवं आरती करना, पुजारी द्वारा फूलों की माला पहनाना, बाजे बजना, आदि। संपूर्ण कहानी में सवर्णों के दलितों के प्रति परिस्थितिवश आए विचारों के बदलाव को दिखाया गया है, किन्तु नई पीढ़ी के सवर्ण युवक दलितों का उनकी बराबरी का स्थान देने को तैयार नहीं है। सवर्णों की स्वार्थपरता, दलितों के प्रति ईर्ष्या को देखा जा सकता है।

हसमुख वाघेला की **'झाड़'** कहानी में एक गाँव की दलितों की बस्ती में अंधकार में उजाला करने वाली पूनम की रात, दूर–दूर तक सुनाई देने वाली कुत्तों की आवाज़, कोलाहल, हाथ में लकड़ी और मशाले, होली का त्यौहार, ढ़ोल बजना, अबीर गुलाल का रंग, सिर पर पगड़ी, बड़ी–बड़ी मुँछें, रुआबदार चेहेरे वाले सवर्ण, होली माता को नारियल चढ़ाना, हरिजन स्त्रियों का घूँघट निकालना, घूँघट में से कभी सवर्णों के समक्ष तो कभी होली के सामने देखना, खुले शरीर पर गमछा, लंगोट पहने दोनों हाथ जोड़े दयनीय चेहेरे दलित पुरुष, मुखीया का गाँववालों पर दबदबा, जलती होली में से नारियल निकालने की परंपरा, होलीमाता की जय–जयकार, खील और बीलीपत्र चढ़ाना, होली की प्रदक्षिणा लेना, बांस और लकड़ी से बने घर का जलना, जलते घर के उजाले में दलित स्त्री से अमानवीय व्यवहार किया जाना, चंद्रमा का शरमाकर बादलों में छिपना, सवर्णों के अत्याचार से भयभीत दलितों के समाजिक परिवेश को प्रस्तुत किया है।

मणिलाल न. पटेल 'जगतमित्र' की **'हड़सेलो'** कहानी में गाँव में सरपंच के चुनाव का माहौल, सरपंच की सीट का आरिक्षित आना, दलितों के मोहल्ले में भजन की आवाज, आर्थिक दयनीयता, सुरेश्वर के मेले में जाते दलित, दलितों की गरीबी का लाभ लेते सवर्ण, मजदूरी करती स्त्रियाँ, सुरेश्वर की बड़ी केनाल, अवसरवादी सवर्ण, भोले–भाले गरीब दलितों को प्रस्तुत किया गया है।

दलपत चौहान की **'चांल्लो'** काहनी में उत्तर गुजरात के एक गाँव के परिवेश को लिया गया है। सिद्धपुर गाँव, मठ, महादेव का मंदिर, सरस्वती नदी का पाली, नीम के पेड़ पर बैठा कौआ, ग्रामीणों में मेले के प्रति उत्सुकता, झूले, नए कपडे, शृंगार के प्रति आकर्षण, दलितों पर नए कपड़े, पैरों में चप्पल, सिर पर पगड़ी पहने एवं तिलक लगाने पर सवर्णों का प्रतिबंध, दलितों का इस प्रतिबंध के बावजूद इन के प्रति आकर्षण, साहुकारों की स्त्रियों का मुक्तरुप से मेले में घूमना जबकि दलित स्त्रियों एवं पुरुषों का इस मेले में जाने की अनुमति न मिलना। सवर्णों के भय से दलित का चप्पल हाथ में कपड़े में छिपाना, दलित की पगड़ी को सवर्ण द्वारा लाठी से गिराना, अस्पृश्यता, पगड़ी का धूल–धुसरित होना, दलित को सरेआम अपमानित करना, सवर्ण के थूक से तिलक सिर घीसकर पुछवाना, लाठी से वार करना। आदि से उस गाँव में सवर्णों की कूरता एवं दलितों की दयनीय ग्रामीण परिवेश को उत्तर गुजरात की बोली में प्रस्तुत किया गया है।

जसुमती परमार की **'कालीनी राणी'** कहानी में दलितों की बस्ती के परिवेश को लिया गया है। आर्थिक स्थिति दयनीय है, बच्चों को स्कूल में एक समय का भोजन मिलता है, दलित बच्चों का पैबंध लगा स्कूल थैला, घर में अनाज की कमी, मिल में आँठ दस दिनों में काम मिलना, शराब की आदत, पत्ते खेलने का आदत, कुरुप स्त्री को काम न मिलना, फ्लेट–बंगलों में सुंदर नौकरानी रखने का माहौल, इस विषय में लेक कहते हैं–

> **"इसलिए मणि के भाग्य में कठिन परिश्रम का कार्य ही आता है। अथवा जो कोई न करे ऐसे काम उसे मिलते हैं। वैसे तो पुरे सीज़न में मीर्च मसाला कूटना यह उसका निश्चित कार्य। कभी तो बड़े–बड़े पत्थर उठाने का या प्रसूता के कपड़े या बच्चे की लंगोट धोने का कार्य मिलता। अन्य दिनों में तो मणि कंधे पर झोला लटकाए रहती। पूरा दिन कूडा टटोलती। शिशा मिल जाए, प्लास्टिक मिल जाय, कागज की रद्दी मिल जाय, कभी लोहे की कील–तार टुकड़े मिल जाए तो कभी टयूब–टायर के टुकडे जो हाथ में आए वह झोले में डालकर पस्तीवाले को बेचने ले जाती है। पाँच दस रुपये मिल जाते जिससे घर के गुजारे का सामान एकत्र करती हुई आती। सिर पर लकड़ी की गट्ठर और हाथ में तेल की बोतल......।"**[26]

इसके बाबजूद महादेव के मंदिर में मुफ्त के भोजन को ग्रहन करने में दलितों को शर्म आती है। लेखक ने दलितों के स्थिति एवं परिवेश का बड़ी ही यथार्थता से चित्रित किया है।

धरमाभाई श्रीमाली की **'नरक'** कहानी में सफाई–कर्मचारी समुदाय जीते जी नरक को झेलते हैं इस बात को कहानी कार ने उनके परिवेश से स्पष्ट किया है, जैसे मरे हुए, सड़े हुए, कीड़ों से भरे हुए कुत्ते खींचकर ले जाने के बदले में दाने और भोजन माँगकर लाने जैसा अनिच्छनीय कार्य करना। शहर में भी इतनी गंदगी थी, जो इस प्रकार कहानी में वर्णित है–

> **"अरे, मोहल्ले के आगे ही है। रोज़ सुबह जाती हूँ। किसी दिन साफ हो तो ठीक......नरक जैसा बैठा जाए ऐसा कहाँ होता है......परंतु फिर भी यहाँ**

बैठे और यहाँ उठे। दुर्गंध ही दुर्गंध......बाहर निकले तब तक थूँक और थूक..... ।''[27]

इसके अतिरिक्त शहर में सोसायटी में सफाई के बदले में दलितों का भोजन माँगने जाना, म्युनिसीपालीटी के दलित कर्मचारियों की स्थिति, झोंपड़ी के बाहर खुली गटर, शहर की गंदगी का ढेर, सार्वजनिक शौचालय का गंदगी से भरभरा रहना, टी.वी. में टूटे हुए टीन के डब्बे में मलमूत्र ढोते दलितों को दिखाना, गंदगी का चेहेरे पर टपकना आदि दृश्य जुगुप्सा उत्पन्न करते हैं।

शैलेष कुमार किस्टी की **'कुलदीपक'** कहानी में शहर के एक किनारे बसी दलितों की बस्ती के परिवेश को चित्रित किया गया है। झोपड–पट्टी जतली सिगड़ी का धुँआ, खंभे पर जलती मध्धीम लाइट, कचरे का जत्था, मिट्टी के तेज को ढीबरी, मिल बंद हो जाने पर बेरोजगारी का फैलाब, शराब का नशा, देहव्यापार करने पर विवश दलित स्त्रियाँ, होठों पर लाली और गाल पर सस्ता पावडर लगाकर ग्राहक को लुभाने की विवशता, घर के नाम पर प्लास्टिक की थैलियों से बनी झोंपड़ी की दीवारें आदि।

मोहन परमार की **'कडण'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में किसानों की गिरवी जमीन को सवर्ण हड़प लेते हैं, कंगाल बने किसान मजदूर बन जाते है। सवर्णों का अत्याचार, सवर्णों द्वारा दलितों से अधिक परिश्रम करवाकर मजदूरी कम देना, आर्थिक शोषण करना, जबरन मजदूरी करवाना, बंदूक की नोक पर अपनी इच्छानुसार कार्य करवाते सवर्ण, अस्पृश्यता, दलितों के मोहल्ले का अनिच्छनीय वातावरण, सरोवर का किनारा दलित महिला का बलात्कार, सवर्णों का दबदबा आदि।

अरविंद वेगडा की **'रखोपाना साप'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में परंपरागत कर्ज़ तले दब दलित परिवार, उनका परंपरागत शोषण करते सवर्ण, बेगार करवाना बेगार न करने पर उन्हें शारीरिक, मानसिक यातनाएँ देना, संध्याकाल में सूर्यास्त का दृश्य, चूल्हे में लकड़ी का जलना, गेहूँ कटाई का समय, घर की दीवारों का गिरना, ठंडी से बचने के लिए चटाई का परदा करना, ईंट के घर का सपना देखना, घड़े में पानी भरने कुँए पर जाती महिलाएँ, कर्ज़ के बदले में घर एवं खेत में मजदूरी करवाते सवर्ण का क्रूर रुप हमारे समक्ष आता है। अलाव जलना, दलित स्त्री का जातीयशोषण, सवर्णों का अत्याचार आदि।

मधुकान्त कल्पित की कहानी **'अधुरा पुल'** में गरीब बस्ती का परिवेश लिया गया है, झोपड़ी में से निकलता धुँआ, मक्का की रोटी बनाती और चूल्हा फूँकती स्त्री, वृद्ध का खटीया पर बैठकर गांजा पीना, सामाजिक रुढ़िवादिता, अधूरे पुलका निर्माण कार्य, मजदूरों, की भीड ताड़पत्र एवं प्लास्टिक के टुकड़ों से बनाई झोंपड़ी पर पैबंद लगे हुए, ग्रीष्म ऋतु की गर्मी आदि।

हरीशकुमार की **'मूंगी चीस'** कहानी में दलित मजदूर परिवार का बेटा एक ऐसे गाँव में शिक्षक बनकर जाता है जहॉ का परिवेश अस्पृश्यता का वातावरण था। संपूर्ण गाँव में कोई दलित न होना, दलितों का पानी न मिलता, स्कूल में विद्यार्थियों, शिक्षकों, संचालकों द्वारा अस्पृश्यता का व्यवहार, अपमान पूर्ण व्यवहार, दलित शिक्षक का विद्यार्थियों द्वारा बहिष्कार, पत्थर मारना अस्पृश्यता निवारण कानून का पालन न होना,

डेप्यूटी का भी सवर्ण होने का अभिमान, दलित परिवार को शारीरिक, मानसिक यातनाएँ देना, सवर्णों का आतंक आदि से उस गाँव में दलितों की दयनीय दशा उभरकर आती है।

राघवजी माधड़ की **'मेली मथरावटी'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में अत्यंत ही गरीब दलितों की स्थिति को चित्रित किया गया है। मैले बिस्तर, ज्वार की रोटी छाछ से गले के नीचे उतारना, निर्धनता, भुखमरी, अस्पृश्यता, दलित की तपेली में दूर से छांछ उडेलती पटलानी, फटे वस्त्र पहने पर विवश दलित स्त्रियाँ, दवा के लिए रुपये न होना, अधिक वर्षा, जुताई–बोआई के कार्य में मजदूरी के भाव में बढ़ोतरी धन के बदले में दलित स्त्रियों की देह लुटते सवर्ण काली मजदूरी के बाद भी रोटी न जुटा पाते दलित, गॉव में सवर्णों एवं पुरुष वर्ग का एक तरफा न्याय आदि।

योगेश जोशी की **'नवी'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में अस्पृश्यता, अंधविश्वास, छुआछूत की भावना गाँव की सँकरी गलियों में कंची, गिल्ली–डंडा खेलते बच्चे, पहली रोटी गाय को, दूसरी कुत्ते का उसी तरह सफाई करते दलित के लिए भी रोटी एवं हांडवा आदि का हिस्सा रखते सवर्ण परिवार पुराने कपड़े, चप्पल, एवं वार–त्यौहार पर जैसे सातम का ठंडा भोजन, श्राद्ध के दिनों का भोजन में भी दलितों का हिस्सा रखने की परंपरा। वा........ निकलने पर दलित स्त्री से झाड़फूंक करने का अंधविश्वास मोहल्ले में बल्ली कुत्ते मर जाने पर दलितों को बुलाया जाता है, गाली–गलौज करता जमादार, जूठी सिगरेट के लिए झगड़ते दलित, घर की लिपाई–पुताई के लिए दलितों को न बुलाते सवर्ण आदि।

अरविंद वेगडा की **'होड'** कहानी में गरीब दलित परिवार गाँव में अधिक परिश्रम करके उसके बदले में पारिश्रमिक कम पाता है। मजदूरी कम मिलना, बीमारी के समय इलाज न करवा पाना, बीमारी होने पर देवी मां को सवा रुपया का धागा बंधवाने का अंधविश्वास, दूर–दूर से शियार के रोने की आवाज, कुत्ते की मोहल्ले मे रोने की आवाज़ नीम के झरते पत्ते की आवाज, बिल्ली द्वारा आगे–पीछे किए कवेलु में से चंद्रमा का मध्धम प्रकाश घर में कोहरे का वातावरण फैलाता है। दीवारों पर से झरती परतें कहीं–कहीं टूटे हुए बांस में झरता पावडर, मिट्टी के तेल का दीया टी.बी. की बीमारी, लंबा कोर्स, दवा, ग्लूकोस, इंन्जेक्शन आदि।

बी. केशरशिवम् की **'खील'** कहानी में शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में दलितों की स्थिति को चित्रित किया गया है। शहर में हाथ में थैला लेकर कूड़े जत्थे फुटपाथ आदि से पोली थीन बेग, पुरानी स्लीपर, लोहा, लकडी इकट्ठा करके गुजारा करना, पैरों में चप्पल का अभाव दो रंगों की अलग–अलग चप्पल पहनना, बाजरी की रोटी, महुए के पेड़ की छाया आदि। ग्रामीण परिवेश में नंगो पाँव मजदूरी करते दलित, दलितों को चप्पल न पहनने का सवर्णों का हुकम, पहनने पर शारीरिक यातना देते सवर्ण गर्मी के दिनां पैरों के जलने पर भी चप्पल हाथ में रखने पर विवश दलित। इस विषय में कहानी में वर्णन इस प्रकार किया गया है–

> **"उसके बाद उका कभी गाँव की सीमा में चप्पल पहनकर नहीं गया था। उसने देखा था कि गाँव की सीमा में जाने से पहले मोहल्ले के लोग टोकरी में से चप्पल निकालकर पहन लेते थे। यदि गाँव का कोई सामने**

मिल जाए तो तुरंत पैरों में से चप्पल निकालकर उसे टोकरी में डाल देते थे। खेत में नंगे पाँव काम करना पड़ता था। चाहे कितने काँटे हों, दोपहर की तेज धूप हो तो भी चप्पल नहीं पहन सकते थे।"[28]

इसके अतिरिक्त दलित स्त्रियों का जातीय शोषण करते सवर्ण, गरीबी से त्रस्त दलित शहर एव गाँव दोनों के परिवेश में संघर्षरत देखे जा सकते हैं।

चन्द्राबेन श्रीमाली की **'रोकड़ी'** कहानी में गाँव में दलित विधवा जवान स्त्री के प्रति कुदृष्टि रखने वाले सवर्ण, दलितों की शोकसभी एवं मृत्यु पर सवर्णों की अनुपस्थिति, दलित द्वारा पानी के प्याऊ पर दलितों के अतिरिक्त सवर्णां द्वारा पानी न पीना, छूआछूत, चुनाव के समय वोट के लिए दलितों से हमदर्दी या अपनापन दिखाने की परंपरा, सवर्ण स्त्री द्वारा साड़ी दो पैरों के बीच दबाकर बैठना तांकि दलित से स्पर्श न हो जाए। चुनाव में दलितों का स्तमाल करना, चुनाव जीतकर सवर्णों का गाँव में दलाल को नियुक्त करके कमिशन प्रतिशत लेना, दलितों में विधवा स्त्री का पुर्नविवाह को समाज द्वारा स्वीकंारा जाना, रिश्वत लेकर तबादला करना, पुरुष जाति को वासनामय व्यवहार आदि।

मौलिक बोरीजा की **'भींस'** कहानी में ग्रामीण परिवेश में दलितों की आर्थिक विकट स्थिति, दलितों में भी दहेज कंम लोने पर परिवार एवं पति द्वारा शारिकि यातना दी जाना, दलित युवतियों की स्थिति धोबी के कुत्ते की तरह रहना, मायके वालों द्वारा विवाहित बेटी को घर में न रखना, आर्थिक कमी के कारण दलित स्त्री का शारीरिक शोषण, दोषी परिवार को समाज से निष्कासित करना, दो मन ज्वार का चबूतरे पर डालने का दंड समाज द्वारा दिया जाना, अस्पृश्यता, दलित स्त्री का दोहरा शोषण आदि।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप से देखा जाए तो हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में कई समस्याओं की साम्यता एवं वैषम्यता पाई जाती है। अस्पृश्यता की समस्या को केन्द्र में रखकर जो कहानियाँ मिलती हैं उनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'अम्मा'**, हरीश मंगलम् की **'दायण'**, रत्नकुमार सांभरिया की **'फुलवा'**, दलपत चौहान की **'गंगामां'**, सुशीला टाकभौरे की **'सिलिया'**, सूरजपाल चौहान की **'अत्तू और अम्मा'**, बी. केशरशिवम् की **'राजीनामा'**, आदि कहानियाँ हैं, जिनमें अस्पृश्यता की समस्या को ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में चित्रित किया गया है। चाहे ग्रामीण परिवेश की कहानी हो या शहरी परिवेश की कहानी अस्पृश्यता की समस्या दलितों का पीछा कहीं नहीं छोड़ती। शिक्षित हो या अशिक्षित, दलितों से छुआछूत का व्यवहार सवर्ण समाज द्वारा देखा जा सकता है। 21वीं सदी में दलितों को अस्पृश्यता का भोग नए ढंग से बनाया जा रहा है। कुछ कहानियाँ ऐसी भी मिलती हैं, जहाँ अस्पृश्यता का खंडन करते पात्रों का देखा गया है जैसे हिन्दी में हिन्दी में 'बदला', 'टिल्लू का पोता', 'सनातनी', 'फुलवा', गुजराती में 'रेड कार्पेट', 'मुखिया का भांजा'।

दलित स्त्री के जातीय शोषण की समस्या को हिन्दी और गुजराती की कहानियों में एक गंभीर समस्या के रुप में देखा जा सकता है। यह जातीय शोषण दलित स्त्री की सवर्णों पर आर्थिक निर्भरता के कारण, कामकाजी महिलाओं का जातीय

शोषण, सवर्णों की हवस वृत्ति के कारण, छल पूर्वक किया जाने वाला जातीय शोषण आदि दलित स्त्री की कमजोरी का लाभ उठाकर किया जाता रहा है। हिन्दी कहानियों में प्रेम कपाडिया की **'हरिजन'**, सी. बी. भारती की **'भूख'**, कुसुम मेघवाल की **'मंगली'**, विजयकांत की **'मरीधार'**, सुरेन्द्र नायक की **'खटिया की जाति'**, आदि कहानयाँ हैं, तो गुजराती कहानियों में बी. केशरशिवम् की **'चामड़ी घसावानी वेदना'**, विठ्ठलराय श्रीमाली की **'सपायडो'**, मधुकान्त कल्पित की **'अधूरा पुल'**, पुष्पा माधड़ की **'गोमती'**, धरमा भाई श्रीमाली की **'दाझवुं ते'**, आदि कहानियाँ में जातीय शोषण की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। सवर्णों द्वारा दलित स्त्रियों पर कई कारणों से किये जाने वाले जातीय शोषण के प्रति कुछ दलित स्त्रिया' विद्रोह करती भी दृष्टिगत होती हैं, जबकि कुछ इस शोषण समक्ष प्रतिकार नहीं कर पाती हैं। यह समस्या दलित नारी के संपूर्ण जीवन को तहस–नहस कर देती हैं एवं उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाती हैं। कुछ कहानियाँ ऐसी मिलती हैं जहाँ दलित नारी द्वारा इस समस्या से छुटकारा पाने का रास्ता स्वयं बनाते दिखाया गया हैं, इस समस्या से मुक्ति पाने का मार्ग कठिन अवश्य है किन्तु नामुमकिन नहीं कहा जा सकता है। गुजराती की कहानी में रत्नकुमार सांभरिया की **'बात'** कहानी में दलित नारी में जातीय शोषण के प्रति आई जागृति को देखा जा सकता है।

आर्थिक समस्याओं को दलितों से बहुत पुराना संबंध है। समाज का यह उपेक्षित वर्ग अपनी आर्थिक कमजोरी के कारण सवर्णों का शोषण एवं अत्याचार सहता आता है। हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में आर्थिक समस्याओं को उजागर करने वाली कई कहानियाँ मिलती हैं–जैसे जोसफ मेकवान की **'रोटलो नजराई गयो'**, रत्नकुमार सांभरिया का **'डंक'**, बी. केशरशिवम् की **'भोरींग'**, **'डाईंग डेक्लेरेशन'**, अमर स्नेह की **'सनातनी'**, मोहनदास नैमिशराय की **'अपना गाँव'**, **'कर्ज़'** आदि। जब तक दलित इस समस्या से बाहर नहीं आ सकेंगे, तब तक उनकी स्थिति में सुधार नहीं आ पाएगा। कुछ दलित आज शिक्षित बनकर उच्च पद पर अवश्य पहुँचे हैं, किंतु अधिकांश दलित आज भी आर्थिक समस्याओं के कारण मानसिक, शारीरिक अत्याचार झेलने के लिए विवश किए जा रहे हैं।

जो दलित उच्चशिक्षा प्राप्त करके समाज में मान–सम्मान के पात्र बने हैं, उन्होंने अपने ही सगे–संबंधियों एवं जाति के लोगों से किनारा कर लिया है, जिसे जातिगत हीन भावना की समस्या कहा जा सकता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'अंधड़'**, बी. केशरशिवम् की **'आँखो खुली गई'**, मोहनदास नैमिशराय की **'सिमटा हुआ आदमी'**, सूरजपाल चौहान की **'घाटे का सौदा'**, रजत रानी मीनू की **'हम कौन हैं ?'**, आदि कहानियाँ इस समस्या को उद्‌घाटित करती हैं। विशेष बात यह है कि जातिगत हीन भावना हिन्दी और गुजराती की नारी पात्रों में नहीं, किन्तु पुरुष पात्रों में ही अधिकांश दिखाई देती है।

परिवेश की दृष्टि से हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में शहरी एवं ग्रामीण एवं कई कहानियों में दोनों परिवेश का वर्णन किया गया है। दलित ग्रामीण परिवेश में लिखी गई कहानियाँ ही अपनी समस्या, वातावरण, स्थिति को यथार्थ रुप में चित्रित कर पाई हैं। तो शहरी परिवेश की कहानियों में शहर में दलितों की स्थिति एवं उनकी समस्या को देखा जा सकता है। दलितों का मोहल्ला, सुअर बाड़ा, मच्छर, मक्खी, कीचड़, गंदगी, दुर्गंध, धुँआ, झोंपडी, अंधेरा, ढ़ीबरी, भूखे बच्चे, अर्ध नग्न लोग, अंधविश्वास, रुढ़िवाद आदि को ही दलित कहानियों में प्रायः देखा जाता है, किन्तु कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं, जहाँ दलितों को आलीशान बँगले में सुसज्जित घरों में

शानो–शौकत के परिवेश में देखा जा सकता है। परिवेश की दृष्टि से दलितों की स्थिति के विषय में दृष्टि डालें, तो कहा जा सकता है कि गाँव की अपेक्षा शहर के परिवेश में दलित सुखी हैं, किन्तु शहरी परिवेश में उनकी समस्याएँ एवं स्थिति बहुत सुधरी हुई है यह नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार अंत में हिन्दी और गुजराती की दलित कहानियों में समस्याओं की साम्यता अधिक है वैषम्यता कम कही जा सकती है। अधिकतर दलित स्त्रियाँ गरीबी, भुखमरी, जातीय शोषण की समस्याओं को झेलती दिखाई गई हैं। विशेष बात यह है, कि इन्हीं समस्याओं में रहते हुए वे अपनी स्वतंत्रता, सम्मान, अधिकार को पाने के लिए सवर्णों के शोषण, अत्याचार एवं गुलामी से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। आर्थिक रुप से अपने परिवार के भरण–पोषण में सहायक बनने वाली दलित नारी अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होती है, क्योंकि वह नहीं चाहती कि जो अत्याचार उसने और उसके पूर्वजों ने झेला है, वह उसकी संतान या आने वाली भावि पीढ़ी का सहना पड़े। स्थिति को बदलने की उसकी जिद्द के समक्ष उसका परिवार एवं समाज अवश्य परिवर्तित होगा। इसका प्रारंभ हो चुका है और परिणाम अवश्य ही बेहतर होगा।

संदर्भ सूची

1. दलित साहित्य वार्षिकी 2003 पृ. सं. 93
2. हैरी कब आएगाा ? सं. सूरजपाल चौहान पाठकीय दृष्टिकोण पृ. स. 12
3. दलित नारी एक विमर्श–सकंलन स. डॉ. मंजू सुमन संपादन–ज्ञानेद्र रावत पृ. स. 34
4. समकालीन दलित साहित्य एक अध्ययन सं. डॉ. जीतूभाई मकवाणा पृ. स. 283–284
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक लोक तांत्रिका चेतना सं. हरपाल सिंह 'अरुष' पृ. स. 39–400
6. सूरजपाल चौहान की कहानियाँ में दलित जीवन सं. नारायण राठौड पृ. सं. 80
7. हैरी कब आएगा ? स. सूरजपाल चौहान पृ. स. 9 (भूमिका से)
8. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक लोकतंत्रिक चेतना स. हरपाल सिंह 'अरुष' पृ. स. 37
9. चर्चित दलित कहानियाँ स. डॉ. कुसुम वियोगी पृ. स. 29
10. नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ दलित कहानियाँ स. मुद्राराक्षस पृ. स. 111
11. नयी सदी की पहचान पृ. स. 133
12. सलाम स. ओमप्रकाश वाल्मीकि पृ. स. 114
13. सनातनी अमर स्नेह बयान जून 2008 पृ. स. 19
14. दलित महिला कथाकारों की चर्चित कहानियाँ पृ. स. 27
15. दलित महिला कथाकारो की चर्चित कहानयाँ स. डॉ. कुसुम वियोगी पृ. स. 37
16. जुड़ते दायित्व स. डॉ कुसुम मेघवाल पृ. स. 11
17. काल तथा अन्य कहानियाँ स. रत्नकुमार सांभरिया पृ. स. 13
18. दलित साहित्य वार्षिकी 2006 पृ. स. 258–259
19. हमारा जवाब स. मोहनदास नैमिशराय पृ. स. 79
20. हमारा जवाब स. मोहनदास नैमिशराय पृ. स. 130
21. दलित कहानी संचयन स. रमणिका गुप्ता पृ. स. 121
22. हंस अगस्त 2004 पृ. स. 177
23. साक्षी साबरनी स. विट्ठलराय श्रीमाली पृ. स. 51
24. साक्षी साबरनी स. विट्ठलराय श्रीमाली पृ. स. 66
25. साक्षी साबरनी स. विट्ठलराय श्रीमाली पृ. स. 129
26. वणबोटी वारताओं सं. दलपत चौहान पृ. सं. 64
27. 'नरक' धरमाभाई श्रीमाली पृ. स. 1
28. राती रायण की रताश स. बी. केशरशिवम् पृ. सं. 322